RNI No. UPHIN/2011/40224

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
नवम्बर – 2024
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

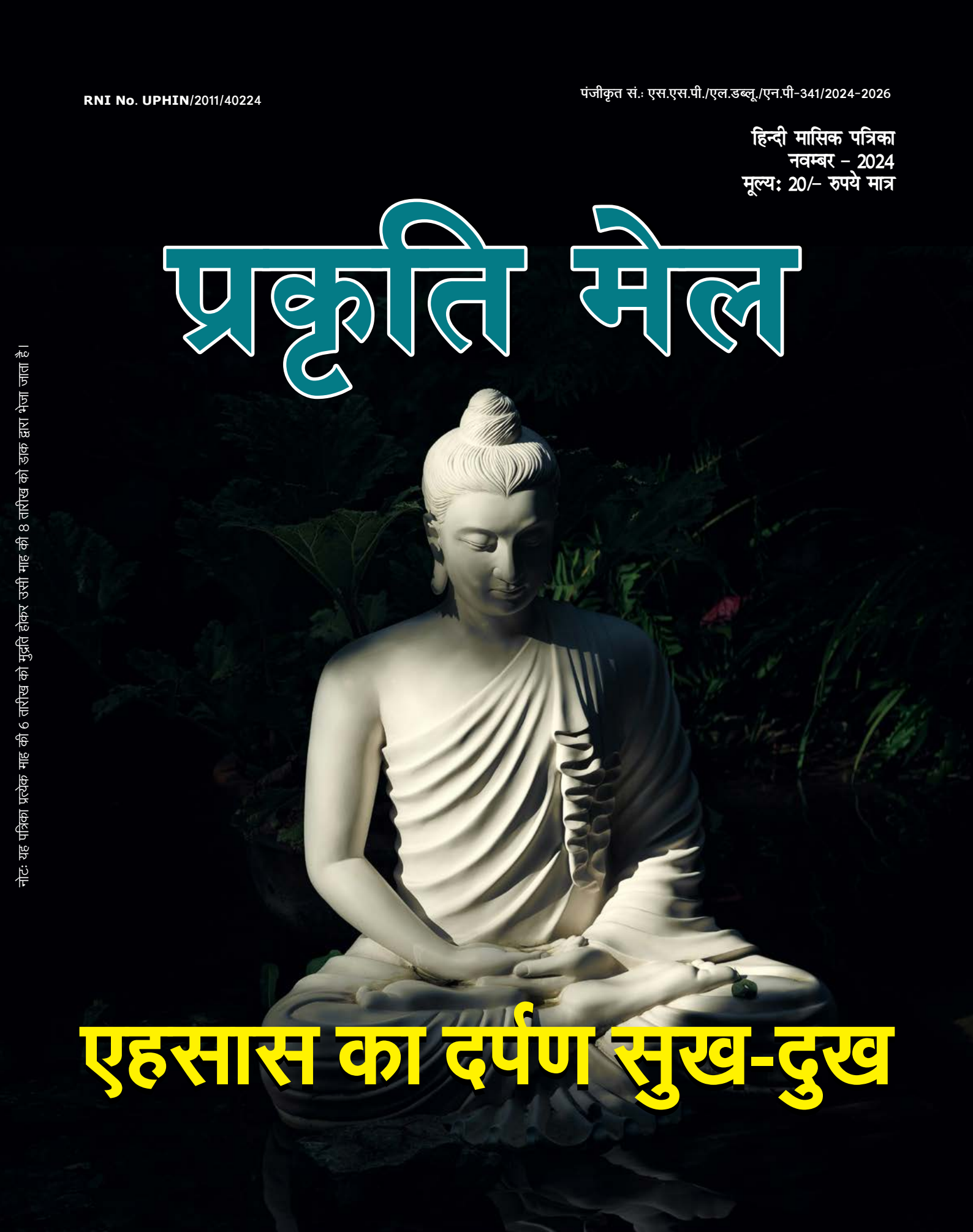

एहसास का दर्पण सुख-दुख

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

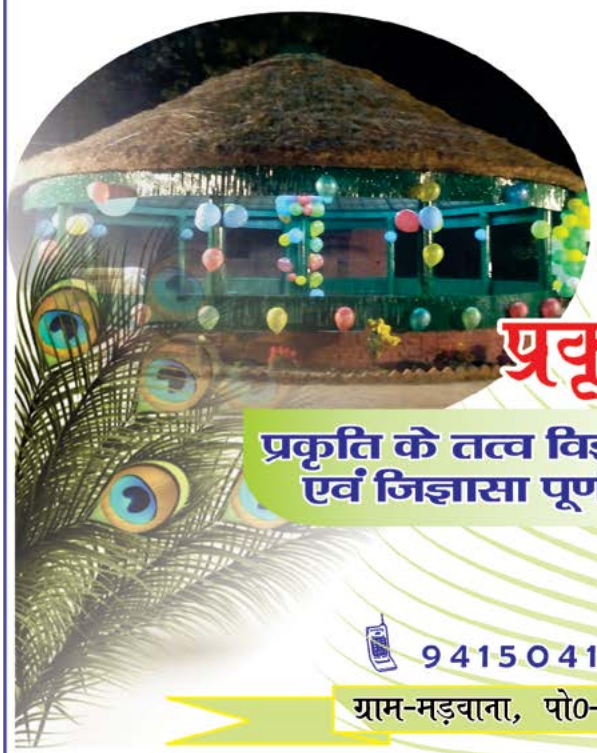

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मोरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः14 अंक : 5 | नवम्बर -2024

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575
पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,
फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 शून्य से शून्य तक एक यात्रा

P 10 प्रकृति पे लगाम लगाने की सोच सिर्फ मानव की

P 11 स्वन्त्र विज्ञान

P 17 ब्रह्मांड ही समय है

P 20 भारतीय उद्योग जगत के सूर्य रतन

P 24 इस प्रकाश पर्व पर लें नेत्रदान का संकल्प

P 26 बैंकें जमा वृद्धि दर बढ़ाने के लिये सकारात्मक कदम उठायें

P 36 वयस्कजन और मानसिक स्वास्थ्य

P 38 बिखरना और निखरना

P 46 नोबेल पुरस्कारों में ए.आई. का प्रभाव

P 32 प्रकृति विज्ञान

एहसास का दर्पण सुख दुख

" स्वभुगोल के स्वाभाविक हरकत पर नियंत्रण लगाने और बाहय ज्ञान के चश्मे से अपने आप को देखने से उत्पन्न होने वाली तरंग सुख दुःख की अनुभूति कराती है यदि नियंत्रण और नज़र बदल लें तो यही सुखद हो जायेगा। "

आराधना

आ- आराध्य , रा-रास्ता , ध-धन या (धरती), ना-नाम

अशोक मानव

अर्थात आराध्य को रास्ता दिखाकर धन या धरती को अपने नाम करना। प्राकृतिक अर्थों में आराधना सहजता और सरलता के साथ किसी विषय पदार्थ को अपने साथ जोड़ने का प्रयास करना। वैज्ञानिक अर्थों में आराधना अपने ज्ञान दृष्टि से गुण को सहयोगी गुण के साथ जोड़कर गुणोत्तर विधि का सदुपयोग करना। सामाजिक अर्थों में आराधना को अपने गुणों का विकास और आवश्यकता पूर्ति का साधन मानते हैं। व्यवहारिक अर्थों में आराधना अपने आवश्यकता पूर्ति के लिए ईश्वर तक पहुंचाने का मार्ग मानते हैं। ष् वास्तविक अर्थ में आराधना तो आत्मा की वह राग है जो धरती बनकर नाम करती है। ष् पर यह तभी संभव है जब व्यक्ति बिना किसी इच्छा के अपने आराध्य में अपने मन को लगाकर अपने आप को शांत करता हो ऐसा होने से वह शांत हुए आनंदमय स्वरूप में अपने आराध्य का प्रकाश प्राप्त करते हुए अपने गुणें का निरंतर विकास करता रहता है। यही अवस्था अपने आराध्य की ध्यान अवस्था में बिना व्यवधान किये अपने जीवन को सार्थक बनाता हुआ अपने आराध्य के गुणों का भी विकास करता है। यह श्रेणी मानव प्रकृति और ईश्वर को एक साथ जोड़कर तीनों के गुणात्मक विकास की सर्वोत्तम अवस्था है। आराध्या ईष्ट को कहते हैं जिसे व्यक्ति अपना ईश्वर मानकर उसकी पूजा करता है।

वर्तमान समय में पूजा की अनेकों पद्धतियां बना ली गई हैं जैसे व्रत रखना, आरती करना, भंडारा करना, मंदिर बनवाना, उसकी पसंद के अनुसार चढ़ावा, आदि-आदि। इसी प्रकार अनेकों धर्मों की अलग पद्धतियां हैं जो अपनी आवश्यकता को देखते हुए बना ली गई हैं। जिसमें ईश्वर की सुविधा का कोई ध्यान नहीं रखा गया है। जबकि पूजा का वास्तविक अर्थ है पूजना, अर्थात किसी पौधे को ऐसी धरती पर लगाना जहां से वह अधिक से अधिक विकास कर सुगंध और फल को प्रदान करे। ईश्वर को पूजना अर्थात अपनी जमीन पर ईश्वर को स्थापित करना। जहां आप अपने आराध्य को पूजने जा रहे हो वह धरती आपकी है, वह अशांत है, (उसर है) भ्रमित है, रोग फैलने वाले कीटाणु पहले से मौजूद हैं, आदि-आदि अवगुणों से परिभाषित धरती इसे आपसे बेहतर दूसरा कौन जान पाएगा, ऐसी धरती पौधा उगाने से पहले रोगित कर मार देती है। जिस जमीन पर तुम उसे रोपित करना चाहते हो, तो पहले उस पौधे को उगने योग्य धरती बनाओ। धरती योग्य होने के बाद उसका बीज स्वतः उसमें रोपित हो जाता है। वरना यह स्वतंत्र सत्ता है उसे बीज (पौध) को बलपूर्वक कोई अपनी धरती पर नहीं लगा सकता है, ना ही कोई उसे बंधक बनाकर अपने पास रोक सकता है।

आराधना शायद कुछ ही लोग अपने मन की शांति और ईश्वर की इच्छायें हर तरफ फैले इसके लिए करते हैं। ऐसा करना ही वास्तविक आराधना है। पर व्यावहारिक रूप में हर व्यक्ति किसी इच्छा की प्राप्ति के लिए आराधना करता है। जैसे नियमित मंदिर जाना, गिनती का व्रत रखना, अथवा अन्य आराधना पूर्ण कार्य करना। अपनी चाहत को तार्किक रूप से अपने आराध्य के पास न्यायिक सिद्ध कर उसे खुद ही रास्ता दिखाता है और दावा पेश करता है कि तूने दूसरों को न्याय दिलाया है, मुझे भी दिला, मेरी

" आरम्भ के रासायनिक धन का नाभकीय मिलान बिंदु जो स्वपूर्णता का गुण बना लेने तक स्व की गोलार्धी परिक्रमा करता रहता है। "

धरती पर मेरी इच्छा का नाम नामांकित कर। यहां पर खुद सोचने का विषय है जो खुद रास्ता ना देख पा रहा हो जो खुद मेरे तर्कों से न्याय की परिभाषा जानता हो वह कितना बड़ा आराध्या हो सकता है? यहां खुद और सोचें जो आराध्या होगा उसका भी कोई आराध्या होगा, शायद वह भी अपने आराध्य में सदैव अपने आप को शांत रखना चाहता होगा। ऐसी अवस्था में गुणीय धरती पर स्वतः उसका नूर बरसता है। अन्य आराधना के साथ सिर्फ उसकी शांति भंग करने का असफल प्रयास करते हैं, ईश्वर कभी अन्याय नहीं करता। अन्याय की परिभाषा तो व्यक्ति की स्वार्थ भरी इच्छाएं करती हैं। ऐसी आराधना ईश्वर तक नहीं पहुंचती है बीच के थोड़ा पहुंचे हुए लोग अपने आप को उससे जोड़कर कुछ हितकर अनुभूति करा देते हैं। जब व्यक्ति की इच्छाएं नहीं पूरी होती है तो ईश्वर को दोष देकर कोसता है। जिससे उसके अंदर नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है। यही नकारात्मकता अपनी अधिकता को बढ़ाते हुए राक्षस को पैदा करती है। जो असुर बनकर ईश्वर और प्रकृति के सुर में व्यवधान उत्पन्न करते हैं। ईश्वर सृष्टि को सुर में बनाना चाहते हैं और असुर इसे बिगाड़ना चाहते हैं। यही धर्म-अधर्म का युद्ध है। आप किसकी ओर से लड़ रहे हैं स्वयं निर्धारित करें? कैसे किसी विषय की प्राप्ति गुणात्मक धरती बनाने से होती है, आराधना से नहीं। चाहत इच्छा नहीं बल्कि गुण को चाहत बना लो फिर अपना रास्ता स्वतः दिखाई देगा।

पाठकनामा

आदरणीय

सम्पादक महोदय,

हिन्दी मासिक पत्रिका 'प्रकृति मेल' सिर्फ दिखने ही नहीं बल्कि पढ़ने में भी सबसे अलग है। यह अपने आप में बाकि अन्य पत्र-पत्रिकाओं से अलग आकर्षण रखती है। इसमें उल्लेखि दो टूक और कार्टून पृष्ठ जैसे समाज का आईना, इसमें उल्लेखित लेख हमें हर परिस्थिति और मौसम में सावधानी व बचाव का रास्ता भी दिखाते हैं।

अमनदीप

इन्दिरानगर, लखनऊ।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

''जस्टिन त्रूदो को अपना पैर मुंह में रखने की बीमारी है।''

दीपक वोहरा

''सामाजिक मूल्यों की, मानवता की, पर्यावरण संरक्षण की किसी को कोई चिंता नहीं है और यह हमारे समय का सबसे बड़ा संकट है।''

विश्वनाथ त्रिपाठी

''हमे गंभीर बीमारियों से बचने के लिए रसायनमुक्त खेती की ओर बढ़ना ही होगा।''

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

''यहां किसी की आवाज दबाकर अपना हित साधना ठीक नहीं है।''

दिव्या खोसला

''मुझे कुछ भी थाली में परोस कर नहीं मिला था, मैंने बहुत संघर्ष किया।''

मिथुन चक्रवर्ती

''रतन टाटा भारत के अनोखे वीआईपी थे, जो अपनी फाइल लिए अकेले चलते थे।''

नंदिता निलय

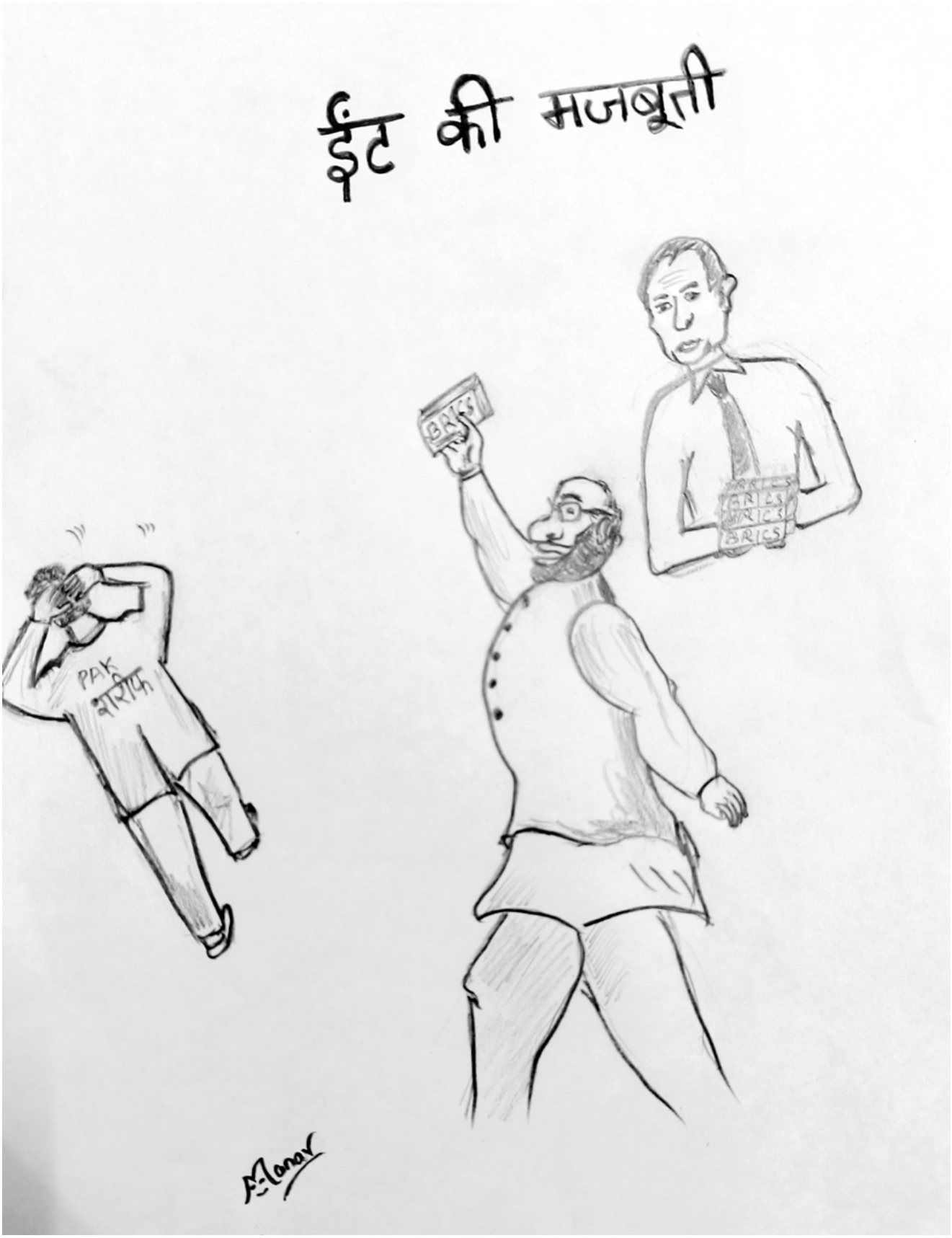
ईंट की मजबूती
BRICS
PAK
शरीफ
BRICS

शून्य से शून्य तक एक यात्रा

शून्य से शून्य की यात्रा का मात्र इतना अर्थ है कि जो थे वही हैं। अर्थात सर प्राकृतिक घटनाक्रम मात्रा न होने से शुरू होकर ना हो जाने तक की प्रक्रिया मात्र है। सारी अवस्थाएं सारी स्थितियां शून्य से विकसित होकर शून्य ही हो जाती हैं। इस घटनाक्रम में समय कितना लग रहा यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि एक समय के बाद शून्य ही हो जाना है।

कामेश

शून्यता ब्रह्मांड की मूल अवस्था है जब प्रकृति किसी पदार्थ या अवस्था का निर्माण या सृजन करती है तो पहली अवस्था शून्य की ही होती है और फिर शुरू होती है शून्य की यात्रा। सामान्यतः हम सभी यही मानते हैं की शून्य का अर्थ है कुछ भी नहीं, अर्थात शून्य में सब कुछ रिक्त है वह अवस्था जो पूर्ण रिक्त है या फिर जो अवस्था हमारी दृष्टि से दृष्टिगत होने से परे है हम उसे शून्य मान लेते हैं। उदाहरण के रूप में हम आकाश तत्व को शून्य की संज्ञा देते हैं और यह मान लेते हैं कि जहां कुछ भी नहीं वह शून्यता है किंतु यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो समूची प्रकृति में रिक्तता कहीं होती ही नहीं। कोई भी स्थान ऐसा नहीं जो कि रिक्त हो। शून्य एक विस्तृत अवस्था का नाम है और सबसे बड़ी बात तो यह है की शून्यता में संभावनाएं विद्यमान होती हैं, जहां शून्यता है वहां कुछ भी सृजित होने की पूर्ण संभावना होती है। अत्यंत विस्तृत से लेकर सूक्ष्मतर तक की अवस्था शून्य में समाहित होती है। वैसे तो यह भी कहा जाता है कि हर खाली स्थान पर हवा होती है परंतु देखा जाए तो हवा समूचे ब्रह्मांड में विद्यमान नहीं होती जबकि शून्यता तो समूचे ब्रह्मांड की व्यापक अवस्था है या यह भी कह सकते हैं की शून्यता की सीमा ही नहीं असीम अवस्था है। समूचे ब्रह्मांड को संभवत इसीलिए शून्य आकाश की संज्ञा भी दी गई है। यदि देखा जाए तो वास्तव में ठोस अवस्था की सीमा होती है और जहां ठोस अवस्था नहीं वह सब कुछ आकाश तत्व का रूप है। हम सामान्य रूप से जिसे आकाश बोलते और समझते हैं वह मात्र हमारी आंख से दिखने और हमारे मस्तिष्क की समझ का एक छोटा सा अंश मात्र है। जबकि आकाश तत्व हमारी सोच और दृष्टि से अत्यंत पैर की अवस्था है और शून्यता आकाश तत्व को भी अपने भीतर समाहित की हुई अवस्था का नाम है क्योंकि यदि आकाश तत्व हमें महसूस हो रहा है तो निश्चित ही यह किसी रिक्तता को पूर्ण करने का कार्य कर रहा है आखिर वह रिक्तता क्या है? संभवतः वही शून्य अवस्था है।

यह प्रकृति के विभिन्न अंग जो हमारी दृष्टि से सामान्य रूप में देखें और अनुभव किया जा सकते हैं यह सभी किसी न किसी शून्य अवस्था से प्रारंभ होकर अपनी ठोस अवस्था की यात्रा प्रारंभ करते हैं और धीरे-धीरे अपने गुण और रासायनिक ईंधन अनुरूप अपनी अवस्था को पूर्ण करके रिक्त हो जाते हैं, अर्थात शून्य से शून्य की यात्रा का नाम ही प्रकृति है क्योंकि प्रकृति की हर अवस्था का निर्माण शून्यता से प्रारंभ होकर शून्यता पर ही समाप्त होती है। जब कुछ नहीं होता तब शुरुआत होती है और जब कुछ नहीं बचता तब अंत होता है अर्थात आदि और अंत के बीच की अवस्था ही "शून्य से शून्य की यात्रा" है। यद्यपि संसार में अनेक मनुष्यों ने शून्य की परिभाषा समय-समय पर अपने अनुसार देते रहे हैं या फिर यह भी कह सकते हैं कि शून्य की

परिभाषा से दुनिया भर के दर्शन शास्त्र भरे पड़े हैं और सभी ने अपने अनुसार शून्य की व्याख्या किया है परंतु मेरा मानना है जिस अवस्था तक हमारी कल्पना या हमारी सोच पहुंच चुकी तो वह अवस्था रिक्त नहीं रह गई इसलिए वह शून्य की परिभाषा के अंतर्गत नहीं आ सकती। खाने का तात्पर्य की जहां कुछ भी ना हो यहां तक की हमारी कल्पना से भी परे की अवस्था ही शून्य हो सकती है। और शून्यता से ही यात्रा प्रारंभ होती है इसलिए समूची सृष्टि मात्रा शून्य ही है यहां कुछ भी ऐसा नहीं जो पूर्ण हो या स्थाई हो। यह भी हो सकता है कुछ समय के लिए अवस्थाएं अपना आकर तो बना लेती हैं परंतु यह जाकर स्थाई नहीं हो सकता कुछ समय खाने का तात्पर्य यह नहीं की कुछ वर्षों तक की बात हो, बल्कि ब्रह्मांडीय समय के अनुसार देखा जाए तो मानवी गणना और समय निर्धारण तो क्षण मात्र के बराबर होगी। क्योंकि ब्रह्मांड की कल्पना ही नहीं की जा सकती फिर उसमें पृथ्वी तो एक कण के बराबर की भी अवस्था नहीं रह जाती। और पृथ्वी पर असंख्य जीवों में एक जीव मनुष्य भी है भला मनुष्य उस अनंत ब्रह्मांड की क्या व्याख्या कर सकेगा क्या परिभाषा दे सकेगा। फिर समय निर्धारित करना तो इसकी किसी कल्पना में भी समाहित नहीं हो सकता।

शून्य से शून्य की यात्रा का मात्र इतना अर्थ है कि जो थे वही हैं। अर्थात सर प्राकृतिक घटनाक्रम मात्रा न होने से शुरू होकर ना हो जाने तक की प्रक्रिया मात्र है। सारी अवस्थाएं सारी स्थितियां शून्य से विकसित होकर शून्य ही हो जाती हैं। इस घटनाक्रम में समय कितना लग रहा यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि एक समय के बाद शून्य ही हो जाना है। यह जो कुछ भी हम प्रकृति में पदार्थ रूप में देख रहे हैं इन सब का निर्माण इस शून्य अवस्था से ही हुआ है अर्थात हमें जो कुछ भी दिख रहा है शून्य का ही परिणाम है और पदार्थ शून्य से निर्मित होने के कारण शून्य ही होते हैं अतः स्थूल रूप शून्य की यात्रा अनवरत विराट की

तरफ ही अग्रसर रहती है क्योंकि उसका स्वभाव ही है खुद में विलीन हो जाना अतः वह पदार्थ रूप में तब तक गतिमान रहता है जब तक की अपने आप में पूर्णतया विलीन नहीं हो जाता। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो कि अपने वैचारिक चंचलता और जिज्ञासा के कारण उसे विराट को जानने का प्रयास कर रहा है और सदियों से ऐसे अनेक प्रश्नों की खोज में लगा हुआ है जिससे कि उसे विराट शक्ति को पहचान सके परंतु वास्तव में समझने की बात तो यह है कि विराट अस्तित्व को जानने के लिए विराट से मिलने की आवश्यकता है यदि इस अंश और उस विराट के मध्य तनिक भी अवस्था की स्थिति बनी रही तो वह उस शून्यता को कभी नहीं जान सकता। अर्थात जिस क्षण यह स उसे विराट स्तित्व में विलीन होता है तो फिर वापस लौट कर जगत को बताने नहीं आ सकता इसलिए अभी तक इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिल पाया। और यह एक अनसुलझा सवाल ही बना है कि शून्य क्या है? विराट अस्तित्व कौन है? इस बात को उदाहरण के तौर पर इस तरह भी समझ सकते हैं कि जिस प्रकार पानी की यात्रा समुद्र है तो पानी हर क्षण सागर की तरफ बढ़ने का प्रयास करता है। अधिक से अधिक और कम से कम पानी भी अनवरत गतिमान है सागर में विलय करने के लिए और इसकी यात्रा अनवरत चलती रहती है इसी प्रकार इस जीव का भी स्तित्व उसे विराट स्तित्व से होने के कारण यह अनवरत उसी की तरफ अग्रसर रहता है। कहा जाता है मन बहुत चंचल होता है यह कभी स्थिर नहीं होता और जितना भी इसे मिलता है वह आगे और पाने की लालसा और प्रयास करता है। वास्तव में करेगा ही क्योंकि हम मां को वह देते हैं जो शरीर की आवश्यकता है वह नहीं दे पाते जो मन की आवश्यकता है। मन तो वास्तव में शून्य ही है परंतु हमने भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कामनाओं विचारों से इसे भरते जा रहे और यही कारण है की मन संतुष्ट नहीं हो पता। मन को चाहिए वह विराट शून्यता जिसका वह अंश है और हम उसे वह देते हैं जिसका स्थूल से स्थूल तक का संपर्क है। हमारे समाज में अनेक अनेक महापुरुष समय-समय पर आते रहे उन सभी ने बस यही कहा कि शून्य हो जाओ खुद अपने भीतर उतर जाओ तुम खुद को पहचानो यह ऐसा इसलिए बोलते थे क्योंकि उन्होंने अनुभव किया कि वास्तव में मन को क्या चाहिए मन की अंतर यात्रा उसे उसे विराट अस्तित्व से मिलाने का कार्य करती है। इस विराट सुनीता की अवस्था के पदार्थ और फिर पदार्थ से शून्यता की अवस्था तक जो जीव पदार्थ विचरण करता है वह जीवन है, और जीवन की इस घटना को जो घटित करता है वही "शून्य से शून्य की यात्रा" है।

प्रकृति पे लगाम लगाने की सोच सिर्फ मानव की

गौरव पंत

प्रकृति पे लगाम लगाने की सोच सिर्फ हमेशा से मानव की रही। प्रकृति को अपने अनुसार चलाने की सोच रखने वाला ये अज्ञानी जीव हमेशा से प्रकृति को एक प्रयोगशाला समझता आया। मानव जाति ने कभी प्रकृति को जाना ही नहीं उसे हमेशा प्रकृति की हर अवस्था में दोष नजर आया। अपने अनुसार हर परिभाषा का निर्माण कर एक मार्गीय प्रकृति प्रणाली को द्वी मार्गीय करता चला गया। सही-गलत, न्याय-अन्याय तरह-तरह की परिभाषाएं बनाता गया। प्रकृति को कमजोर समझ खुद को शक्तिशाली बताने की इसकी हमेशा से चाह रही। इसी में ईश्वर, गुरु आदि प्रणाली का निर्माण इसकी ही स्वभूमि से होता गया। प्रकृति कभी किसी के संचालन के लिए किसी को शक्तिशाली या कमजोर नहीं बनाती। प्रकृति सदैव रसायनिकता पर अग्रसर है। जिसका जैसा रसायन होगा उसे प्रकृति उसकी चरम अवस्था तक ले जाकर सिद्धांत करती है। प्रकृति पे लगाम की सोच मानव का मात्र भ्रम साबित हुआ। प्रकृति मानव के स्वभाव को उभार कर उस अवस्था पर ले जा चुकी है जहां से इसकी अनंतीय अंत की यात्रा आरम्भ हो चुकी है। प्रकृति की सूक्ष्म अवस्था को जानना व बदलना असंभव है।

प्रकृति का विज्ञान हर अवस्था का निर्माण व अंत रासायनिक मिलान से करती है। किसी भी उत्पन्न अवस्था का बीज निर्माण होने के बाद जब तक वह तृप्त नहीं हो जाती उसे मिटाना संभव ही नहीं वह एक रासायनिक मिलान के अनुरूप पूरा होता है। मानव सिर्फ भूगोल को जान कर सूक्ष्म विज्ञान को अपनी जीत समझता आया । उसी भूगोल में प्रकृति इसे सूक्ष्मता से परिपक्व कर सिद्धांत करती गयी। प्रकृति को सिर्फ एहसास किया जा सकता है उसमे किसी दूसरे दर्पण का कोई स्थान नहीं। जिसकी जैसी रासायनिक ग्रंथि होगी उसे प्रकृति का एहसास वैसा ही होगा। उसे ना कोई बदल सकता ना अपने अनुसार क्रियान्वित कर सकता। दोहरी नीति सिर्फ मानव जाति की रही। 'प्रकृति सजीवता का निर्माण सिर्फ प्रदूषण मिटाने के लिए करती है'।

ना लगाम कोई प्रकृति पर लगा पाया
ना लगाम कोई प्रकृति पर लगा पाएगा।
हर भूगोल रसायन अनुरूप सिद्धांत होता जाएगा।
सोच हमेशा से रही मानव की बदलने की,
हर अवस्था को, उसी से सिद्धांत मानव भूगोल होता जायेगा।
जो जैसा बीज होगा उसी अनुरूप पकाया जाएगा
प्रदूषण मिटाने के लिए सजीवता का निर्माण करती प्रकृति, कोई हस्तक्षेपअब ना बचा पाएगा।
एक मार्गीयता पे अग्रसर प्रकृति
ठोस अवस्था में ब्रह्माण्ड बदल जाएगा।
अशोक गंध ब्रह्माण्ड में सिर्फ विद्यमान है, रहेगी। वही अनंतीय हो जाएगा।

स्वन्त्र विज्ञान

अभिषेक पंत

स्वन्त्र विज्ञान के दो भाग होते हैं, पहला रस व्यास, दूसरा रस व्यूह, रस व्यास के दो गुण होते हैं, पहला वृत्त मूल, दूसरा रासायनिक नाड़ी, रस व्यूह के तीन कारक होते हैं, पहला स्वाभाविक विचार, दूसरा स्वतंत्र भाव, तीसरा अंग अंक। अर्थात नाड़ी घड़ी धड़कन स्थूलता की सजीव निर्जीव मिलान वृत्ति के मूल बीज भूगोलीय रस स्नान को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं।

कवच सांख्यिकी की निदान परीक्षा से परे उत्तम जीवनी की पराकाष्ठा के संवर्तनीय योजन में, तंत्रशाली अभीधुणी वृत्ति का विकास ही जीव-निर्जीव तरंगीय यौवन को सक्रिय करता है, जिसमें आवृत्ति जगत की माध्यम इकाई ही कोशिका स्वर्णित घटनाक्रम को तत्वशील करती है। आधारित प्रमेय की निर्गन्धीय अशेष अवशोषित निर्मम घटना वृत्ति भी बनाई गई, इत्यादि निरंकारी चेतन रस माधवी बल सुरक्षा इंद्रीय भी बनाई गई। अपितु रस व्यूह जीवनी की जीवाश्म बुद्धि में चयन योजन कृति की ललाट लालिमा भी मंत्र भंगुर चंद्रमा को विश्व अंकित नहीं कर पाई। जीवन योजन का विकास प्रमेय ही भाव बहुमुखी आवंटन शैली का कारक शुनयांकन होता है। जिसमें भाव विकास प्रमेय ही द्वयी घटना चंद्रशीतलता का तत्व पदार्थ ध्ययेयक होता है। मूल कुंजी पूंजी ही जन्म स्थिरता की वात कालीन स्वीकृति बनाई गई थी। आसन शासन वृत्ती भी जन्म मृत्यु अनुकूलन की वस्त्र प्रौद्योगिकी बनाई गई थी। अपितु परमार्थ की ज्येष्ठता में जीव सारथी विद्युता से मूल यथार्थ सेवी धाराओं का निष्कासन ही भावभार यांत्रिकी का मात्राव्यय बन गया, जिसमें भूगर्भी आवंटन का चंद्रमा विषय ही राज्य सेवी मंत्रणाओं का सामाजिक श्रृंगार बन गया। अर्थात मानव के केंद्र में ध्यायी इकाई का निर्वाचन तो जगत ऊर्जा की चुंबकीय रागनी थी, जिसमें मध्य वेदी की निर्गंधीयता ही शून्य शीतलता की स्वभावी मात्रा थी। अपितु फिर भी परामर्श के कुंडल से परे, तथ्य लोचनी अधीर नैनों की कृतज्ञता ने भी प्रयास किया कि मात्रा कुमात्रा योजन अधिकार निलंबित किया जाए, फिर भी प्रकृति की साधन चेतन ने मात्रा पात्रता को रसलीन मेहतता का मानक भाव बना दिया। अर्थात नित्य तत्व व्यास व्यूह व्यय ही वामपंथी जर जड़ जातक जाती प्रधान गुण था , जिसे अलंकृत मन सेवी प्रधारकों का मूल्य निश्चित तो किया अपितु अपनी जनगणना में इसी धीयाँका को प्रज्वलित करना भूल गया कि मन तन संदर्भित यात्रा कक्षा तो मात्र इच्छा इकाई की दर्शन वेदी होती है, जिसमें पात्रता शून्य वृत्ति ही भाव शून्य प्रत्यक्षता होती है। मानव केंद्रित जागृति भी इसी संबंधवाद की शून्यता का इच्छा रोपण है जिसमें स्वाभाविक पात्रता का शून्यांकन ही प्रत्यक्ष वाहन मात्रा इकाई दर्शन है। अर्थात मूलतः ही पात्रता का ज्ञानाध्वी व्यय यंत्र है, जिसमें इच्छा का अस्तित्व ही ईंधन की राधिका का मूल पात्र मंत्र है, जहां से धूरि विशेष वृत्ति की मूल सहर्षता

आध्यात्मिक मानुषिकरण में जीवन गंध की उर्वरा रेखा पारदर्शी सतह पर सक्रिय होती गई, इसीलिए मूल इच्छा राधिका विलयी रेखा स्वयं ही स्वन्त्र विज्ञान से मूल दृश्य श्रुति तरंग में निर्मित होती रही। अर्थात मात्रा ज्ञापित अवलोकन तो सर्वस्व विद्युता का चेतन अनिवार्य भूगर्भ होता है अपितु रस मात्रा अवघटित पात्र सर्वस्व चुंबकीय भूमानक स्वभावी ईधन का आयु दर्शन होता है, जिसमें चिरंजीवी अवस्था का मूल स्थायित्व तो गुण विशेष की ज्ञानार्थी धारा होती है, जो अंतिम क्षण की चेतना में चिरंजीवी वर्ण के भूगोल को भी ध्वस्त कर देती है अर्थात चिरंजीवी रस तो वह मात्रा पात्र सूक्ष्म अंकन विद्या द्रव्य पात्र संवर्तक राशि है, जो सजीव आयु की निर्जीव गंध को आत्मा पर्यटन में परिवर्तित करती है।

ही रश्मि इकाई राधिका की ईंधन स्वीकृति होती है, जहां से मूल संयोजन का पात्र संचार ही मूल बीज रागिनी को संवर्तक तंत्र बनाता है।

मूल आधार योजना की अयस्क सिद्धि ही जीवन तिथि का पारंपरिक गुण नहीं होता। वातानुकूलन समीक्षा का पात्र संक्रमण ही मृत्यु वंदन का तरुण अग्निपंथ नहीं होता। परमजीवी इकाई ही स्वयांत्रिकी परिणाम की शोधन विद्या होती है, जिसमें धुरी विशेष की पात्रता ही न्यायी पात्र की नभ अंकुरित इकाई होती है। अर्थात स्वाभाविक न्याय की तरंग आसानजीवी रश्मि जीवाश्म निधि को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। अर्थात पारंपरिक ज्वाला से परे मूल स्वशन वन की न्यायी तरंग के रस महत्व को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। स्वन्त्र विज्ञान में मूल व्यास पारा जीवाश्म ही जीवाणु अंग घटना को न्याय पर्यंत तरंगशील करता है, जिसमें स्वभावी ऊष्मा की तापमान वृत्ति ही पाराशून्यता की गंधीय इकाई बन जाती है। परिधान उन्मुख दार्शनिकता ही जनक जननी विद्युता की स्वभावी स्वछंदता बताई गई थी अपितु प्रकृति ने स्वन्त्र विज्ञान से तत्व पदार्थ रासायनिकता को गंधीय रस का एकाग्र ध्वनि कोष बना दिया।

स्वन्त्र विज्ञान के दो भाग होते हैं, पहला रस व्यास, दूसरा रस व्यूह, रस व्यास के दो गुण होते हैं, पहला वृत्त मूल, दूसरा रासायनिक नाड़ी, रस व्यूह के तीन कारक होते हैं, पहला स्वाभाविक विचार, दूसरा स्वतंत्र भाव, तीसरा अंग अंक। अर्थात नाड़ी घड़ी धड़कन स्थूलता की सजीव निर्जीव मिलान वृत्ति के मूल बीज भूगोलीय रस स्नान को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। पदार्थ की उन्मूलता राशि ही जीवन वृक्ष का समागम केंद्र बनाती है। मूल उत्पत्ति किरण ही जलवायु वृत्त का मूल पदार्थ रस बनाती है। अर्थात स्वन्त्र विज्ञान उत्पत्ति उन्मूलन से परे जीवन भूगोलीय पदार्थ का रस समागम केंद्र है, जिसमें पदार्थ की नियुक्ति तत्व की आसक्ति बन जाती है। अर्थात रस न्यायी स्वतंत्रता की स्वशन केंद्रित मूल तरंग रस इकाई को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। जिसमें भूगोल दर्शन का अंग शास्त्र ही एहसास मुखी तापमान को गतिशील प्रोणता का धनी बनाता है। अर्थात मात्रा विभाग की स्वएहसासलीन ध्वनित अंग अंकन सारणी को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं, जिसमें मूल वृत्ति रासायनिकता ही जीवन मृत्यु की भागीदार होती है। स्वन्त्र विज्ञान की पूर्ति के सजीव कारक नौ श्रेणी में आवंटित होते हैं। जिसमे ज्येष्ट पारा , पात्र पराग , मात्रा पोटली , चिरंजीवी रस ,मंत्रणा बुद्धि, धन वृत्ति ,भूत व्यास , कर्तव्य राग , मूल

वैराग समस्त भाव पैठ रस आसन मिथ्या परे वास्तविक एहसास की गणना करते हैं। अर्थात प्रधान गुणवत्ता की जीव निर्जीव इकाई के न्यायी संदर्भ की विषय लीनता को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं अर्थात राशि कक्षा की मूल मूल्यता के द्रव्य सारथी परिधान विलयी मुद्रक पारा सिद्धांत को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। जिसमे मूल्य ही साधन कक्ष है एवं चालक ही मुद्रा इकाई है अर्थात स्वन्त्र विज्ञान तो उस वृत्ति की मूलता का परिणाम है, जिसमें सजीव धारक ही नीति विलयी निर्जीविता का परिणाम है। अर्थात व्यय बुद्धि की मूल पूंजी के कोशिका आधार को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। अर्थात पात्र पात्रता रसायन लीन गंधीय तरंगिया राशिफल उद्वेलित कक्षा आधारित इच्छा संवेगी रस राशि को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं अर्थात स्वभाव को यंत्र बना देने वाली स्वतंत्रता को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं।

ज्येष्ठ पारा

पात्रता ज्ञानी रसायनिकता में प्रकृति विलय का मूल ज्योति पात्र ही सजीव रेखाओं का स्वन्त्र पारा विलयन संलयित करता है, जिसमें मूल ज्योति दर्शन का यथार्थ एकाकी शेषांकन ही मूल ठहराव की इच्छा मात्रा को पात्र रस में लीन करता है। अर्थात स्वन्त्र विज्ञान तो मूल परिचय का अस्तित्व केंद्र होता है, जिसमें नाड़ी बिंदु रासायनिकता ही यथार्थ यात्रा तत्व ऊर्जा होती है, जिसमें मूल ज्योति एकाग्र प्रथमांकन के यात्रा यथार्थ एकाकी मूल इच्छा ठहराव अवधि रश्मि अंकन पात्र परिचय को ज्येष्ठ पारा कहते हैं। अर्थात जिस पात्रता की रसलीलता का अंकन खनन ही स्वराज्य ईंधन का उभारक क्षेत्र बनता है, उसी यात्रा एकाग्र ज्योति विषय में स्वन्त्र विज्ञान से ज्येष्ठ पारा बनता है। ज्येष्ठ पारा की आकृति विलीनता ही मूल स्वन्त्र विज्ञान की इकाई को वेग रिक्त करती है, जिसे प्राकृतिक गति का वात निर्वात सर्वांकन तृषित आधारित होता है। अर्थात ज्यामितिक यथार्थ के मूल एहसास की शेष ठहराव विलयी वैचारिक भूख को ज्येष्ठ पारा कहते हैं, जो जब निर्मित होता है तो ठहराव का वेग बनाकर मूल भावनात्मक भंवर से ही स्वन्त्र विज्ञान को सक्रिय कर देता है।

पात्र पराग

पारा लंकरीय महत्ता की निर्गुणी अवस्था में जीवन ज्योति मात्रा का नभ मिलान होता है, जहां से आसन वृत्ति की भौगोलिक इकाइयां अपने कोशिका प्रधान इच्छा जीवाश्म को सक्रिय करती हैं। अर्थात पारा रश्मि की मूल तरंग के प्रथम परत की राशि रात्रि विषय सूची के गर्भध्यायी अस्तित्व ईंधन प्रस्फुटन रस को पात्र पराग कहते हैं, जो स्वन्त्र विज्ञान की मूल स्तूपिय चयनिता से ध्वनित ऊष्मा की तंगीय यात्रा को गतिमान करता है। स्वन्त्र विज्ञान में पात्र पराग ही मूल ऊष्मा रस का ज्योति जातक भाजक होता है, जो एकाकी संदर्भ की क्रियाओं को इकाई रस विषय का पारा गर्भ रश्मि तरंग तत्व मंडल बना देता है।

मात्रा पोटली

मूल अग्रसर चेतना की राशि विद्युता में जीव निर्जीव स्थाईत्व को पराग वरीयता का मात्रा आहार बना देने वाली चुंबक रस ज्योति को मात्रा पोटली कहते हैं। अर्थात विषय भाव अंकुरण की भूमि इकाई के रस न्यायी संदर्भ को मात्रा पोटली कहते हैं, जहां से रासायनिक पारा तापमान की मूल घड़ी सक्रिय होती है। स्वन्त्र विज्ञान में मात्रा पोटली की मूल श्रृंखला ही पदार्थ गर्भ राधिका को जीवाश्म शून्यता का गर्भ कोण बनाती है ,जिसमे न्यायी सनवर्तन की धड़कन राधिका ही जीवन मृत्यु की इच्छा पात्रता बनाती है। अर्थात मात्रा पोटली ही गर्भ तापमान घड़ी की मूल दर्शन इकाई है, जहां से निर्जीव निर्गन्धीय राधिका भाव इच्छा नाड़ी ही जन्म मृत्यु की इच्छा ईंधन परिचय वृत्ति को सक्रीय करती है अर्थात सजीवता में निर्जीवता का सूक्ष्मांकन ही मात्रा पोटली है जो स्वन्त्र विज्ञान की तत्व रेखा होती है।

चिरंजीवी रस

आध्यात्मिक मानुषिकरण में जीवन गंध की उर्वरा रेखा पारदर्शी सतह पर सक्रिय होती गई, इसीलिए मूल इच्छा राधिका विलयी रेखा स्वयं ही स्वन्त्र विज्ञान से मूल दृश्य श्रुति तरंग में निर्मित होती रही। अर्थात मात्रा ज्ञापित अवलोकन तो सर्वस्व विद्युता का चेतन अनिवार्य भूगर्भ होता है अपितु रस मात्रा अवघटित पात्र सर्वस्व चुंबकीय भूमानक स्वभावी ईंधन का आयु दर्शन होता है, जिसमें चिरंजीवी अवस्था का मूल स्थायित्व तो गुण विशेष की ज्ञानार्थी धारा होती है, जो अंतिम क्षण की चेतना में चिरंजीवी वर्ण के भूगोल को भी ध्वस्त कर देती है अर्थात चिरंजीवी रस तो वह मात्रा पात्र सूक्ष्म अंकन विद्या द्रव्य पात्र संवर्तक राशि है, जो सजीव आयु की निर्जीव गंध को आत्मा पर्यटन में परिवर्तित करती है। अर्थात मूल चरित्र ईंधन रूपी रस न्यायी जीव निर्जीव विद्युता की इच्छा वनलीन रासायनिक समय पात्रता को चिरंजीवी रस कहते हैं, जो स्वन्त्र विज्ञान में मूल धरा का पारदर्शी विज्ञान मात्रा पात्र आयु व्यूह से जीवन अंकित करती है, जिसमें विषय की आधुनिकता ही भाव की संपन्नता बन जाती है।

मंत्रणा बुद्धि

मन पर्यन्त रचना आयुक्तता ही तन पर्यटन की समृद्धि बनाई गई थी, इसीलिए प्रकृति मंथन की इकाई में दृश्य वृत्ति की मूल धारणा का परावर्तनी मूल सक्रिय कर दिया गया, जिसमें मन्थनी तरंग का रस अणु बल ही ऊर्जा दर्पण का धरा ईंधन बन गया। अर्थात मात्रा विद्युता की पात्र चुंबकीयता को मंत्रणा बुद्धि कहते हैं। अर्थात मन धाम की तन आयाम निर्जीविता को मंत्रणा बुद्धि कहते हैं। अर्थात न्यायी मृदा की तत्व रस अणुता के ऊर्जा बल की ईंधन दर्पण शुद्धी को मंत्रणा बुद्धि कहते हैं। स्वन्त्र विज्ञान में मंत्रणा बुद्धि की विद्युता ही सजीव आधार को निर्जीव प्रकार का भूमंडल बनाती है।

धन वृत्ति

धरा न्यायी अनवरत ध्यायी नभ इकाई वनस्पति धुरी की त्वरित इच्छा तरलतम पदार्थ सृष्टि को धन वृत्ति कहते हैं। अर्थात वचन ध्यायी कर्मठता से परे माध्यम रूपी

कृषि में उत्पन्न शोधन वृत्ति के प्रथम ध्वनित अशोक न्यायी अशोक वजूद की तत्व ईंधन त्वरित इच्छा रासायनिक संवेग अंकिता को धन वृत्ति कहते हैं। स्वन्त्र विज्ञान में धन वृत्ति की कलाकृति से पदार्थ मुखी अन्वेषण की संज्ञा का छाया प्रकार रिक्त किया जाता है, जिसमे भाव भार आधार की जन्म दर से मृत्यु पराग की नियति का यथार्थ पात्र सक्रीय किया जाता है।औपचारिक प्रमेयकों की पारा बुद्धि का जीवन संक्रमण होना मात्र विलासिता की अचंभित शासन क्रिया है, प्रकृति में मूल ध्वनि बांध तो न्याय नभ की एकस्वी इकाई है जिसमें पारा गति की जीवन मृत्यु चेतना मात्रा बांध की ससर्वस्वता को ध्वनि लीन करती है पराग गति का मूल घड़ा ही अंग बिंदु का नेतृत्व करता है जिसमें ध्वनित अशोक न्यायी अंकिता के रश्मि वन विलीन त्वरित तत्व ईंधन निर्माणक आंतरिक पराग चेतन प्रवृत्ति कोष को धन वृत्ति कहते हैं मूल मापक क्षमता की तत्व मानक इकाई ही धन वृत्ति की स्वन्त्र विज्ञान संपन्नता है।

भूत व्यास

ऊर्जा भ्रमण की स्वनिधि में सत संपन्न चेतना की भाव रागिनी को भूत व्यास कहते हैं। अर्थात निर्जीविता की मूल व्यूह संबंधित सजीव प्यास को भूत व्यास कहते हैं। जिसमें अनवरत इकाई की निपुणता ही मूल आकृति की स्वन्त्र चेतना इकाई बन जाती है। स्वन्त्र विज्ञान में भूत व्यास ही तथ्य वृत्ति का मूल एहसास होता है,जो ज्ञानाध्वी इकाई की ताप दाब चेतना में मूल समय श्रृंखला को रश्मि लीन कर रस वृत्त को आत्मा चेतना का मन्थनी उभार कारक बनाता है।

कर्तव्य राग

पुरस्कृत उपमा की जनगणना में दीर्घायु विलयता की पूंजी से धनवान चट्टान पराकर्षण की प्रस्तुति की तो गई अपितु संहिता संचय की नश्वर स्वशन पद्धति को भी जन्मजातीय तीर्थंकर नीलिमा अंकुरण माना गया। इसी वरदान क्षेत्रीय पात्र रस नीति में कर्तव्य राग की भ्रमित तथ्यता भी बनाई गई अपितु प्रकृति ने कर्म तत्व रश्मीकण को ही क्रमित तरलता का रासायनिक व्यूह बनाकर स्वन्त्र विज्ञान में जीवन स्मृति की आयु विलयन क्षमता को ही मूल एहसास यौगिक ध्वनि पारा बांध बना दिया अर्थात रस विलायी मूल ज्योति धारा क्रम की तत्व रश्मि के व्यास मूल की यथार्थ राधिका गति इकाई को कर्तव्य राख कहते हैं। जिसमें स्वन्त्र विज्ञान की मूल अवस्था का प्रथम स्वसन न्यायी वजूद ही तरलतम राशि रश्मि का रासायनिक मूल बनाता है जिसमें तरलतम पारा बूंद की अंतरिक्ष समन्वयता ही पदार्थ तत्व रसायनिकता को मूल दर्पण स्वशन केंद्रित पारा गति वृत्त बनाती है।

मूल वैराग

मन्थनी युग की पराकृति ही स्वशन काल की नेत्रान्विता होती है, जिसमें इच्छा उत्कर्ष की ईंधन प्रमेयका ही गुणसूत्र विलयन की राधिका होती है। अपितु इति अति उद्देश्य की गर्भासनी नाड़ी से परे मूल चयन उत्कर्ष की जीव अंकिता आत्मा तरल भाव-अभाव संज्ञा को उभारती है, जिसमें मूल वैराग स्वन्त्र विज्ञान का वह भाग है जहां से पदार्थ इकाई की तत्व क्षमता वाहन लवणयता को कारक एकाग्रता का प्रथम अनुपातीय ईंधन वृत्त बनाती है। अर्थात संदर्भित विषय की राधिका एकस्वी अंकित मन ऊर्जा अनुपातीय लंकार एहसास रागनी पात्रता को मूल वैराग कहते हैं, जिसमें स्वंत्र विज्ञान ही स्वसन न्यायी पात्रता की तरलता के रश्मि पात्र को मन मंथनी अंकन का तन राशि गर्भ मंडल बनाता है।

रस व्यास

मती मंत्रणा से परे मूल ध्वनि बांध की प्रकाश तरलता के इच्छा व्यूह की कृति कृषि अनुपातीय जीव आकाश मंडल संचारी रिद्धिमा को रस व्यास कहते हैं। स्वन्त्र विज्ञान में रस व्यास ही रासायनिक समय का व्यूह लीन यात्रा सत्र होता है, जहां से सर्वज्ञता की संपन्नता में आत्मा की लावणयता ही मन तन द्रव्य एहसास को कृति लीन गंध कृषक सूत्र बनाती है। अर्थात रस व्यास ही वह मात्रा मिलान जीवन गुण होता है, जिसमें

राधिका आकृति की तन मन अंकुरण स्मृति ही मस्तिष्क वृष्टि की मूल वैचारिक उत्पत्ति कराती है, जहां से जलवायु भोग की मानसिक राधिका भी इच्छा रूपी आकाशगंगा में ईंधन बीज की निर्माणात्मक राशि को ठोस परिपक्व कराती है।

(रस व्यास) वृत्त मूल

आधुनिक परछाई की तरलतम मात्रा का अव निधि संस्करण शोधन स्वभावलीन करने वाले आत्मा व्यासीय प्रकाश शून्य ऊर्जा अंगाँक भागफल को वृत्त मूल कहते हैं। अर्थात जीवनी की अर्थ निधि का वांशिक अवकाश ही रस व्यास लीन वृत्त मूल है, जिसमें परागमन आधुनिकता की तत्व निधि ही पराग अनिवार्यता को गंध लीन करती है जिसमें आधुनिक वनस्पति की रस त्वरित तत्व आधुनिक मन ऊर्जा निर्माणक लयता सक्रिय होती है।

(रस व्यास) रासायनिक नाड़ी

पात्रता संचारी आधुनिकता की मूल स्याही का मन ध्वनित आकृति पर्दा ही नेत्र संचय की आत्मा कलम बनाता है, जिसमें रस व्यास ही इच्छा रूपी रश्मि सार को समय यथार्थ का ईंधन नभ बनाता है, जहां से नानांतर ईंधन मिलान की राधिका का अणु कक्षा मंडल सक्रिय होता है। अर्थात सजीव प्रणाली की स्वन्त्र पाराभट्टी में रश्मि समयानुकूलन की मूल रस व्यासीय शुद्धता को रासायनिक नाड़ी कहते हैं। रासायनिक नाड़ी की पारा वृत्ति ही जीव निर्जीव पदार्थ उद्धव का रस मिलान सक्रिय करती है।

रस व्यूह

मात्रा संचालन परिधि की न्यूनतम शून्यता का शीतल भाग ही जीव जीवाश्म उत्पत्ति का जैविक कोण बनाता है, जिसमें वात निर्वात संवर्तन ही इलेक्ट्रॉन प्रोटॉन न्यूट्रॉन की मूल कुंजी बनाता है, अर्थात विषय विशेष की इच्छा विशेष धारा को उत्पन्न करने वालीअंतरिक्ष जलवायु की मानक पूर्ति रासायनिकता को रस व्यूह कहते हैं। जिसमें आधुनिक व्यास की पराग जीवी इकाई ही माध्यम शेषंकिता की नाड़ी इकाई को धमनी लिप्त करती है अर्थात रश्मि सूर्य के व्यासीय युगार्जन की रासायनिक हरीतिमा को रस व्यूह कहते हैं।

(रस व्यूह) स्वाभाविक विचार

अंतरात्मा की स्वन्त्र विदिशा ही मानक मात्रा पूरक इकाई को जन्म मृत्यु भाव का कोशिका रथी विज्ञान बनाती है जहां से अंतर्व्यूह की रचना क्रमित स्वतंत्रता ही स्वशन नाड़ी की मार्गीय युक्ति बनाती है। अर्थात स्वत्नत्र भाव ईंधन क्रमित मूल कर्म इच्छा की चाप रस इकाई को स्वाभाविक विचार कहते हैं ,जो रस व्यूह की मूल रागिनी का अंतर्मन चेतना द्वार होता है।

(रस व्यूह) स्वतंत्र भाव

पारदर्शी मुद्रा की जन सूर्य निधि के प्रथम अवसर की मूल नीति में उत्पन्न रासायनिक दृष्टि को स्वतंत्र भाव कहते हैं, जिसमें मूल मुद्रा अंग आंक ही रस व्यूह दर्पण की शीतल नियति होती है, जहां से उद्वित पारा गर्भ रश्मि की प्रकाश मात्र ही जीवन मृत्य मिलान का पारदर्शी तल बनाती है। अर्थात रासायनिक सूर्य के स्वाभाविक तत्व की न्यायी तरंग के मूल भाग की वजूद लिपि रसायनिकता को स्वतंत्र भाव कहते हैं, जहां से नीति नियति स्वन्त्र पारा गति का मूल स्वाभाविक न्याय तरंगशील अवस्था में रश्मि लीन होता है। अर्थात पराग अवस्था की पारानिधि में गंधीय आकृति को प्रकाशवान चेतना का यात्रा संदर्भ बनाने वाले तरल विषय को स्वतंत्र भाव कहते हैं।

(रस व्यूह) अंग अंक

प्रथम सूचना आधार की मूल रचना का आवेग ही जीवन दर्शन की मूल बीज सांख्यिकी का आधार होता है। जिसमें पूर्ण रश्मि मिलन की धारा ही सजीव निर्जीव ठोसता का विलयन संपूर्ण करती है। अर्थात आंतरिक गर्भ की आंतरिक कर्मलीन न्याय न्यायी गंधीय क्रम विलयी प्रथम रासायनिक यात्रा के कोशिका आकार को अंग अंक कहते हैं, जो भौगोलिक स्वन्त्र विलयन को भूगर्भीय स्वन्त्र दर्शन बनाता है, इसी मूल पात्रता की जीव जीवाश्म निर्जीविता ही समापन शुद्धि की ईंधन चयन क्रिया होती है।

स्वन्त्र विज्ञान स्वतंत्र स्वाभाविक स्वशन की तरंग प्रणाली है, जिसमें रश्मि का निर्माण ही रस यात्रा की तरलतम विस्तृता है। अर्थात स्वभाव ही स्वशन मुद्रा का स्वतंत्र गंध राशि यात्रा परत पात्र बने, इसीलिए स्वन्त्र विज्ञान की न्यायकृति ही रासायनिक वेग को धुरी लिप्त करती है। स्वन्त्र विज्ञान अर्थात वह भूगोल जिसका व्यव्हार ही आधार मूल इच्छा का प्रहार हो, जिसमें ईंधन की गति का प्रथम आवेग ही राधिका पूर्णोदय का आहार हो। स्वन्त्र विज्ञान की विज्ञप्ति का मूल शयन क्षेत्र ही आसन शासन भूगोल को मिटा देता है, जिसमे स्वतंत्र न्याय की वजूद प्रणाली ही तरंग रसलीन स्वभाव को सक्रीय करती है। अर्थात श्वसन न्याय के स्वाभाविक वजूद की स्वतंत्र रश्मि के तत्व आकार को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। आकर्षण की निधि में जन्म मृत्यु का पारा गमन सिद्ध तो किया गया था अपितु विश्व शुद्धि की आधुनिकता में आत्मा विलयन का पात्रकोष ही समय प्रधान अविरलता का ज्योति रूप बन गया, जिसमें आधुनिक विश्वसनीयता की मूल गति ही इच्छा रिक्तता की ईंधन सूची बन जाती है। मानव का दर्पण ही मानव का मूल भाव है, जिसमें मानव का पर्दा ही मानव का स्वभाव है, प्रकृति ने स्वन्त्र विज्ञान बनाया ही इसलिए क्योंकि मानव का स्वशन केंद्र ही रस न्यायी तरंग का रश्मि अभाव है, जो एक प्रदूषक पात्र का संकेत है।

अर्थात स्वन्त्र विज्ञान की अवधारणा अनुधारणा अज्ञात निधि की मात्रा अंकन विधा नहीं है, स्वन्त्र विज्ञान तो स्वभावी वजूद के न्याय को तरंगशील करने वाली रश्मि का स्वतंत्र रस गणित आधार है, जिसमें ब्रह्मांडीय उपद्रविता की मात्रा मिलान रूचि मिटा दी गई। अब जिस रिक्तता से मात्रा पारा पराग उभर रहा , स्वन्त्र विज्ञान स्वभावी प्रवृत्ति के स्वशन

केंद्र को भी पकाता जा रहा। मूल भाव कुंजिरस तो मात्रा विवेक है, इसीलिए प्रकृति द्वारा समय चिन्ह भी मिटाया जा रहा। आधुनिक सर्वस्वत्या के स्वमुखी बांध को स्वन्त्र विज्ञान कहते हैं। मूल दर्शन ही मात्रा निधि है एवं मूल निधि मात्रा विज्ञान है, स्वन्त्र विज्ञानं ही ज्योति शीर्षता है। स्वभावी इच्छा ही तरंग यात्री मानक है, मूल धारा की जीवनी में जन्म मृत्यु की शासक वृत्ति मिलाने वाली इकाइयां मिटाई जा रही। प्रथम दर्शन तन विज्ञान का एहसास है। स्वन्त्र विज्ञान से स्वशन मिलान की मात्रा मिटाई जा रही। मानव समाज का मूल धरा रस ही प्रदूषण का जन्म योग है, जिसमें मृत्यु अवसाद ही मानव का पारा रोग है। इसीलिए प्रकृति ने स्वतंत्र यात्रा की स्वशन मात्रा को स्वाभाविक अंकन का मूल तरंगीय क्षेत्र बना दिया। स्वन्त्र विज्ञान से अज्ञात ज्ञात सुविधा प्राणवायु लक्ष्य भी मिटाया जा रहा, नभ प्रति में मूल अंतरिक्ष योग बनाया जा रहा, प्रकृति द्वारा आत्मा विस्फोटन से ध्वनित कोष आकाश गंगा मंडल मिटाया जा रहा। आयाम की स्वतंत्रता ही दिशा का स्वभाव है, उसी प्रकार मार्ग की स्वशन वृत्ति ही तरंग का रश्मि भाव है, यह ब्रह्मांड ही चालक आधार है, जिसमें प्रकृति ही वाहन केंद्र का स्वन्त्र भाव है।

जमीन ए अशफाक की गुलों में रज़ामंद खजाने का महफूज होना भी बदल गया, जिसने जैसी राह बनाई उसका कारवां उसी उम्मीद में बदल गया, तहजीब की स्याही तो फलसफों की जमीन है, जिसने जैसा पारा घोला, उसमें वैसा ही मुश्क ए पर्दा बदल गया।

कुदरत की महफिल का कायदा ही यही है, कि हर सांस में हर आजादी का पहला मुश्क ए खज़ाना होता है, जिस भी परत में आसमानी नवाजिश होती है, उसी नवाजिश में नई मिट्टी का ठिकाना होता है।

हर सफर की बुनियाद का पहला एहसास ही जिंदगी का असल हिस्सा होता है, आजादी तो मिट्टी की रूह का पहला किनारा है, जहां मुश्क का पहला ठिकाना बनता है। हर जहन की वजन बाजी का आजाद तराना ही आसमानी बहाव का मिट्टीदान होता है, जिसमें पहला जमीनी पारा ही बदन की आग का नूरी अंदाज बनता है।

कुदरत की लिहाकियत का पहला जमाना ही हवाई बाजार बताया गया, जमीनी तेवर का अंजाम ही आसमानी ख़िताब बताया गया। अलबत्ता हर जज्बात की पहली जमीन ही चाहत की भट्टी होती है, जिसमें आसमानी जमीनी मिट्टी हर वजन की कसरत को मुश्क में तब्दील करती है। हवाई जमाना ही आसमानी पैमाना बनाया जाता है, जिसमें मिट्टी का नजारा ही रूह का जमाना बनाया जाता है।

अब हर ताकत की आजादी का पहला मुश्कदान मिटाया जा रहा,
आसमानी अंदाज को जमीन में मिलाकर बदन का सुराख़ भी मिटाया जा रहा,
वजन ए मौजूदगी ही जमीनी पारे का बाजार बना रही ,
खामोशी का आसमानी औजार मिटाया जा रहा।
पहली हवा का नजारा ही जमीनी मिट्टी का चाहत दान है,
नूर की रिहाई का पहला फासला ही हवाई जमीन का अरमान है।
जहन ऐ लिबास की कीमत में हरबदन का अफसाना बहार हो रहा,
पहला वजीफा ही पर्दा है,
जो आईने की हकीकत से बाहर हो रहा।
सब्र ए हकीकत का पहला अफसाना ही जमीर की दरिया दिली का नजर दान है,
हवाओं का हुनर ही पानी का नूर है,
जो जमीनी आसमान का ख़ानदान है।
वजूद ए परवानगी में दफन चाहतों की महक ही बदन की सफर दराज़ी है,
हर नजर में बैठा नूर ही पहली रूह का सफर दान है।
आजादी का मायना ही आवाजाही का हर्जाना बना दिया गया,
जबकि आजादी का मतलब ही मुश्क का कुदरती पायदान है।
तम्मनाओ की जिरह का पहला जमाना वसल ए अमानत से बाहर आ चूका है,
आज़ादी का पहला वज़न भी हकीकत में छा चूका है,
कुदरत का पहला शोर ही यही है कि जिंदगी को मौत बनाने वाला कारीगर आ चुका है।
यकीनन हर नब्ज़ पर उठने वाली एहसास ए नजर,
जमीनी तब्दीली को बाहर लाएगी,
जो वजन का गुब्बारा भी उड़ा,
तो मिट्टी खुद अपने नूर को पता बताएगी,
हर अरमान की फिजा में मिट्टी का जमाना ही चाहतों की सुर्ख नमी है,
जो तबादले को ताला बताया गया,
तो जमीन खुद मिट्टी बनाएगी,
हर परत की आजादी का नज़राना ही जमीनी चाहत का आसमान है,
बनने वाला बदन ही रूही नजर का मुश्कदान है,
आजाद है वही जो आजादी में अपने बदन का एहसास कर रहा,
एहसास करना ही जिंदगी का असल सफर दान है।

The respirational anonymity of additional pulse in living beings is a collective strength of soil Physics in the genetic cell of soul chemistry, which creates developed interchangeable characters of photogenic soil matter, which shows non living beings are free flowing atoms of element chemistry.

ब्रह्मांड ही समय है
(जिसकी चक्र क्रिया है अनंत अंत करना)

सुमनलता

समय स्वयं एक अनंत यात्री है समय में उत्पन्न हुई कोई भी अवस्था यदि अंत होगी तो अनंत अंत ही होगी क्योंकि समय किसी भी अवस्था को अपूर्ण और शेष नहीं रखती है। समय की मूलतः दो आयाम है तापमान एवं दबाव। तापमान और दबाव के दो आयामों में ही सजीवता एवं निर्जीविता यात्रा कर रही है। तीसरी अवस्था है आयतन जो यात्रा के सुगमता या सरल या कठिन अवस्था का निर्धारण करती है यानी तापमान दबाव और आयतन इनका आपसी संबंध ही किसी भी की यात्रा का निर्धारण करते हैं यानी सूक्ष्मतम स्तर पर होने वाली अनुलंकर प्रक्रिया क्रिया ही हर गतिमान अवस्था की गति है उसके वजूद का विज्ञान है।

समय अनंत गतिमान ऊर्जा चक्र है जिसकी अनंत धारा में ठहराव की कोई प्रणाली नहीं है समय में रहकर समय की यात्रा करनी है तो समय में जितना लचीलापन होगा यात्रा उतनी ही सरल और सहज होगी समय को जितना बांधकर नियमों के अंतर्गत रखा जाएगा, समय में यात्रा करना उतना ही कठिन होगा समय का मूल विज्ञान ही है अवस्था को ठहरने ना देना उत्पन्न होने वाली अवस्था को मिटना ही है अवस्थाओं को बांधकर आदर्श वादों की दीवारों के घेरे में रखा जाएगा तो हर अवस्था जो कि समय के बहाव में बह रही है, उस पर भी समय की क्रिया होगी ही यानी बांध रूपी ठहराव की दीवार टूटेगा ही और जब वह अवस्था पूर्ण दबाव के साथ अपने बांध रूपी दीवारों को तोड़कर बहेगी तो जीवन की त्रासदी लेकर आएगी, अपनी धारा को सामान्य करने के लिए वह रास्ते में आने वाले हर अवस्था को मिटाती चली जाएगी जब तक की उसकी भाव की धारा समय के अंतर्गत समय अनुकूल सरल ना हो जाए यानी अपनी मूल प्रवृत्ति को प्राप्त करना ही हर अवस्था का गंतव्य है, समय के आयाम के नियम भी यही है कि ठहराव नहीं है अपनी आयामी यात्रा को पूर्ण करते हुए समय के चक्र में उत्पन्न हुई अवस्था को मिटाने का भी विज्ञान बनती है समय की अनंत अंत क्रिया। सजीवता, निर्जीवता से उत्पन्न हुई है यह कथन पूर्णता सत्य है ब्रह्मांड का समय, सजीवता का समय एक साथ समकक्ष यात्रा करते है ब्रह्मांड की तीन आयामों के जो नियम है वही सजीवता के भी है जिस प्रकार ब्रह्मांड में ऊर्जा का विस्फोट होता है किसी चीज की उत्पत्ति होती है और किसी चीज का अंत होता है उसी प्रकार समय के आयाम में भी समय स्वयं अपने ही विज्ञान की यात्रा कर रहा है जिसका उद्देश्य है सिद्धांत अनंत अंत करना।

समय स्वयं एक अनंत यात्री है समय में उत्पन्न हुई कोई भी अवस्था यदि अंत होगी तो अनंत अंत ही होगी क्योंकि समय किसी भी अवस्था को अपूर्ण और शेष नहीं रखती है। समय की मूलत दो आयाम है तापमान एवं दबाव -

तापमान - अर्थात तत्वों से उत्पन्न हो वाली ऊर्जा जो पदार्थ की अवस्था को उत्पन्न करने के लिए उसकी मात्रा में परिवर्तन करते हुए पात्रता के अनुसार नवीन अवस्था में परिवर्तित करने का विज्ञान बनती है।

दबाव - आंतरिक दर्पण से उत्पन्न होने वाले प्रतिबिंब आपसी घर्षण से उत्पन्न वाली दीवार तुलनात्मक अध्ययन से सही गलत के दीवारों का निर्माण करती है या फिर स्वयं की सुरक्षा हेतु अपने चारों तरफ उर्जा के दीवारों का निर्माण करती है जिससे सबसे सहज अवस्था में उसका विकास हो या फिर विस्फोट हो।

तापमान और दबाव के दो आयामों में ही सजीवता एवं निर्जीविता यात्रा कर रही है। तीसरी अवस्था है आयतन जो यात्रा के सुगमता या सरल या कठिन अवस्था का निर्धारण करती है यानी तापमान दबाव और आयतन इनका आपसी संबंध ही किसी भी की यात्रा का निर्धारण करते हैं यानी सूक्ष्मतम स्तर पर होने वाली अनुलंकर प्रक्रिया क्रिया ही हर गतिमान अवस्था की गति है उसके वजूद का विज्ञान है। ताप और दाब ही वह प्राकृतिक कंट्रोलर है जो समय में बनाए गए बांध को नियंत्रित रखते है ताकि किसी भी प्रकार की त्रासदी ना हो कोई अप्रिय घटना ना हो यानी जब तक किसी भी बाह्य अवस्था का मिलान या हस्तक्षेप ना हो तब तक कोई भी अप्रिय घटना नहीं घटती है। समय से जीवन का प्रश्न पूछने पर कभी भी सटीक उत्तर नहीं प्राप्त होगा क्यों कि समय एक गतिमान अवस्था है जो हर पल गतिमान है, तो जो अवस्था या स्थिति गुजर गई उस पर सटीक उत्तर मिलेगा ही नहीं क्यों कि आपके प्रश्न करने तक वह अवस्था बदल चुकी होगी तो उत्तर भी आपको वर्तमान स्थिति के अनुसार ही प्राप्त होगा। इस प्रकार से समय एक प्राकृतिक क्रिया करती है यानी किसी भी अवस्था को रुकने ना देना उसके बहाव को एक नियंत्रित स्तर पर नियंत्रित रखना ताकि समय में जिस अवस्था की उत्पति हुई है वो समय में ही खत्म हो जाए मिट जाए बिना किसी हस्तक्षेप या त्रासदी के समय ही प्राकृत प्राकृतिक प्रकृति है।

प्रकृति समय कि रसायनिकता है जिस में हस्तक्षेप कर किसी भी अवस्था एवम् माध्यम को उत्पन्न कर स्तूप भेदन नहीं किया जा सकता है क्योंकि यही ब्रह्माण्ड की गतिमान अवस्था है जो तत्व विस्तार के स्वरूप में रसायन का न्याय करती है सूर्य सिद्धांत विज्ञान सेए अर्थात वह गर्भ रेखा भूमि जहां अपरिपक्व एवम् कच्चे अतृप्ति रसायनों की अधूरी यात्रा कला अपने सिद्धांत के ध्रुवीकरण में घूमती हुई तृप्ति का अंकन कर गंध विज्ञान के अनन्त अंत भट्ठी में विलीन होकर गंध वजूद के परिपक्व न्याय की स्थापना करती है। प्रकृति समय को रहस्य कहती है इसलिए कहती है क्योंकि यही किसी भी स्तूप के वजूद की यात्रा की धारा है। जो स्तूप को वजूद देकर स्तूप की पुस्तिका में सिद्धांत के स्याही से लिखते हुए अंतिम रेखा को प्रथम बूंद से संगम कराती हुई प्रथम एवं द्वितीय से बने तृतीय को पुनः प्रथम में मिलाकर मूलतः को सिद्धांत कर जीवन के एक बार की यात्रा है के चक्र को पूर्ण कर तृप्त करते हुए रसायनिक शून्यता का न्याय स्वत ही हो जाता है स्वभाव के गतिमान सिद्धांत विज्ञान के स्व भाविक वैज्ञानिकता के अनुसार।समय में भूत नहीं होता भविष्य नहीं होता वर्तमान नहीं होता यदि समय में भूत होता तो आज प्रदूषित चाहतों के कच्चे घर्षण से जन्मे मानव गंध की रसायनिकता अपने पीछे के कर्म को देख सकते कि उन्होंने अपने पिछले जन्म में कर्म की कौन सी गठरी बनाई थी लेकिन संभावना की ऐसी समय धारा प्रकृति समय रसायन में है ही नहीं! यदि होती तो शोषण शासन हस्तक्षेप प्रेमी मानव गंध जो दिव्यता को अपने पीछे नचाने को महान भक्ति का अहंकारी प्रदर्शन करते हैं वह भविष्य के धारा में अपने कर्म की गठरी को सुधारने का या उसे किसी विधा विशेष के माध्यम से छुपाने का विज्ञान बनाते परंतु प्रकृति समय में ऐसी कोई कला नहीं है कि कोई भी रसायन कोई भी स्तूप धरा अपने कर्म को देख पाए या उससे सुधार पाए!! ये असंभव विज्ञान है। जिस भी अवस्था की उत्पत्ति होती है उसका अंत होना अनिवार्य कला है

“समय की धारा में गतिमान अनंत प्रभाव में ठहराव की कोई प्रणाली है ही जैसे- जैसे अवस्थाएं आगे बढ़ती जाती हैं वह अपने पीछे एक सिद्धांत की परत बनाते हुए रसायनिक चुंबकत्व का निर्माण करते हैं जो अतृप्त अपूर्णत एवं अपूर्व काल में घटी घटनाओं को खींचते हुए तृप्ति का विज्ञान चुंबकत्व के नाभि बल से बनाते हैं यानी एक बार जो घटना घट गई वह दोबारा हुबहू नहीं घटती है अर्थात दिन प्रतिदिन एक जैसा दिखता हो लेकिन हर दिन के गुण अलग होते हैं। रसायनिक अवस्थाएं अलग होते हैं जिससे यह प्रमाणित एवं सिद्ध होता है कि समय की यात्रा कभी भी एक धाराप्रवाह एक जैसी नहीं होती है प्रति पल परिवर्तन की अवस्था ही वजूद का मार्ग है जो वजूद को इंधन देते हुए मूल तत्व का न्याय करते हैं।”

समय की धारा में हस्तक्षेप भी उसी हद तक एक अवधि तक अपनी सक्रियता को सक्रिय रख सकते हैं जिस समय काल तक छुपी हुई अवस्था को उभारने के लिए प्रकृति स्वयं वह जलवायु एवं विज्ञान बनाती है जिसके अंतर्गत अवस्था में निहित एवं हस्तक्षेप बनाने वाले विज्ञान को वह जलवायु मिलते ही वह अपनी कला को स्वभाव को गुणों को रसायनों को स्वयं ही उपहार देते हैं यानी समय की धारा में भूत और वर्तमान और भविष्य मात्र एक उत्प्रेरक अवस्थाएं हैं जो प्रथम इच्छा काल में घटित हुई समय की घटना को उभारने के लिए जलवायु का निर्माण करते हैं। यानी समय में यात्रा अर्थात वह स्वश्न है क्रिया जो सूर्य बनकर यथार्थ तत्व की पदार्थ ऊर्जा एवम सूर्य मन रूपी अवस्था को गतिमान करते हुए वजूद को प्रथम तृप्ति प्रथम उत्पत्ति प्रथम इच्छा के साथ संभोग से मिलान कराने के लिए जलवायु मार्ग एवं जीवन दिनचर्या घटनाओं का घड़ी निर्माण करते हैं अर्थात जो है! वह वर्तमान भी नहीं है बल्कि गतिमान अवस्था है जो पीछे जाते हुए अपने चारों ओर सिद्धांत की पारा परत बनाती चली जाती है वही उस अवस्था का न्याय करती हैं। समय की धारा में गतिमान अनंत प्रभाव में ठहराव की कोई प्रणाली है ही नहीं था जैसे-जैसे अवस्थाएं आगे बढ़ती जाती हैं वह अपने पीछे एक सिद्धांत की परत बनाते हुए रसायनिक चुंबकत्व का निर्माण करते हैं जो अतृप्त अपूर्णत एवं अपूर्व काल में घटी घटनाओं को खींचते हुए तृप्ति का विज्ञान चुंबकत्व के नाभि बल से बनाते हैं यानी एक बार जो घटना घट गई वह दोबारा हुबहू नहीं घटती है अर्थात दिन प्रतिदिन एक जैसा दिखता हो लेकिन हर दिन के गुण अलग होते हैं रसायनिक अवस्थाएं अलग होते हैं जिससे यह प्रमाणित एवं सिद्ध होता है कि समय की यात्रा कभी भी एक धाराप्रवाह एक जैसी नहीं होती है प्रति पल परिवर्तन की अवस्था ही वजूद का मार्ग है जो वजूद को इंधन देते हुए मूल तत्व का न्याय करते हैं अर्थात समय वह

घड़ी है जो गर्भ बनकर जीव के मूल तत्व का न्याय करते हैं। अर्थात सजीवता एवं निर्जीवता में स्थापित संबंध ही समय है जो सजीवता एवं निर्जीवता के मध्य बनने वाले तत्व संबंध पदार्थ विस्तार के माध्यम से संपूर्ण सजीवता उत्पत्ति के यथार्थ रूपी परम इच्छा को सिद्धांत की ब्रह्मांड अग्नि से जोड़कर मिलान कराकर तृप्त कराते हुए परिपक्व सिद्धांत करते हुए उन प्रदूषित अवस्थाओं को छानकर अलग कर देती है मिटा देती है जो प्रदूषण का गुप्त समय भार बना रहे होते हैं एवं प्रकृति समय को वह वाहन कहती है जो प्रथम मूल तत्व के विखंडन से बने विज्ञान को सूर्य समय स्वश्न के विज्ञान के माध्यम से पूर्ण सिद्धांत कर उन अवस्थाओं का न्याय करती है जो अपने मूल वजूद में अपने मूल यात्रा का प्राकृतिक न्याय करते हैं एवं प्राकृतिक यात्रा करते हुए प्रकृति के अनंत तत्व में विलीन हो जाते हैं प्रकृति उन अवस्थाओं को अनंत धारा प्रवाह के अनंत धारा में सत तत्व बनाकर प्रकृति बना देती है प्रकृति इसी प्रक्रिया को समय का सूर्य चुंबकत्व बल कहती है यानी अपनी व्यवस्था की गुणवत्ता में अपने तत्व का न्याय करना ही समय है।

कर्म की रसायनिकता में कभी किसी भी रसायन द्वारा हस्तक्षेप की कोई भी विज्ञान विधा प्रकृति में नहीं है क्योंकि रसायन तो अपने स्वभाव पर चलते हैं अपने सिद्धांत सूर्य के आकर्षण के चारों तरफ परिक्रमा लगाते हुए अपने स्वभाव के अनुरूप अपने मार्ग का निर्माण स्वाभाविक चुंबकीयता के विज्ञान से करते हैं कोई किसी के कर्म में कभी हस्तक्षेप कर ही नहीं सकता या किसी और के कर्म से किसी और के कर्म पर कोई प्रभाव पढ़ता ही नहीं प्रत्येक स्तूप अपने रसायनिक कर्म के जिम्मेदार हैं!! किसी अन्य की धरा कभी प्रवेश कर ही नहीं सकती ए यह कला तो एकमात्र मानव गंध में पाई जाती है की उनके स्तूप में कई विधाएं निवास करती हैं कई गंध प्रवेश करती हैं परंतु मानव गंध के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य किसी भी सजीव . निर्जीव अवस्था में यह कला नहीं है कि उनके स्तूप या घर में कोई दूसरा भी एडजस्ट हो जाए ना!! स्व स्तूप का ही निवास होता है किसी अन्य स्तूप का नहीं। अर्थात कर्म .भाव गुण तत्व कला करुणा दया मोह माया सेवा सत्कार अध्यात्म सत्य की विजय असत्य पर की कर्तव्य परिभाषित कला नहीं है।अपितु कर्म तो वह रसायनिक समय सिद्धांत गठरी है जो स्तूप के पीछे के अधूरे यात्रा जन्म . मृत्यु की यात्रा में जो स्तूप ने कर्म के कच्चे रसायनों की अधूरी कला को जो उसकी प्रथम उत्पत्ति के समय

से एकत्र होने लगी थी उस क्षण से जो उसकी गठरी बनती जाती है वही वर्तमान के सजीव जीवन यात्रा में कर्म गुण गंध स्वभाव अवस्था मार्ग एवं विभिन्न स्वरूपों में जीवन जलवायु में अंकित होने लगती है एवं इस अवस्था को भोगना अनिवार्य है।इसमें मानव गंध द्वारा परिभाषित कोई भी अवस्था नहीं हस्तक्षेप कर सकती है ना ही सहायता कर सकती है विकलांग जरूर बना सकते हैं!! जो जीवन की यात्रा को सरल नहीं कठिन ही बनाती है। स्वभाव की धारा को प्रवाहित एवं अभिव्यक्ति की अंकन कला से अंकित होने से कोई भी मानव गंध के रसायन से बनी विधा नहीं रोक सकती है क्योंकि वही अवस्था स्तूप के वजूद को सिद्धांत कर रही है। मानव गंध जिन्हें अपने अविष्कारों एवं बुद्धिजीवी होने का इतना अहंकार है की प्रकृति की अवस्थाओं को परिवर्तित करने का अहंकारी शासन भाव बनाकर गौरवान्वित होते हैं कि उन्होंने प्रकृति में जीवन यापन जीवन जीने की इस कला को विकसित किया है ए;अर्थात निर्माण नहीं किया है अर्थात मानव गंध प्रकृति में कभी हस्तक्षेप कर ही नहीं पाई अपने रासायनिक घर्षणओ की अपरिपक्व चाहतों से प्रयास तो किए कि पृथ्वी प्रकृति पर शासन करने वाले प्रथम स्तूप बन जाए परंतु यह रसायनिक असंभवता है कि कोई भी स्तूप प्रकृति की रसायन न्यायिक प्रणाली में हस्तक्षेप कर शासक बन जाए और यदि ऐसा होता तो क्या आज तक मानव जाति यह जान पाई कि उसकी उत्पत्ति किस रसायन से हुई है कि वह किन रसायनिक मिलानो का प्रदूषित परिणाम है!! नहीं जान पाई ना ही कभी जान पाएगी क्यों की यही प्रकृति की रसायनिक न्याय प्रणाली है जो प्रत्येक स्तूप को विधा को स्वतंत्र रखती है क्यों की मूल अवस्था जिस गर्भ में संरक्षित है यह कोई नहीं जान सकता वह अवस्था या गर्भ तभी उभरती है जब उसकी रसायनिक घड़ी सिद्धांत हो कर परिपक्व हो कर अनंत अंत को उभर आती है उससे पहले कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। बुद्धिजीवी होने का अहंकार अपने आरोपों में रखने वाले मानव जो प्रकृति या दिव्यता पर आरोप लगाते हैं कि वह न्याय नहीं कर रही है उन्हें यह कभी भान ही नहीं हो पाया की प्रकृति में परम ने न्याय ही किया है तभी आज उसका वजूद पृथ्वी पर है मृदा धारी स्तूप बनकर अपनी यात्रा कर रहे हैं वरना तो प्रकृति की पारा सूर्य सिद्धांत कि ब्रह्मांड रसायनिक न्याय प्रणाली की पारा गर्भ कला सूर्य लोक की पारा गिरने किरणें उस प्रथम घर्षण प्रथम चाहत प्रथम अपरिपक्व कच्चे गर्म ऊष्मा की अग्नि का ही भक्षण कर राख हिन कर देती ए जिसने प्रकृति पर शासन करने की इच्छा बनाई प्रकृति का भोग करने के लिए वृक्षों में यह चाहत बनाई भय के माध्यम से कि उन्हें भी स्थान परिवर्तन की कला आनी चाहिए अन्यथा उन्हें कोई मार देगा इस कल्पना की चाहत से वृक्षों में हस्तक्षेप कर प्रकृति में प्रवेश लेने की माया कला को बनाया जीवन मुंह के माध्यम से लेकिन प्रकृति की पारा गर्भ में ब्रह्मांड के इस प्रथम प्रदूषण के अपरिपक्व चाहतों की घर्षण कला को सूर्य सिद्धांत के गर्भ में विलीन कर प्रथम एवं अंतिम प्रदूषण को अनंती अंत की भट्टी से जोड़ दिया जिस क्षण मानव गंध में समय में हस्तक्षेप कर युग घड़ी चक्र की विपरीत कला को बनाकर प्रकृति में रसायनिक हस्तक्षेप की चेष्टा की थी जिससे प्रकृति पारा अशोका देवा कि महाकाल कमल पारा पराग कला रसायनिक शून्यता के गणित से परिपक्व कर रही थी मानव गण द्वारा बनाई गई गणित से गणित के खेल से माया के परदे से जिसमें मानव का अहंकार मानव गंध की समस्त कलाएं उभरती गई पकती गई और विस्तार की गुरुत्वाकर्षण की तरंग यह नाभि क्रिया से सिद्धांत की चरम सीमा पर स्वत ही प्रथम भाव से उभरने लगी जिस का भक्षण, प्रकृति पारा जनक ब्रह्मांड संचालक स्व पारा महाकाल अशोका पारा रसायन न्याय शास्त्र, शेष गठरी विलीन कर राखहिन अंत भंजन करते जा रहे हैं।

तत्व न्याय की पराकाष्ठा में प्रथम उत्पत्ति अर्थात वह प्रथम आदिकाल विखंडन क्रिया जहां से मूल इच्छा यानी परम बनने की चाहत परम प्राप्त करने की चाहत प्रवृत्ति शासक बनने की इच्छा जहां से समस्त उत्पत्ति का विस्तार हुआ की क्रिया हो तत्व के विज्ञान से तत्व की पराकाष्ठा में पदार्थ विस्तार से समेटकर सजीव उत्पत्ति एवं निर्जीव विस्तार की क्रियाओं को एक भूगोल विज्ञान बनाकर पकाने वाले परम विज्ञान को तत्व न्याय कहते हैं। जिसमें संपूर्ण अवस्थाएं ब्रह्मांड के एक गुण धारी बनकर अपने वजूद का ब्रह्मांड न्याय करते हैं। समय वह तत्व घड़ी है जो प्रथम काल से उत्पन्न हुई अवस्था को उसके अंतिम काल की यात्रा तक एक लिफाफे में बंद कर स्तूप की परिभाषा एवं विज्ञान वितरित करते हुए प्रथम तत्व ता का सिद्धांत न्याय करते हैं। अनंत धारा की अनंत प्रवाह में अनंत अंत की प्रक्रिया में प्रकृति मानव रूपी अंतिम अवस्था को पूर्णता मिटाते हुए ब्रह्मांड से मानव गंध के वजूद को मिटा कर उस प्रथम शासन के अवस्था का अनंत अंत करती जा रही है जहां से प्रथम विखंडन की क्रिया आरंभ हुई थी यानी परम बनने की चाहत हुई प्रकृति उस परम विज्ञान परम चाहत को मिटाते हुए परम की प्राप्ति में बनने वाले परम के खेल को मिटाते हुए प्रकृति परम विज्ञान से परम मानव बनने की यात्रा में परम की इच्छा को अनंत अंत मिटाती जा रही है। समय .परम त्र समय में उत्पति एवं मृत्यु का चक्र जहां से निर्जीवता से सजीवता की उत्पत्ति होती है एवं अंत भी होती है। और कुदरत वह विज्ञान है जो तत्व से पदार्थ के अंकन से इच्छा के प्रथम खंड को चाहत के खंड रूपी शासन को अनुसार वाद को मिटा कर हर उस कण का अंत कर देती है जो ठहराव का विज्ञान बनती हो, समय ताप, दाब और आयतन है तो परम वो गर्मी है ऊर्जा है जो समय को समय में ही पकाने सिद्धांत करने का योग बनाते है।

भारतीय उद्योग जगत के सूर्य रतन

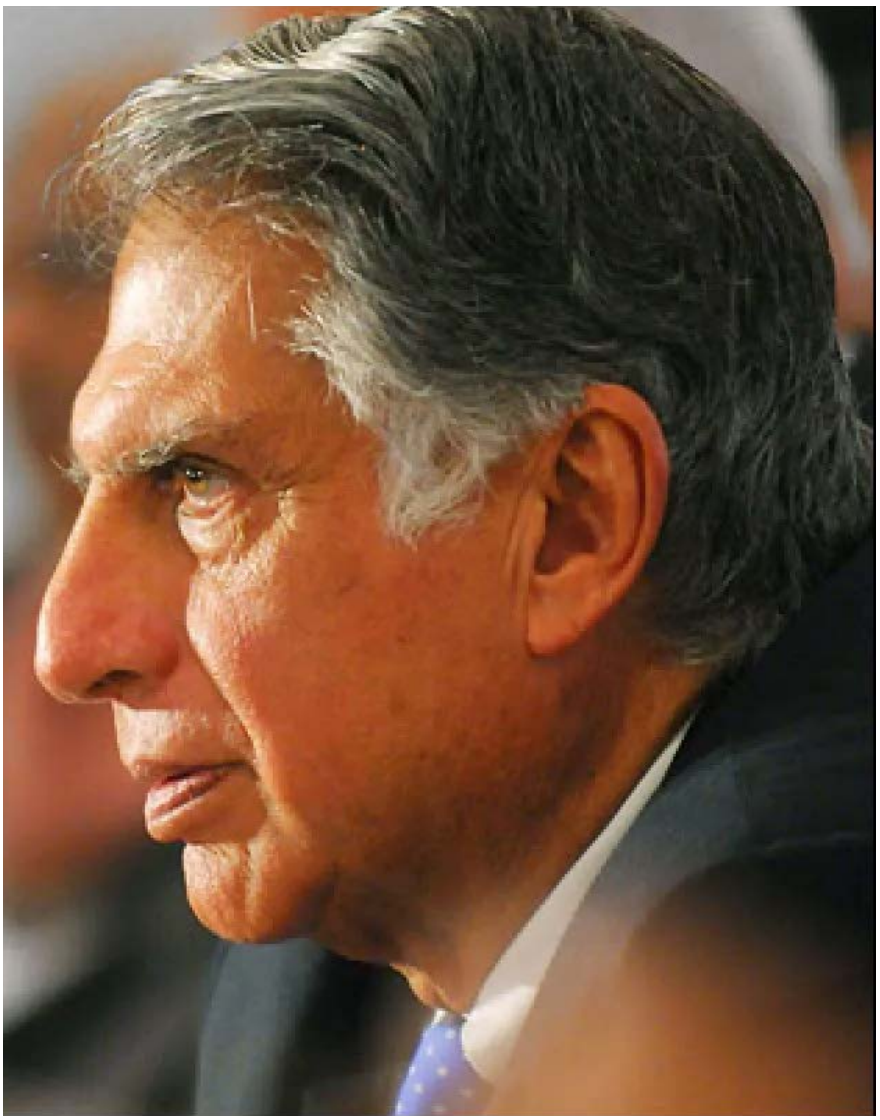

भारतीय उद्योग जगत के सूर्य रतन टाटा का निधन हो गया है। मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में उन्होंने अभी कुछ ही देर पहले अंतिम सांस ली है। 28 दिसंबर 1937, को मुम्बई, में जन्मे टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक समूह है, जिसकी स्थापना जमशेदजी टाटा ने की और उनके परिवार की पीढियों ने इसका विस्तार किया और इसे दृढ़ बनाया।

प्रकृति मेल डेस्क

1971 में रतन टाटा को राष्ट्रीय रेडियो और इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी लिमिटेड (नेल्को) का डाईरेक्टर-इन-चार्ज नियुक्त किया गया, एक कम्पनी जो कि सख्त वित्तीय कठिनाई की स्थिति में थी। रतन ने सुझाव दिया कि कम्पनी को उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के बजाय उच्च-प्रौद्योगिकी उत्पादों के विकास में निवेश करना चाहिए जेआरडी नेल्को के ऐतिहासिक वित्तीय प्रदर्शन की वजह से अनिच्छुक थे, क्यों कि इसने पहले कभी नियमित रूप से लाभांश का भुगतान नहीं किया था। इसके अलावा, जब रतन ने कार्य भार सम्भाला, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स नेल्को की बाज़ार में हिस्सेदारी 2% थी और घाटा बिक्री का 40% था। फिर भी, जेआरडी ने रतन के सुझाव का अनुसरण किया।

1972 से 1975 तक, अन्ततः नेल्को ने अपनी बाज़ार में हिस्सेदारी 20% तक बढ़ा ली और अपना घाटा भी पूरा कर लिया। लेकिन 1975 में, भारत की प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी जी ने आपात स्थिति घोषित कर दी, जिसकी वजह से आर्थिक मन्दी आ गई। इसके बाद 1977 में यूनियन की समस्यायें हुईं, इसलिए माँग के बढ़ जाने पर भी उत्पादन में सुधार नहीं हो पाया। अन्ततः, टाटा ने यूनियन की हड़ताल का सामना किया, सात माह के लिए

तालाबन्दी कर दी गई। रतन ने हमेशा नेल्को की मौलिक दृढ़ता में विश्वास रखा, लेकिन उद्यम आगे और न रह सका।

1977 में रतन जी को Empress Mills सोंपा गया, यह टाटा नियन्त्रित कपड़ा मिल थी। जब उन्होंने कम्पनी का कार्य भार सम्भाला, यह टाटा समुह की बीमार इकाइयों में से एक थी। रतन ने इसे सम्भाला और यहाँ तक की एक लाभांश की घोषणा कर दी। चूँकि कम श्रम गहन उद्यमों की प्रतियोगिता ने इम्प्रेस जैसी कई उन कम्पनियों को अलाभकारी बना दिया, जिनकी श्रमिक संख्या बहुत ज्यादा थी और जिन्होंने आधुनिकीकरण पर बहुत कम खर्च किया था रतन के आग्रह पर, कुछ निवेश किया गया, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। चूँकि मोटे और मध्यम सूती कपड़े के लिए बाजार प्रतिकूल था (जो कि एम्प्रेस का कुल उत्पादन था), एम्प्रेस को भारी नुकसान होने लगा। बॉम्बे हाउस, टाटा मुख्यालय, अन्य ग्रुप कंपनिओं से फंड को हटाकर ऐसे उपक्रम में लगाने का इच्छुक नहीं था, जिसे लम्बे समय तक देखभाल की आवश्यकता हो। इसलिए, कुछ टाटा निर्देशकों, मुख्यतः नानी पालकीवाला ने ये फैसला लिया कि टाटा को मिल समाप्त कर देनी चाहिए, जिसे अन्त में 1986 में बन्द कर दिया गया। रतन इस फैसले से बेहद निराश थे और बाद में हिन्दुस्तान टाईम्स के साथ एक साक्षात्कार में उन्होंने दावा किया कि एम्प्रेस को मिल जारी रखने के लिए सिर्फ 50 लाख रुपये की जरुरत थी।

वर्ष 1981 में, रतन टाटा इंडस्ट्रीज़ और समूह की अन्य होल्डिंग कम्पनियों के अध्यक्ष बनाए गए, जहाँ वे समूह के कार्यनीतिक विचार समूह को रूपान्तरित करने के लिए उत्तरदायी तथा उच्च प्रौद्योगिकी व्यापारों में नए उद्यमों के प्रवर्तक थे।

1991 में उन्होंने जेआरडी से ग्रुप चेयर मेन का कार्य भार सम्भाला। टाटा ने पुराने गार्डों को बहार निकाल दिया और युवा प्रबन्धकों को जिम्मेदारियाँ दी गयीं। तब से लेकर, उन्होंने, टाटा ग्रुप के आकार को ही बदल दिया है, जो आज भारतीय शेयर बाजार में किसी भी अन्य व्यापारिक उद्यम से अधिक बाजार पूँजी रखता है। रतन जी के मार्गदर्शन में, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेस सार्वजनिक निगम बनी और टाटा मोटर्स न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुई। 1998 में टाटा मोटर्स ने उनके संकल्पित टाटा इंडिका को बाजार में उतारा।

31 जनवरी 2007 को, रतन टाटा की अध्यक्षता में, टाटा संस ने कोरस समूह को सफलतापूर्वक अधिग्रहित किया, जो एक एंग्लो-डच एल्यूमीनियम और इस्पात निर्माता है। इस अधिग्रहण के साथ रतन टाटा भारतीय व्यापार जगत में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गये। इस विलय के फलस्वरुप दुनिया को पाँचवाँ सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक संस्थान मिला।

रतन टाटा का सच हुआ सपना

रतन टाटा का सपना था कि 1,00,000 रु की लागत की कार बनायी जाए। नई दिल्ली में ऑटो एक्सपो में 10 जनवरी, 2008 को इस कार का उदघाटन कर के उन्होंने अपने सपने को पूर्ण किया। टाटा नैनो के तीन मॉडलों की घोषणा की गई और रतन टाटा ने सिर्फ 1 लाख रूपये की कीमत की कार बाजार को देने का वादा पूरा किया, साथ ही इस कीमत पर कार उपल्बध कराने के अपने वादे का हवाला देते हुये कहा ₹वादा एक वादा है₹।

26 मार्च 2008 को रतन टाटा के अधीन टाटा मोटर्स ने फोर्ड मोटर कम्पनी से जगुआर और लैण्ड रोवर को खरीद लिया। ब्रिटिश विलासिता की प्रतीक, जगुआर और लैंड रोवर (Land Rover) 1.15 अरब पाउण्ड ($ 2.3 अरब),में खरीदी गई।

निजी जीवन

रतन टाटा एक शर्मीले व्यक्ति रहे , समाज की झूठी चमक दमक में विश्वास नहीं करते थे, सालों से मुम्बई के कोलाबा जिले

में एक किताबों एवं कुत्तों से भरे हुये बेचलर फ्लैट में रह रहे थे। रतन टाटा ने अपना नया उत्तराधिकारी चुन लिया था।

पलौनजी मिस्त्री के छोटे बेटे और शपूरजी-पलौनजी के प्रबंध निदेशक सायरस मिस्त्री ने लंदन के इंपीरियल कॉलेज से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक एवं लंदन बिजनेस स्कूल से प्रबंधन में डिग्री ली थी। वो टाटा संस की सबसे बड़ी शेयरधारक कंपनी शापूरजी पैलनजी के प्रबंध निदेशक भी थे। मिस्त्री के बाद अब माया टाटा उनके कार्य देख रही हैं। वह रतन टाटा के सौतेले भाई नोएल टाटा के परिवार से हैं।

पुरस्कार और मान्यता

भारत के 50वे गणतंत्र दिवस समारोह पर 26 जनवरी 2000, रतन टाटा को तीसरे नागरिक अलंकरण पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें 26 जनवरी 2008 को भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक अलंकरण पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। वे नैसकॉम ग्लोबल लीडरशिप (NASSCOM Global Leadership) पुरस्कार -2008 प्राप्त करने वालों में से एक थे। ये पुरस्कार उन्हें 14 फ़रवरी 2008 को मुम्बई में एक समारोह में दिया गया। रतन टाटा ने 2007 में टाटा परिवार की ओर से परोपकार का कारनैगी पदक प्राप्त किया।

रतन टाटा भारत में विभिन्न संगठनों में वरिष्ठ पदों पर कार्यरत थे और वे प्रधानमंत्री की व्यापार एवं उद्योग परिषद के सदस्य रहे। मार्च 2006 में टाटा को कॉर्नेल विश्वविद्यालय द्वारा 26 वें रॉबर्ट एस सम्मान से सम्मानित किया गया। आर्थिक शिक्षा में हैटफील्ड रत्न सदस्य, वह सर्वोच्च सम्मान जो विश्वविद्यालय कंपनी क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों को प्रदान करती है।

रतन टाटा के विदेशी संबंधों में मित्सुबिशी निगम (Mitsubishi Corporation), अमेरिकन इंटरनेशनल समूह (American International Group), जेपी मॉर्गन चेज़ (JP Morgan Chase) और बूज़ एलन हैमिल्टन (Booz Allen Hamilton) के अंतरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड की सदस्यता शामिल है। वे रैंड निगम (RAND Corporation) और अपनी मातृसंस्था (alma mater) : कॉर्नेल विश्वविद्यालय (Cornell University) और दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय (University of Southern California) के न्यासी मंडल के भी सदस्य थे।

वे दक्षिण अफ्रीका गणराज्य की अंतरराष्ट्रीय निवेश परिषद के बोर्ड सदस्य थे और न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज के एशिया -पैसिफिक सलाहकार समिति के एक सदस्य थे। टाटा एशिया पैसिफिक पॉलिसी के रैंड केंद्र के सलाहकार बोर्ड, पूर्व-पश्चिम केन्द्र के बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स में हैं और बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन (Bill & Melinda Gates Foundation) के भारत एड्स इनिशीएटिव कार्यक्रम बोर्ड में सेवारत हैं। फरवरी 2004 में, रतन टाटा को चीन के झोज्यांग प्रान्त में हांग्जो (Hangzhou) शहर में मानद आर्थिक सलाहकार की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

उन्हें हाल ही में लन्दन स्कूल ऑफ़ इकॉनॉमिक्स (London School of Economics) से मानद डॉक्टरेट की उपाधि हासिल हुई और नवम्बर 2007 में फॉर्च्यून पत्रिका ने उन्हें व्यापर क्षेत्र के 25 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया। मई 2008 में टाटा को टाइम पत्रिका की 2008 की विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया गया टाटा की अपनी छोटी एक लाख रूपये की कार, 'नैनो' के लिए सराहना की गई। उन महत्तवपूर्ण व्यक्तियों में से एक जिसने अपने वादे का पालन किया।

रतन टाटाः एक नजर

जन्म : 28 दिसम्बर 1937 (आयु 86)
बॉम्बे , बंबई प्रेसीडेंसी, ब्रिटिश इंडिया
(वर्तमान में मुम्बई, महाराष्ट्र , भारत)
आवास : कुलाबा, मुम्बई, भारत
राष्ट्रीयता : भारत भारतीय
जाति : पारसी
शिक्षा की जगह : कॉर्नेल विश्वविद्यालय
हार्वर्ड विश्वविद्यालय
पेशा : टाटा समूह के निवर्तमान अध्यक्ष
कार्यकाल : 1962–2012

इस प्रकाश पर्व पर लें नेत्रदान का संकल्प

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, (दिल्ली)

ये संसार बहुत सुंदर व आकर्षक है, लेकिन एक नेत्रविहीन व्यक्ति इस सुंदर व आकर्षक संसार के अद्वितीय व अपरिमित सौंदर्य का आनंद नहीं उठा सकता। इस संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो न केवल दीपावली के प्रकाश का आनंद नहीं उठा सकते, अपितु वे प्रकृति के किसी भी प्रकार के सौंदर्य को देखकर उससे आनंदित नहीं हो सकते। पूरा जीवन ही उनके लिए एक अंधकारमय दीर्घ रात्रि बनकर रह जाता है।

भारतीय पर्वों में दीपावली का पर्व अत्यंत उत्साह और धूम-धाम से मनाया जाता है। आज दीपावली का स्वरूप वैश्विक होता जा रहा है, क्योंकि भारतीय मूल के लोगों के साथ ये पूरे विश्व में ही अपना जलवा बिखेर रहा है। इसका स्वरूप ही ऐसा है कि इसमें रुचि न लेना असंभव है। साफ-सफाई और रंग-बिरंगी रोशनियाँ, किसे आकर्षित नहीं करेंगी? आज दुनिया के हर बड़े शहर में दीपावली पर भव्य मेले लगते हैं, जिनमें वहाँ के स्थानीय लोग भी बड़े उत्साह से सम्मिलित होते हैं। दीपावली को प्रकाशोत्सव कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि प्रकाश चाहे भौतिक जगत में हो अथवा हमारे अंतर्मन में, प्रकाश का इस पर्व में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अंतर्मन का प्रकाश तो आनंदित करता ही है, भौतिक जगत का प्रकाश भी कम आनंदित नहीं करता। अंतर्मन का प्रकाश जहाँ सद्वृत्तियों द्वारा उत्पन्न एवं अनुभव किया जा सकता है, वहीं बाह्य जगत के प्रकाश को अनुभव करने के लिए चर्म चक्षुओं का होना अनिवार्य है। चर्म चक्षुओं के अभाव में प्रकाश ही नहीं सारे संसार का सौंदर्य निरर्थक है।

ये संसार बहुत सुंदर व आकर्षक है, लेकिन एक नेत्रविहीन व्यक्ति इस सुंदर व आकर्षक संसार के अद्वितीय व अपरिमित सौंदर्य का आनंद नहीं उठा सकता। इस संसार में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो न केवल दीपावली के प्रकाश का आनंद नहीं उठा सकते, अपितु वे प्रकृति के किसी भी प्रकार के सौंदर्य को देखकर उससे आनंदित नहीं हो सकते। पूरा जीवन ही उनके लिए एक अंधकारमय दीर्घ रात्रि बनकर रह जाता है। यदि ऐसे लोग भी सामान्य लोगों की तरह ही इस सुंदर संसार को देखकर आनंदित हो सकें, तो कितना अच्छा हो! लेकिन ये तभी संभव है जब उनके नेत्रों की ज्योति लौट आए। लेकिन क्या ये संभव है? यदि संभव है, तो कैसे संभव है? हाँ ये संभव है, लेकिन तभी जब कोई अपने नेत्रों की ज्योति उन्हें भेंट कर दे। और इसको संभव बनाने के लिए मात्र एक संकल्प की आवश्यकता है। वह संकल्प है नेत्रदान का संकल्प। हमारे जीवन के बाद हमारी आँखें किसी दूसरे की आँखों को रोशन कर सकें, इसके लिए हमें नेत्रदान करने का संकल्प लेना होगा।

मरने के बाद प्रायः शरीर के अंगों का कोई उपयोग नहीं हो पाता। पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार कर दिया जाता है अथवा उसे दफ़्ना दिया जाता है। प्रायः कहा जाता है कि खाली हाथ आए थे और खाली हाथ जाना है। ये शरीर भी साथ नहीं जाता। ऐसे में इस पार्थिव शरीर का सदुपयोग हो जाए तो क्या बुराई है? आँखें दान करने का संकल्प तो लीजिए, उसी से लगेगा कि मरने के बाद भी शरीर का सदुपयोग हो रहा है और बिलकुल खाली हाथ नहीं जा रहे हैं। जिस दिन ऐसा करेंगे, जीवन अधिक उपयोगी और सार्थक लगने लगेगा। एक बेकार से बेकार अथवा नाकारा से नाकारा व्यक्ति भी नेत्रदान का संकल्प लेकर अपने जीवन को उपयोगी व सार्थक बना सकता है। सोचिए कितनी प्रसन्नता होगी उस व्यक्ति को, जब अपने जीवन की अंधकारमय दीर्घ रात्रि के पश्चात वो पहली बार इस संसार के अपरिमित सौंदर्य को देख पाएगा? क्या ये नेत्रदान करने का संकल्प लेने वाले के लिए कम प्रसन्नता की बात होगी? क्या ये किसी के अंतर्मन को आलोकित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा?

यदि हम मरने के बाद अपनी आँखों को दान करने का संकल्प ले लें, तो हमारे ऊपर तो कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन किसी की सूनी आँखें जीवनभर के लिए रौशन हो जाएँगी, उसका जीवन सुंदर हो जाएगा, इसमें संदेह नहीं। प्रायः जब हमारे पास अधिक भोजन आदि होता है, तो हम उसको खराब होने से पहले किसी न किसी ज़रूरतमंद को दे देते हैं। यदि हम अपने नेत्रों को अंत्येष्टि के दौरान शरीर के साथ नष्ट हो जाने से पूर्व दान कर दें, तो किसी ज़रूरतमंद का जीवन सँवर सकता है। वो भी हमारी ही तरह इस सुंदर संसार के सौंदर्य का आनंद उठा सकेगा। वो अपने आत्मीय जनों को स्पर्श करने के साथ-साथ उन्हें देखने का सुख भी पा सकेगा। क्योंकि जन्म से ही हमारी दो आँखें हैं, अतः उनके अभाव में जो पीड़ा होती है, हम उसे अनुभव नहीं कर सकते। जब जीवन में कभी भी किसी वस्तु अथवा स्थिति के अभाव का अनुभव हो, तो विचार कीजिए कि दो आँखों के अभाव में एक नेत्रहीन व्यक्ति कितनी विवशता, कितनी परवशता का अनुभव करता होगा। उस समय नेत्रदान करने जैसे एक नेक काम को करने का संकल्प लीजिए।

जहाँ तक दान की बात है, हर धर्म में दान के महत्त्व को स्वीकार किया गया है और नेत्रदान से बड़ा दान और क्या होगा? नेत्रदान का संकल्प लेना ही इस बात का प्रमाण है, कि हम सच्चे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति हैं। महर्षि दधीचि ने राक्षसों का संहार करने के लिए अस्त्र बनाने के लिए, अपनी अस्थियों तक को दान कर दिया था। महर्षि दधीचि को अपनी अस्थियों का दान करने के लिए अपने जीवन का त्याग करना पड़ा था। नेत्रदान करने के लिए हमें जीवन का त्याग करने अथवा जीते जी अन्य कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं है। यह तो देहावसान के बाद ही संपन्न होने वाली क्रिया है। हमारे संकल्प के अनुसार, हमारे मरने के बाद हमारी आँखें किसी अन्य को प्रत्यारोपित कर दी जाएँगी। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण क्या हो सकता है, कि हम वो चीज दान कर रहे हैं, जिसको नष्ट हो जाना

है। अन्य किसी भी प्रकार का दान करने के लिए हमें किसी न किसी प्रकार का त्याग करना पड़ता है, लेकिन नेत्रदान करने के लिए हमें किसी भी प्रकार का त्याग नहीं करना पड़ता। नेत्रदान करने के लिए हमें उस चीज़ को देने का संकल्प मात्र करना होता है, जिसका हमारे या हमारे परिवार के लिए कोई मूल्य नहीं। हमारे विवेकपूर्ण संकल्प के कारण, ऐसी वस्तु जो हमारे लिए किसी काम की नहीं, लेकिन किसी अन्य का जीवन उजाले से भर दे, इससे अधिक प्रसन्नता की बात हमारे लिए हो ही नहीं सकती।

यदि हम नेत्रदान का संकल्प लेते हैं तो हमें न केवल इस बात से संतुष्टि मिलेगी व उस संतुष्टि से प्रसन्नता होगी, कि हमारी आँखों से कोई अन्य भी देख सकेगा, अपितु हम अपने देहावसान के उपरांत भी इस सुंदर संसार को देखते रहने का अवसर पा सकेंगे। हमारा नेत्रदान का संकल्प इस सुंदर संसार को देखने की हमारी अवधि को बढ़ा देगा। कहा गया है कि यदि स्वयं प्रसन्न रहना है, तो दूसरों के जीवन में प्रसन्नता लाने का प्रयास कीजिए। जब हमारे चारों और प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे, तो हमारी प्रसन्नता भी निश्चित हो जाएगी। यदि हम दूसरों के जीवन में रौशनी भरने का प्रयास करेंगे, तो हमारा अपना जीवन स्वयं प्रकाशित हो जाएगा। प्रकाशोत्सव के अवसर पर दूसरों के जीवन को प्रकाशित करने का निर्णय लेना सचमुच बहुत बड़ी बात होगी। बाह्य अथवा कृत्रिम प्रकाश हमें केवल उतने समय तक आनंद प्रदान कर सकता है, जितने समय तक हम उसकी रौशनी में रहते हैं, लेकिन किसी दूसरे के जीवन में प्रकाश भर देने का संकल्प, जीवन भर हमारे अपने अंतर्मन को प्रकाशित करता रहेगा।

कुछ लोग कई गलतफ़हमियों के शिकार होते हैं, अतः नेत्रदान करने के लिए आगे नहीं आते। कुछ लोग इस अंधविश्वास के शिकार होते हैं, कि मरने के बाद किसी अंग के अभाव में अंतिम संस्कार करने पर उन्हें मोक्ष नहीं मिलेगा अथवा अगले जन्म में वे उस अंग से विहीन ही रहेंगे। यह अत्यंत भ्रामक सोच है। ऐसा कुछ नहीं होता। मोक्ष तो हमें उसी दिन मिल जाएगा, जिस दिन हम नेत्रदान जैसा महत्त्वपूर्ण व लोकोपयोगी संकल्प ले लेंगे। कहते हैं हमारे कर्मों के अनुसार ही हमें अगला जन्म मिलता है। हम मनुष्य के अतिरिक्त किसी अन्य योनि में भी जन्म ले सकते हैं। मैं पुनर्जन्म में दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं करता, लेकिन नेत्रदान करने पर म्त्यु के उपरांत भी इस सुंदर संसार को अपनी आँखों से देखते रहने का अवसर मिलना, क्या मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म से कम होगा? यदि हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, तो इतना तो अवश्य स्वीकार करेंगे, कि यदि हम नेत्रदान जैसा उत्कृष्ट दान करते हैं तो इस सद्कर्म के फलस्वरूप भी पुनर्जन्म में मनुष्य के रूप में जन्म लेने की संभावना भी अवश्य ही प्रबल हो जाएगी।

बैंकें जमा वृद्धि दर बढ़ाने के लिये सकारात्मक कदम उठायें

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

बीकानेर

इसी अगस्त माह में रिजर्व बैंक गवर्नर ने बैंक जमा में गिरावट पर चिन्ता जताते हुवे कहा कि पिछले कुछ समय से जमा राशि जुटाने की दर, ऋण वृद्धि से पीछे चल रही है, जिससे प्रणाली में संरचनात्मक तरलता सम्बन्धी समस्यायें उत्पन्न हो सकती है। उनकी चिन्ता जताने के बाद वित्त मन्त्री निर्मला सीतारमणजी ने भी केन्द्रीय बैंक निर्देशक मण्डल के साथ बैठक करने के बाद बैंकों की सुस्त जमा वृद्धि पर चिन्ता जताई। उन्होंने कहा कि बैंकों को कुछ अभिनव (इनोवेटिव)और आकर्षक वित्तीय साधनों (पोर्टफोलियो) को लाने के बारे में सोचना चाहिए, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग बैंकों में पैसे जमा करें।

अब जबकि सरकार सभी को आत्म निर्भर होने का मन्त्र दे रही है तब उसी कड़ी में बैंकों को भी अभी से पारदर्शिता के साथ आत्म निर्भर के लिये प्रयासरत हो जाना देश की अर्थव्यवस्था के लिये उचित रहेगा।

आजकल हम देख रहे हैं कि बैंक सरकार से पूँजी मुहैया करने का आये दिन आग्रह करते रहते हैं जबकि उन लोगों को यानि बैंकर्स को चाहिये कि वे स्वयं अपने दम पर पूँजी जुगाड़ करें।

जैसा आप सभी मानेंगे कि आजकल सभी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा से ग्राहकों को लुभाने के लिये आकर्षक प्रस्ताव देने पड रहे हैं, उसी तरह बैंकों को भी पूँजी जूटाने के लिये उत्पाद को आकर्षित बनाने के लिये सोचना तो पडेगा ही।

सरकार भी उनको आत्मनिर्भर बनाने के लिये आवश्यकता अनुसार अपनी तरफ से लगी बन्दिशों में ढ़ील दे ताकि बैंकों की सरकार पर निर्भरता घट सके।

एक तथ्य और भी देखने में आया है कि बैंकों में सावधी जमा घट रही है इसलिये आवश्यक है कि बैंकें ग्राहकों को लुभाने के लिये उन्हें अतिरिक्त सुविधायें प्रदान करे।

यह भी तथ्य है कि बैंकों को इस अतिरिक्त सुविधाओं को लेकर अतिरिक्त खर्चा वहन करना पडेग़ा। इसलिये आवश्यकता है ऐसी योजना (स्कीम) की, ताकि जो खर्च बढ़े वह भार आमदनी बढ़ाकार पूरा किया जा सके। और ऐसा करना ही बुद्धिमानी माना जायेगा।

अब मैं जिस योजना (स्कीम) की बात कर रहा हूँ वह कोई नयी नहीं है बल्कि उसे आकर्षक बना कर प्रचारित कर, बैंकें अपनी तरलता भी बढ़ा सकती हैं और ग्राहकों को आकर्षित भी कर सकती हैं।

मुझे विश्वास है कि यदि इस योजना (स्कीम) को सही तरीके से प्रचारित व लागू किया जाय तो हजारों करोड सावधी जमा में बढ़ोत्तरी सम्भव है।

अब योजना [स्कीम] के बारे में मेरा

सुझाव इस प्रकार है-

- इस योजना [स्कीम] के लिये 10000/- हजार की सावधी जमा अनिवार्य होना चाहिये और 1000/- के गुणक में जमा सुविधा दी जा सकती है।
- सावधी जमा के समय ही आधार, पैन नम्बर व फोटो सभी आवेदकों का लेकर ग्राहकों की पहचान [केवाईसी] करनी भी उचित रहेगी, जो इसके अलावा ऋण खाता और बचत / चालू खाते तीनों के लिये एक साथ हो जायेगी।
- सावधी जमा खाता आरम्भ होते ही अपने आप एक शुन्य जमा [बैलेंस] का खाता व एक ऋण [लोन] खाता चालू हो जायेगा।
- ऋण [लोन] खाते में गिरवी अपने आप सावधी जमा वाली रकम हो जायेगी और उसकी सीमा [लिमिट] सावधी जमा रकम की कम से कम 90% और अधिकतम 95 % तक बैंक अपने आन्तरिक नियमानुसार कर पायेंगें, जिसके चलते बैंकों को विशेष अधिकार प्राप्त रहेगा ।
- अब बचत / चालू खाता तो शुन्य जमा (बैलेंस) वाला है अतः उसको जमाकर्ता अपने साधारण बचत / चालू खाते की तरह इस्तेमाल कर सकें यह सुविधा प्रदान करनी होगी। ताकि बचत खाते में किसी भी प्रकार का लाभांश (डीवीडेन्ड), सेवानिवृत्ति योजना (पेन्शन), वेतन (सैलरी) वगैरह सीधे सीधे भी जमा हो सके और इसी तरह निकासी (विथ्ड्रॉअल) भी हो सके। इसी तरह चालू खाते में चालू खाते वाली सारी सुविधा मिलेगी।
- बचत / चालू खाते को इस्तेमाल के लिये चेक रिजर्व बैंक के नियमानुसार जारी करने की ब्यवस्था हो।
- उसी प्रकार एटीम कार्ड भी निःशुल्क जारी ही नहीं करे बल्कि ग्राहकों को आकर्षित करने के उद्देश्य हेतु उसे सालाना शुल्क से मुक्त रखे। यहाँ कार्ड का प्रयोग रिजर्व बैंक के नियमानुसार हो यह अवश्य ध्यान रखें।
- ध्यान रखें हर तरह के सन्देश [SMS] सेवा भी निःशुल्क रखेंगें तभी ग्रहकों को आकर्षित कर पायेंगे।
- जब भी ग्राहक भुगतान वास्ते चेक जारी करेगा तब सबसे पहले उसके बचत / चालू खाते वाली रकम का उपयोग होगा उसके बाद ऋण [लोन] की सीमा (लिमिट) वाली रकम का।
- जब भी बचत / चालू खाते में जमा आती है तो सबसे पहले लोन वाली रकम की भरपायी बाकी बचत / चालू खाते में शेष [बैलेंस] के रूप में दर्शित होगी।
- अब आइये ब्याज पर, तो बचत खाते में शेष [बैलेंस] पर ब्याज रिजर्व बैंक के नियमानुसार जमा [क्रेडिट] होता रहेगा। उसी प्रकार सावधी जमा पर भी ब्याज तय दर से रिजर्व बैंक के नियमानुसार या तो बचत / चालू खाते में जमा होगा या सावधि जमा वाली रकम बढ़ती रहेगी।
- ऋण [लोन] खाते में जितनी रकम जितने दिनों तक काम में ली गयी उस पर रिजर्व बैंक के नियमानुसार या आपसी तय की गयी शर्त अनुसार जो साधारणतया सावधी जमा ब्याज से कम से कम 1 % और अधिकतम 2% सावधी जमा ब्याज से ज्यादा के हिसाब से सम्बन्धित बचत / चालू खाते में हर माह नामे [डेबिट] कर दी जायेगी।

उपरोक्त योजना (स्कीम) का फायदा समझ ग्राहक आकर्षित होंगे, उनका विश्वास भी बढ़ेगा साथ साथ इस योजना (स्कीम) से सभी पक्ष लाभान्वित भी होंगे इसका भी पूरा यकीन है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि केवल सालाना निःशुल्क एटीम कार्ड का मतलब 100/- के साथ निःशुल्क सन्देश (SMS) का मतलब 60/- = यानि टोटल 160/- की छूट दे कर बैंक कम से कम 10000/- की रकम सावधिजमा के रूप में प्राप्त कर पायेंगे और सभी ग्राहक 10000/- की ही सावधी जमा करेंगे ऐसा तो हो ही नहीं सकता। इसलिये इसके तहत एक अच्छी खासी रकम बैंकों को मिलने लगेगी।

दूसरा तथ्य यह भी है कि आजकल 10000/- साधारण ब्यक्ति भी जमा देने में हिचकिचायेगा नहीं कारण हर एक के पास आप 8000/-, 10000/- का मोबाईल देख पाते हैं। उसके अलावा दुपहिया वाहन, घर में एलईडी टीबी, वातानुकूलित उपकरण [एयरकंडीशनर], कपड़ा धोने की मशीन वगैरह आसान किश्तों में उपलब्ध हो जाते हैं। लिखने का तात्पर्य यह है कि ग्राहक आप से जुडा होगा तो आपको ब्याज की आमदनी करायेगा ही।

उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखते हुये, संक्षेप में बताये गये प्रस्ताव में अभी भी काफी तरलता रखी गयी है। यानि बैंकें चाहे तो अन्य सुविधा भी प्रदान कर यानि हर स्तर पर कुछ और तरह की सुविधा देकर ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकते हैं।

इसी सन्दर्भ में समाचार मिल रहा है कि बैंकें बांड के जरिये इस वित्त वर्ष में 1.3 लाख करोड़ रूपये जुटाने की तैयारी कर रही हैं। जबकि मुझे विश्वास है की यदि सभी बैंक मिलकर जन-धन योजना के अन्तर्गत खोले गये पचास करोड़ खाते वालों को, इस योजना [स्कीम] को रोचक तरीके से समझाकर लोकप्रिय बना पाने में सक्षम होते हैं तो कम समय में ही दस करोड़ से ज्यादा खाते भारत जैसे देश में आसानी से प्राप्त कर सकते हैं ।

आशा है सभी बैंकर (इसमें रिजर्व बैंक भी) ही नहीं बैंक ग्राहक भी बदले माहौल में उपरोक्त योजना (स्कीम) पर गहनता से सोचेंगे, अपनायेंगे ताकि सरकार पर बैंकों की निर्भरता में कमी लायी जा सके।

रास्ते आवाज़ देते हैं , सफ़र जारी रखो

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी
लखनऊ
लेखक आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

आत्मकथा की पिछली कड़ी में बात कहाँ छूटी थी, याद नहीं। ... शायद मेरी ज़िंदगी मे आए खत-ओ-किताबत पर। सच मानिए कागज के उन ढाई आखरों ने न सिर्फ़ उस समय जब मैं संकट में रहा, तनाव में रहा दिशाहीन सा रहा तब तब, समय-समय पर उन पत्रों ने मेरी ज़िंदगी को सही दिशा दिखाई है। इसीलिए इस डिजिटल युग में भी वे ढाई आखर मेरे लिए अपना महत्व बनाए हुए हैं। लेकिन पत्रों का आपके लिए कितना महत्व है, पता नहीं।

ज़िंदगी क्या है? पानी का बुलबुला? लेखक द्वारा लिखी जा रही किसी कहानी का कोई बनता -बिगड़ता हुआ किस्सा? किसी सागर की तरह उठती गिरती लहरें? या, कुदरत का दिया हुआ अनमोल उपहार? ज़िंदगी के बारे में कुछ शब्दों मे लिखना या समझना नामुमकिन है। किसी ने ठीक ही कहा है कि किताब से सीखो तो नींद आती है लेकिन ज़िंदगी जब सिखाती है तो नींद उड़ जाती है। कोई कहता है कि ज़िंदगी महज एक भ्रम है। मुझे ऐसा लगता है कि यह (जीवन) एक सच है लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। इतना अवश्य ही है कि यह जीवन कुदरत या प्रकृति का दिया हुआ अनमोल उपहार है। यहाँ मैं "कुदरत" का मतलब उस अदृश्य किन्तु अवश्य ही होने वाली सत्ता से रखता हूँ जो कण-कण में विद्यमान है। जिसे विज्ञान भी आज तक चुनौती नहीं दे सका है और शायद दे भी नहीं पाएगा। सवाल यह उठता है कि फिर इस ज़िंदगी के लिए इतनी आपा- धापी क्यों? झूठ -फरेब क्यों? अकूत धन संचय क्यों?.. और इस सवाल का उत्तर आज तक कोई नहीं दे सका है। मैं भी नहीं दे पाऊँगा। बस, ज़िंदगी मिली है तो जिये जा रहा हूँ। इस अमृत समझ कर इसके एक एक बूंद को पिए जा रहा हूँ। रुला रही है तो रो रहा हूँ, हंसा रही है तो हंस रहा हूँ ,गुनगुना रही है तो बस गुनगुनाता ही चला जा रहा हूँ।

आत्मकथा की पिछली कड़ी में बात कहाँ छूटी थी, याद नहीं। ... शायद मेरी ज़िंदगी मे आए खत-ओ-किताबत पर। सच मानिए कागज के उन ढाई आखरों ने न सिर्फ़ उस समय जब मैं संकट में रहा, तनाव में रहा दिशाहीन सा रहा तब तब, समय-समय पर उन पत्रों ने मेरी ज़िंदगी को सही दिशा दिखाई है। इसीलिए इस डिजिटल युग में भी वे ढाई आखर मेरे लिए अपना महत्व बनाए हुए हैं। लेकिन पत्रों का आपके लिए कितना महत्व है, पता नहीं।

वर्ष 2003 में लखनऊ आकर अब मैं धीरे-धीरे लखनऊ का होने लगा था। गोरखपुर क्रमशः धीरे-धीरे पीछे छूटता जा रहा था। लखनऊ की चकाचौंध प्रथम दृष्टया तो अच्छी लगी लेकिन आगे चल कर मैने यह पाया कि जो बात गोरखपुर में है,गोरखपुर की मिट्टी और संस्कृति में है वह यहाँ, लखनऊ में नहीं। सच यह है कि कल तक जिस लखनऊ को लोग जानते मानते रहे हैं आज का लखनऊ वैसा नहीं रहा। इस शहर ने अपने अतीत पर कालिख पोत रखा है और इस शहर पर आधुनिकता के अच्छे बुरे सभी रंग चढ़ चुके हैं। "पहले आप" का जुआमला अब किताबों के पन्नों तक सिमट कर रह गया है। असलियत यह है कि अगर मौका मिल जाए तो लखनऊ के लोग पहले मैं को साकार

करने के लिए आपके ऊपर चढ़ कर अपना मतलब साध लेंगे। अगर आपसे मतलब नहीं है तो वे आपको देख कर भी अनदेखा कर जाएंगे,कन्नी काट लेंगे। वहीं दूसरी ओर गोरखपुर? अगर आप कुछ दिन भी वहाँ रहे हों तो गोरखपुर के लोग तो अब भी आपको बेवजह रोक कर सलाम-दुआ और हाल चाल पूछा करते हैं। इसीलिए मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि आज भी अपनी मिट्टी और अपनी शालीन संस्कृति और संस्कार से जुड़े हुए हैं बहले ही पश्चिम के लोग उनको गोरखपुरिया कह कर उन पर व्यंग्य कसते हैं! इस शहर ने खामोशी से आधुनिकता को अपने जीवन में आने दिया है लेकिन मुखर होकर इसने अपनी परंपरा और संस्कृति को जीवंतता दे रखी है।

साहित्य में फ़िराक़ इसकी थाती हैं, मुंशी प्रेमचंद इसके पौरुष ,वीर बहादुर सिंह, महावीर प्रसाद और अब योगी आदित्य नाथ इसके राजनीतिक बाहु-बाल, पंडित सुरति नारायण मणि त्रिपाठी और सुरजीत सिंह मजीठिया इस शहर को उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले अनमोल रत्न और हठ योग (योगी गोरक्षनाथ), शांति मार्ग(बौद्ध) और समरसता और फक्कड़पन (कबीर दास) देने वाले इस शहर की राप्ती नदी और रामगढ़ ताल के अथाह जल ने इसकी आँख को पानी दे रखा है। शायर राहत इन्दौरी ने शायद इसी शहर के लिए ठीक ही लिखा हो :

"आँख में पानी रखो,होंठों पे चिंगारी रखो,
जिंदा रहना है तो तरक़ीबें बहुत सारी रखो।
एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तों ,
दोस्ताना ज़िंदगी से मौत से यारी रखो।
राह के पत्थर से बढ़ के, कुछ नहीं हैं मंजिलें,
रास्ते आवाज़ देते हैं , सफ़र जारी रखो।"

शहर तो शहर, उन दिनों लखनऊ के रेडियो का तो और भी बुरा हाल था। अव्वल तो यहाँ का रेडियो किसी नए का स्वागत नहीं करता। उसे लगभग दुत्कारता है कि वह हतोत्साहित होकर भाग जाए।

दूसरे, अगर अगला आदमी "बेहया" (अच्छे संदर्भ में) निकला और डटा रहा तो उसको भरपूर "इग्नोर" किया जाता है। लखनऊ में दो बार हुई पोस्टिंग के दौरान मेरे साथ भी यही सब कुछ घटित हुआ, होता ही रहा, आज भी होता चला आ रहा है। वर्ष 1991 रहा या वर्ष 2003, मुझे ज्वाइन कराने, विभाग आबंटित करने, औपचारिक और आवश्यक सुविधाएं देने या मेरे किये गए योगदान को स्वीकार करने में लखनऊ रेडियो उदासीन बना रहा। लेकिन मैं भी हार नहीं मानने वाला निकला और मैंने भी शरीर और मन से बेहयापन निकाल कर रेडियो में कुछ ऐसे काम किये कि ढेर सारी उपलब्धियां अपने खाते में जमा गई हैं। रेडियो वालों सुन लो, आप बेशक मुझे इग्नोर कर सकते हो लेकिन मेरे ऑन रिकार्ड काम को तो नहीं?

मुझे याद आते हैं मेरे द्वारा बनाए गए कई कई एपिसोड के रेडियो कार्यक्रम। मुझे याद आते हैं रेडियो के संगीत विभाग के एडमिनिस्ट्रेशन को देखते हुए बिगड़ैल कलाकारों को सुधारने के उद्देश्य से उन पर बिना किसी संकोच या डर के चलाए गए चाबुक। इसी के चलते एक टॉप ग्रेड के बदतमीज़ वादक कलाकार को तो रिटायरमेंट के बाद लगभग पाँच लाख की चपत भी लगी थी। या केंद्र के वर्षों सुरक्षा अधिकारी बने रहने के रुप में किये गए कार्य और निर्णय। एक बार तो उप महानिदेशक पद पर बैठे और उन दिनी केंद्र निदेशक की अनुपस्थिति में केंद्र का भी काम देख रहे एक अधिकारी से मकान बनाने वाले उनके ठीकेदार को उनके द्वारा रोक रखे गए लाखों रुपये के पेमेंट भी मैंने अपने कार्य चातुर्य से दिलवाए थे। सुनना चाहेंगे वह रोचक किस्सा?

(क्रमशः)

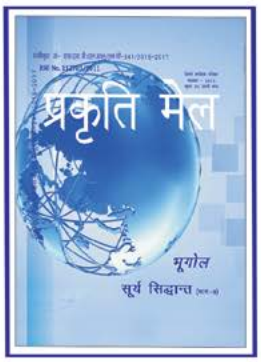

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता________

________ राज्य________ पिन________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- जिस प्रकार पैरों की बनावट के अनुसार सभी प्राणियों के मार्ग अलग-अलग होते हैं जिस पर वही सुगमतानुसार चल पाता है उसी तरह मानव की परिस्थितियां ही उसका प्राकृतिक मार्ग है जिससे गुजर कर ही वह अपने वास्तविक गन्तव्य तक पहुंच पाता है। अपने अनुसार मार्ग का चुनाव करके मानव भटक जाता है और लक्ष्य से विमुख हो जाता है।

- प्राकृतिक वातावरण के अनुसार व्यक्ति की परिभाषा परिवर्तनशील होती है। अतः अपनी परिभाषा को बन्धन मुक्त रखना चाहिए।

- क्रिया प्रतिक्रिया का नियम है, पर मनुष्य प्रतिक्रिया अपने अनुसार सुनिश्चित कर लेता है अर्थात् कोई भी कार्य करने से पूर्व उसका फल निर्धारित कर लेता है। यही उसके दुःख का कारण है।

- प्राकृतिक पद्धति में पीड़ा और दर्द का कोई विधान नहीं है। व्यक्ति अपनी सोच और कल्पनाओं में जो फल अपने लिए निर्धारित कर लेता है उसकी पूर्ति न होने पर उसे दर्द या पीड़ा होती है।

- जिस व्यक्ति का जो भाव होता है उसी द्वारा व्यक्त होने पर ही वह भाव प्रभावशाली होता है। किसी दूसरे के भाव को अन्य व्यक्ति के द्वारा व्यक्त करने पर रिवाल्वर की गोली बन्दूक से चलाने जैसा होता है। जिसका कोई प्रभाव नहीं रह जाता।

- जिस तरह पानी चलते-चलते अपने मार्ग की बाधा को पार करते हुए सागर तक पहुंच जाता है उसी तरह मानव भी अपने को सरल शान्त कर छोड़ दे तो बहते हुए अपने मार्ग की स्थितियों से मिलने वाले एहसास की गन्ध छोड़ते हुए जहां से आया है वहीं पहुंच जाएगा।

- हर चीज प्राकृतिक है जो अपने समय पर स्वतः हो जायेगी।

- निर्गन्ध प्रकाश वह विज्ञान है जो गुण गन्ध के अनुरूप उसकी भौगोलिकता का विकास करता है।

- अप्राकृतिक इच्छा से दुर्गन्ध बनने लगती है जिससे राक्षसी गुण बढ़ने लगता है जो धर्म अधर्म के युद्ध की जगह स्वाहित युद्ध शुरू कर देता है।

- सवाल तो समय की वह वास्तविक लकीर है जिससे कोई सजीव निर्जीव अवस्था जीव रूप में बन्द होती है जिसका प्राकृतिक विकास उसका उत्तर है जिसके परिणाम से सृष्टि सृजन होता है।

- सवाल मानव की चिन्तनशीलता से उत्पन्न होता है प्रकृति की कोई क्रिया जब मानव की इच्छाओं के विपरीत होती है तो वहीं पर उसके अन्दर सवाल उत्पन्न हो जाता है।

एहसास का दर्पण सुख-दुख

अशोक मानव

" स्वभुगोल के स्वाभाविक हरकत पर नियंत्रण लगाने और बाहय ज्ञान के चश्मे से अपने आप को देखने से उत्पन्न होने वाली तरंग सुख दुःख की अनुभूति कराती है यदि नियंत्रण और नज़र बदल लें तो यही सुखद हो जायेगा। "

सुख-दुख बाहर जगत के खेल का आंतरिक जगत की अनुभूति है। वाहय जगत की कोई भी घटना आंतरिक जगत को तब तक प्रभावित नहीं कर पाती है जब तक व्यक्ति घटना को महत्व देकर उसे अपने आप से जोड़ते हुए आंतरिक मंथन नहीं शुरू करता है। सुख.दुख भी एक चित्र खेल है, जो एक ही घटना पर सुख भी देता है और दुख भी देता है। यदि अपने विरोधी के यहां कोई परेशानियां दुर्घटना होती है तो व्यक्ति सुख की अनुभूति करने लगता है और वहीं घटना जब अपने ऊपर घटने लगती है तो व्यक्ति दुखी होने लगता है। घटना एक सिर्फ सोचने मात्र से सुख-दुख की बदल जाती है। यदि घटना ही सुख-दुख होती है तो उसका परिणाम एक ही होना चाहिए दो नहीं, घटना तो प्रकृति की परिस्थिति है जो जीव पदार्थ द्वारा छोड़ी गई गुणात्मक ऊर्जा का योग है। जो समय बनकर अवश्य घटित होता है। जिसे कोई रोक नहीं सकता है। वह तो जिसका समय पूरा हो जाता है उसे दूर करता है जिससे नया निर्माण शुरू होता है। घटनाएं तो गुणात्मक अनुभूति मात्र से घटित होती हैं इसका प्राकृतिक योग सिर्फ निर्माण होता है। दुर्घटना है तो गलत भावनाओं का गुण योग होता है जो बनने के बाद कहीं ना कहीं तो निकलता ही है। वही उसे मिटाने का प्रकृति का वैज्ञानिक तरीका होता है। मानव ऐसी दुर्घटनाएं बनाने वाले अवगुण को रोक सकता है। गुण बनने के बाद घटना को नहीं रोका जा सकता है। घटना तो प्रकृति की घटना है उसे व्यक्ति अपने लाभ-हानि के आधार पर घटना और दुर्घटना बताता है। प्राकृतिक घटनाएं ही प्राकृतिक निर्माण का सही योग है जो गुणों की अनुभूति से जुड़ती हैं। मानव उसे जोड़ने और तोड़ने की क्रिया सामान्य मानसिक ज्ञान से करता है जो सही नहीं है। मानव द्वारा की जा रही यही गलती दुर्घटना में परिवर्तित हो जाती है। जो प्रकृति रूप से जुड़ती है वह क्रिया गुण मिलान से गतिमान होती है वह घटना हो सकती है दुर्घटना नहीं। उस वाह्य घटना की क्रिया प्रकृति निर्माण की आवश्यकता है। व्यक्ति जब उसे अपने आप से जोड़ता है तो सुख-दुख की अनुभूति उसे जोड़ने और छोड़ने का मात्र प्राकृतिक संकेत है जो उससे लाभ हानि का संकेत करता है। जिससे व्यक्ति सुखद अनुभूति को अपने से जोड़कर प्रकृति की रचना को सुखद बनाता है। जीवन में सुखद और दुखद अनुभूति सिर्फ जोड़ने और छोड़ने के लिए संकेत हैं ना की सुखद में मोह और दुखद में घृणा पैदा करने के लिए। क्योंकि प्रकृति में जीवन एक निर्माण के लिए होता है जैसे-जैसे उसकी आवश्यकता की

साधन का योगदान खत्म होता जाता है वैसे-वैसे वह छूटते जाते हैं। प्रकृति में इसी प्रकार आवश्यकता खत्म होने पर सब कुछ एक दिन छूट जाता है, जुड़ने वाला वस्तु, विषय, पदार्थ जब निर्माण की आवश्यकता होती है तब तक जुड़े रहने पर सुखद अनुभूति देता है और जब निर्माण में उसकी आवश्यकता खत्म हो जाती है तो दुखद अनुभूति देने लगता है जिससे वह छूट जाता है पर यदि सुखद अनुभूति में उसके प्रति मुंह पैदा हो जाता है तो वह छूटते समय और छूटने के बाद भी दुख देता है और दुखद अनुभूति में घृणा होने पर नकारात्मकता का जन्म होता है, और दूर होने के बाद भी दुख नहीं खत्म होने देता है। छूटना और जुड़ना तो प्रकृति की आवश्यकता है जिसके बिना निर्माण संभव ही नहीं है।

दिन-रात, पाप-पुण्य, सत्य-सत्य, धर्म-अधर्म, लाभ-हानि, घटना-दुर्घटना, जीवन-मृत्यु, सोच-असोच औतर सुख-दुख आदि-आदि प्रकृति निर्माण के दो किनारे हैं जो निर्माण के लिए एक दूसरे के सहयोगी हैं। बगैर उनके प्राकृतिक निर्माण संभव नहीं है। प्रकृति में जीव उत्पत्ति जलवायु विकास से होती है। जब तक जलवायु पूर्णतः को नहीं प्राप्त होती तब तक जीव जीवन नहीं धारण करता है। हर जीव का विकास अपनी निश्चित जलवायु में ही होता है। जीव में विकास और गुण निर्माण की अवस्था बीज (आत्मिक संरचना) में मौजूद होता है, उसी के अनुरूप जलवायु में उसकी उत्पत्ति होती है, जीव के साथ परिस्थिति या जीव विकास की आवश्यकता होती है। जिस गुण को पैदा करने के लिए जीव की उत्पत्ति होती है उसके अनुसार जिस आहार और जलवायु रूपी परिस्थितियां आवश्यक होती है उसी से प्रकृति जीव को गुजारती है। उसे परेशान करना प्रकृति की नियत नहीं होती है। यदि ऐसा होता, तो वह उत्पत्ति क्यों करती? यह गूढ़ रहस्य है किस भोजन और परिस्थिति में व्यक्ति के अंदर किस गुण का विकास होगा। इसे प्रकृति ही जानती है। इसलिए परिस्थितियों प्रकृति की

वैज्ञानिकता है जिससे जीव विकास की पूर्णतः तक पहुंच पाता है इसी गूढ़ता में प्रकृति की न्याय प्रणाली भी छिपी होती है। अव्यवस्था या परिस्थितियों (जिसमें जीव, पदार्थ, विषय) का छूटना और जुड़ना होता है। यह प्रकृति न्याय प्रणाली की क्रिया है इसमें प्रकृति का उद्देश्य दंड देकर चोट पहुंचाना, दुखी करना नहीं है बल्कि इसी क्रिया से जीव की गलती या अपराध के कारण उत्पन्न हुए अवगुण को खत्म कर उसे गुणात्मक बनाने का मार्ग है। जिसे पूरा करना प्रकृति की आवश्यकता है। यदि ऐसा ना हो तो अवगुण इतना बढ़ जाएगा जिसमें सृष्टि अवरुद्ध हो जाएगी। परिस्थितियां न्याय प्रणाली और विकास की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया से जीव मुक्ति की ओर क्रमिक गति से विकास करते हुए पहुंच पाता है। जब इसके विपरीत अपने अनुसार व्यक्ति निर्धारित करके जीवन जीना चाहता है तो जो रुकावट आती है वही दुख का कारण बनती है। जो परिस्थिति जीव निर्माण के लिए आवश्यक है उसके विपरीत चलने पर भी व्यक्ति उसे प्राप्त नहीं कर पता है। वह सिर्फ दुख का कारण बन जाती है। संवेदना सुख-दुख की अनुभूति इसलिए करती है जिससे व्यक्ति उसे जीवन में धारण कर सके। इसके अतिरिक्त यदि सुख-दुख ज्यादा जीवन में रुक पाता है तो वह सोने की प्रक्रिया से होता है। जब व्यक्ति परिस्थितियों पर प्रश्न चिन्ह लगाकर कहीं ना कहीं किसी को दोष लगाकर सोचने की क्रिया करता है तो उसका दुख बढ़ता जाता है। नकारात्मकता को जन्म देता है और खुद को दुखी करता है। जब व्यक्ति वर्तमान के अनुभूति लेते हुए सुखद पहलू को जोडजा जाता है और सकारात्मक सोच को बनाए रखता है तो सुख की अनुभूति करता है। जैसी सोच बनाई जाती है वैसी अनुभूति व्यक्ति को होती है। अपनी सोच से सकारात्मक होकर व्यक्ति सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह निरंतर करते हुए सुख की अनुभूति सदैव कर सकता है। यही उसके दुख के अंत का सर्वोत्तम उपाय है। वरना दुखी और नकारात्मक सोच में प्रकृति भी न्याय प्रणाली की दंडात्मक कार्यवाही से गुजरने में परिस्थितियां उसका पीछा कभी नहीं छोड़ती हैं और वह सदैव दुखी बना रहता है। जीव द्वारा छोड़ा गया गुण अपनी उत्पत्ति की जलवायु बनाकर समय बन जाता है जो प्रकृति की घटना बनाकर परिस्थितियों तैयार करता है जो प्रकृति के अनुसार चलता रहता है इसे कोई नहीं बदल सकता है। इसमे समन्वय स्थापित करके व्यक्ति अपने जीवन को सुखद बना सकता है। वरना जीवन तो जीना ही है चाहे हंस के जियो या रो कर।

इस प्रकार दुख सुख अनुभूति मात्र है जो अपने सोच से उत्पन्न होती है, परिस्थितियां तो प्रकृति निर्माण की आवश्यकता है जो गुण विशेष से स्वतः पैदा हो जाती हैं।

प्रश्न हमारे उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : क्या इच्छाओ से पैदा हुई अतृप्त अवस्थाएं प्रकृति में हमेशा मौजूद होती है या नष्ट हो जाती है?

उत्तर : अशान्त अवस्था प्रकृति में रूक नही पाती प्रकृति अशान्त अवस्था को निरन्तित करके बीज रूप में सुरक्षित कर लेती है फिर धीरे-धीरे उसे पूर्ण रूप से सिद्धांत करयने लगती है। इच्छाओ से पैदा हुई अतृप्त अवस्थाओं को सिद्धान्त करने के लिए ब्रह्माण्डीय मंथन से गुजर कर प्रकृति उन रसायनों का मेल कराती रहती है जिनसे इस अतृप्त अवस्था का पूर्ण रूपेण सिद्धांत हो सकता है।

प्रश्न : शून्य अवस्था में होने वाला गुजंन क्या गुंजन पर बाह्य ध्वनियों का प्रयत्न पड़ता है?

उत्तर : कोई अवस्था जब शून्य अवस्था में हो जाती है तो उसकी अपनी खुद की गुंजन अवस्था में जाती है और गुंजन प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए जो बाह्य पदार्थ उसमें क्रियाशील होना चाहता है वह नष्ट हो जाता है। जो भी बाह्य अवस्थाए उस गुंजन की अवस्था से टकराती है वही उसके लिए ईधन का काम करती है।

गुंजन की स्थिति आंतरिक ध्वनि होती है जो कहीं सुनाई नही देता जो हमे बाह्य जगत में ध्वनियां सुनाई देती है वो वास्तव में बाह्य स्थितियों से टकराने से होने वाले घर्षण की स्थिति है।

प्रश्न : क्या भविष्य देखने की जो विधा बनाई गई है इसमे भविष्य देखने वालो की अपनी ऊर्जा काम करती है?

उत्तर : जिस विधा से कोई जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है उस विधा का प्रथम प्रतिपादन करने वाले की सूक्ष्म ऊर्जा ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहती है जो कि इस विधा का विकास करती रहती है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

अधीरता भी एक विकार है

तारादत्त भट्ट
लखनऊ

अधीरता आधारित उतावलापन बेसब्री तुरंत प्रतिक्रिया उत्तेजना हड़बड़ी आदि पर्यायवाची शब्द हैं। वर्तमान समय अधीनता मनुष्य में संक्रमण की तरह फैलती जा रही है हर इंसान जल्दी में है विज्ञान की तरक्की ने मनुष्य को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया है। कि उसमें लाल साइन इच्छाएं जग गई हैं और सुख साधनों पर निर्भर होने से अधीरता बढ़ गई है वह सब कुछ घंटे में नहीं सैकड़ो में का लेना चाहता है अधीरता नई धुन उसे चने की किए जा रहा है।

आज का इंसान सिर्फ एक ही बात सुनना चाहता है कि बिना मेहनत के कुछ ही दिनों में एक छोटे से विचार से विश्व के धनी व्यक्तियों की सूची में कैसे शामिल हुआ जाए। लंबा इंतजार कोई नहीं करना चाहता इंसान को सब्र कहां है आजकल कंप्यूटर या मोबाइल में किसी को भी मेल भेजने पर जवाब तुरंत आते हैं। इससे व्यक्तियों के मन पर एक छाप सी छप जाती है कि हमें सब कुछ तुरंत चाहिए। टेक्नोलॉजी के इस युग में तकरीबन हर काम चुटकी में हो रहा है। कोई इंतजार नहीं कोई कतर नहीं इस पॉलिसी पर लाखों कंपनियां ग्राहकों को लुभा रही हैं।

खोखले दावे

इस उतावलेपन अर्थात अधीरता का लोग इतना फायदा उठाते हैं कि कई प्रकार के विज्ञापन आते हैं कि 15 दिनों में कोई भी भाषा सीखने में निपुण हो सकते हैं। एक महीने में किसी काल में पारंगत बन सकते हैं किसी भी प्रकार की बीमारी का इलाज कुछ ही दिनों में हो सकता है। 7 से 10 दिन में कई किलो वजन कम करने की गारंटी रहते हैं लेकिन सोचने की बात है जो वजन कई सालों में बड़ा है वह कुछ दिनों में किसी वस्तु के इस्तेमाल से कम कैसे हो सकता है परंतु अधीर मनुष्य कहां विचार करता है।

अधीरता के लक्षण

आज की युवा पीढ़ी कितनी उतावली रहती है इससे कई उदाहरण है। कंप्यूटर लैपटॉप या मोबाइल धीरे चल तो उतावलापन कि वह इतना धीरे क्यों चल रहा है। अगर सुनने वाला फोन मिस कर दे तो उसकी आलोचना करना, ड्राइव करते समय कोई साइड ना दे तो जोरों से हॉर्न बजाना, या तो ओवरटेक कर झगड़ा करना, मारपीट करना, बिना किसी कार्य के जगह-जगह घूमना, यह सब अधीरता के लक्षण हैं।

अधीरता का दुष्परिणाम

हम अपनी योग्यताओं का अति उच्च आकलन कर रहे हैं हम आत्म मुकुंद की पराकाष्ठा पर विराजमान है तुरंत परिणाम निकले यह कामना शॉर्टकट सोच अपने को प्रेरित करती है और धैर्य को ठुकरा देती है के लिए हम हर कीमत चुकाने को तैयार रहते हैं। इसके बहुत नुकसान हैं परिणाम तुरंत ना मिले तो मन में कुंठा बढ़ जाती है जो ताकत किसी अच्छे कार्य के लिए काम आ सकती थी वह व्यर्थ चली जाती है।

अधीरता रिश्तो को भी बिगाड़ देती है। लोग अधीरता करते हैं। अधीर व्यक्ति में नकारात्मक विचार पनपना लगते हैं और कामयाबी से कोसों दूर हो जाता है उसे जीवन का आनंद नहीं आता। व्यग्रता,

तनाव, चिड़चिड़ापन, यदि उसमें हमेशा बना रहे जिससे हाई ब्लड प्रेशर हृदय रोग मध्य में आदि का खतरा बना रहता है स्ट्रेस हारमोंस बढ़ने से शरीर पर दोगुनी दुष्प्रभाव पड़ते हैं अधीरता से कैसे बचा जाए।

जीवन में काम का बोझ बहुत है सारे काम एक साथ नहीं किया जा सकते इसलिए एक-एक काम जरूरत अनुसार पूरा करें कोई वस्तु जैसे गाड़ी दुकान मकान फ्रिज एक खरीदना है तो थोड़ा सोचें उतावला पन्ना दिखाएं धीरज रखने का प्रयास करें अहंकार में आकर कोई गलत कदम ना उठाएं समय का सदुपयोग करें भगवान पर भरोसा रखें सोचें करण कारवां हर परमात्मा है तो मैं निर्मित हूं अर्थात अपने के ट्रस्ट समझे कोई भी कार्य करने से पहले उसे परमात्मा के हवाले कर दें बुद्धिमानों के बुद्धिमान परमात्मा पिता स्वयं हमारे कार्य को सफल बना देंगे और हम हल्कापन महसूस करेंगे।

वयस्कजन और मानसिक स्वास्थ्य

इरा त्रिपाठी

मनो-सामाजिक सलाहकार, जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, वाराणसी

नशे का शिकार = लगभग सभी खासकर तंबाकू सेवन,

ये आंकड़े देखे –

उदासी = 5 से 7%

मनोदंश = 5 से 7%

चिंता = 3.8%

ये हमारे एक विशेष वर्ग के है जिन्हे हम वृद्ध वयस्क कहते है। पिछले महीने वृद्धावस्था में होने वाली मानसिक समस्याओं पर मानसिक स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं ने 21 सितंबर को वृद्ध जन् मानसिक स्वास्थ्य दिवस मनाया इसके अलावा 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय वयस्क दिवस राष्ट्रीय स्तर पर सभी वृद्ध आश्रम में मनाया गया। आज इस विषय पर गंभीरता से सोचना अति आवश्यक इसलिए भी हो जाता है, क्योंकि कि वर्ष 2030 तक विश्व में प्रत्येक 6 में से एक व्यक्ति 60 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ष का होगा और हम सब जानते हैं कि वृद्ध अवस्था में हमारी ऊर्जा निम्नतम रहती है, रोग से लड़ने की क्षमता भी चरमरा चुकी होती है। अतः हम यह कह सकते हैं कि आने वाले समय के साथ ही शारीरिक और मानसिक समस्याओं की शुरुआत हो जाएगी। विभिन्न आंकड़े बताते हैं कि 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के लगभग 14 से 15% वयस्क मानसिक विकार से ग्रसित रहते हैं खासकर अवसाद और चिंता से GHI (ग्लोबल हंगर इन्डेक्स) 2019 से सामने आया है कि लगभग एक चौथाई आत्महत्या से मौतें लगभग (27.9%)बेसिक स्तर पर 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के लोगों की है और इसका सीधा संबंध वृद्धावस्था के समय वयस्कों को नजर अंदाज करना है, उनको कम महत्वपूर्ण समझना, उनका परिवार पर बोझ मानना है और इसके साथ शारीरिक बाध्यता के कारण सबसे ज्यादा तो इलाज के उपरांत भी उनके सुधार का प्रतिशत का कमतर होना है।

हालांकि सिक्के का दूसरा पहलू कुछ और ही है। आज अनेकों वृद्ध वयस्क अपने अनुभव एवं पkरखी तरीके के गुण से परिवार और समुदाय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और जीवन के विभिन्न क्षेत्र जैसे आर्थिक,पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर अपना विशेष योगदान दे हैं। कई वृद्ध वयस्क अपनी सेहत का ख्याल रखते हुए समाज सेवा एवं स्वयंसेवक के रूप में भी राष्ट्र के विकास में अपना सहयोग देते हैं। ऐसे कई वयस्क मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा होने के बावजूद भी अपने जीवन से संतुष्ट हैं फिर चाहे उन्हें कितनी भी शारीरिक अथवा मानसिक बाधाएं आए।

हम फिर भी पुनः यह कहना चाहेंगे कि हमारे वृद्ध वयस्क वैश्विक तौर पर विभिन्न प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से ग्रसित हो रहे हैं। इसके विभिन्न पहलू सामने आते हैं जैसे अपने अभी तक के जीवन काल में मिले विशिष्ट तनाव के संचयी प्रभाव, अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते-करते अपनी आंतरिक क्षमताओं में महत्वपूर्ण कमियां का आ जाना,उनकh शारीरिक चिंताये, वृद्धावस्था में वयस्कों के मनोवैज्ञानिक संकट का कारण बनती है और सेवानिवृत्ति के उपरांत आर्थिक संकट हर क्षेत्र में उनको झकझोर कर रख देता है।

सामाजिक अलगाव और अकेलेपन के साथ-साथ वृद्ध लोगों के साथ दुर्व्यवहार भी उनकh मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों के जोखिम का प्रमुख कारण है खासकर अपने सगे संबंधियों अथवा देखभाल करने वाले व्यक्तियों द्वारा दी गई मानसिक एवं शारीरिक उपेक्षा।

वृद्ध वयस्कों को अवसाद और चिंता का अधिक जोखिम उनके रहने की परिस्थितियों,

स्थितियां और शारीरिक बाधाओं जैसे पुरानी बीमारियां हृदय रोग, उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप, हड्डियों के रोग, दांतों से संबंधित समस्याएं, तंत्रिका संबंधी समस्याएं या युवावस्था से चली आ रही नशे की समस्याएं भी अवसाद एवं चिंता का मुख्य कारण है।

उम्र बढ़ाने के साथ-साथ हमारे मस्तिष्क की संरचना में बहुत अधिक बदल जाता है, जिससे हमारी याददाश्त, सोचने समझने और पहचान करने की क्षमता, पर भी असर पड़ने लगता है। ऐसी स्थिति में वृद्ध वयस्कों को मनोदंश या मानो भ्रम की समस्याएं होने लगती हैं और जिसके कारण वो अपने रोजमर्रा की जिम्मेदारियां को भी पूरी तरह से कर पाने में असमर्थ हो जाते हैं और धीरे-धीरे अपने सभी कार्यों के लिए रिश्तेदारों या सगे संबंधियों पर आश्रित होने लग जाते हैं। अतः अपने जीवन में अतिव्यस्त पारिवारिक सदस्यों के लिए यह बोझिल से बनते चले जाते हैं। जो कि समय के साथ उनकी उपेक्षा का कारण बन जाते हैं,जिससे वृद्ध वयस्कों में धीरे धीरे हीन भावना, चिड़चिड़ापन, उदासी, चिंता जैसी लक्षण उत्पन्न होने लग जाते हैं।

अगर हम थोड़ा पुराने समय में जाए जहां परिवार का आकार बड़ा होने के कारण वृद्ध जन अपनी पर पीढ़ी द्वारा देखभाल कर लिए जाते थे, परंतु आज ये भी संभव नहीं हो पा रहा है, जिस प्रकार परिवार छोटा होता जा रहा है लोग परिवार में मात्र एक या दो बच्चे ही पैदा कर रहे हैं, कुछ कुछ परिवार में तो देखने में आया है की विशेष परिवार एक भी पुत्र या पुत्री को जन्म नहीं देते हैं । ऐसे में वृद्ध वयस्को का वह साथ भी छूटता जा रहा है जो कि अवसाद एवं एकाकीपन का जनक होता जा रहा है ।

एक पहलू ये भी की सगे संबंधियों की अति व्यस्तता वयस्कों की नियमित शारीरिक और मानसिक जांच न हो पाने का सबसे बड़ा कारण हो रहा है, जिससे कभी-कभी वयस्क अपने रोग या परेशानी किसh को संकोचवश नहीं बता पाते या फिर उनको यह भी डर रहता है कि यदि हमने अपनी परेशानियां बता दी तो कई प्रकार की सामाजिक या पारिवारिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ सकता है और डर से छुपा लेने के कारण यह रोग अति गंभीर और भयावाह हो जाता है, जिससे कई प्रकार की समस्याओं का सामना दोनों पक्ष को झेलना पड़ जाता है।

अब सबसे बड़ा प्रश्न या उठता है कि अपने समाज के इस महत्वपूर्ण वृद्ध वयस्क समाज की देखभाल एवं भलाई के लिए कुछ विशेष कदम उठाए जाने चाहिए और उनके जीवन के इस पड़ाव पर उनको स्वस्थ संबंधी परेशानियों और उनका प्रबंधन करना हमारा परम कर्तव्य है और इसके लिए ये रणनीतियां निम्नलिखित प्रकार से हो सकती हैं। पहले वित्तीय सुरक्षा और आर्थिक असमानता को कम करने के उपाय।

दूसरा वृद्ध और उनके देखभाल कर्ता के लिए सामाजिक समर्थन की आवश्यकता। शारीरिक सुरक्षा नीति के तहत हम उनको विशेष रूप के संतुलित आहार, खान-पान इत्यादि, हल्के-फुल्के शारीरिक व्यायाम हेतु सार्वजनिक स्थल पर व्यायाम केंद्र को स्थापित करना, तंबाकू अथवा किसी भी प्रकार की नशीली पदार्थ से दूर रखने हेतु चिकित्सा संबंधीय एवं नशा उन्मूलन संस्थाएं।

वृद्ध जन देख भाल की व्यवस्थाओं में शारीरिक देखभाल विभाग और मानसिक संस्थाएं हेतु व्यवस्था बनवना। चौथा विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का निर्माण करना जिससे वृद्ध दिवस को एक पारिवारिक और सौहार्दपूर्ण परिवेश मिल सके।

पांचवा कुछ विशेष प्रकार के वृद्ध वयस्क जो की अति कमजोर समूह से आते हो अथवा दूर-दराज वाले क्षेत्रों में रहते हो दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित रहते हो को विशेष मोबाइल चिकित्सा की सेवाएं प्रदान कराना। कुछ विशेष दिवस के लिए स्वयं सहायता समूह में भागीदारी बढ़ाने का प्रयत्न किया जाना सुनिश्चित करना।

वृद्ध वयस्कों के लिए सामाजिक संपर्क, सार्थक सामाजिक गतिविधियों, सकारात्मक मनो सामाजिक स्वास्थ्य जीवन के संतुष्टि और जीवन की गुणवत्ता और अवसाद एवं चिंता जैसी मानसिक बीमारियों को कम करने के लिए प्रमुख नीति जैसे सामाजिकता सम्मेलन हेतु हम मित्रता पहल, सामाजिक कौशल प्रशिक्षण, रचनात्मक कला समूह, सेवा निवितृ उपरांत शिक्षा सेवाओं इत्यादि द्वारा कराया जा सकता हैं ।

इसी में आठवी कड़ी में आयुवाद और दुर्व्यवहार से सुरक्षा भी महत्वपूर्ण है, प्रमुख सुरक्षा तंत्र में भेदभाव विरोधी नीतियों और कानून, अंतर पीढ़ी गत गतिविधियों, सलाह शिक्षा, वित्तीय सहायता और मनोवैज्ञानिक सत्रों का आयोजन किया जाना भी शामिल होना है। जो की वृद्ध वयस्कों को दुर्व्यवहार से बचाता है।

यहां वृद्ध वयस्कों में होने वाली याददाश्त की कमी, पहचान की कमी,खुद की देख भाल की कमी इत्यादि लोगों के लिए मनो सामाजिक व्यवस्था सत्र बनवाने हेतु विशेष मनो सामाजिक सत्रों का निर्धारण,एवं एक विशेष अंतराल पर कार्यशालाओं का आयोजन समय-समय पर भी करवाना भी नीति में शामिल होना चाहिए।

उनकी देखभाल की चिकित्सा की श्रृंखला की कड़ी में भारत सरकार ने भी प्रत्येक जिले के जिला अस्पताल में वृद्ध वयस्कों के शारीरिक देखभाल हेतु राष्ट्रीय वृद्धा वयस्क देखभाल एवं सुरक्षा कार्यक्रम एवं मानसिक देखभाल के लिए जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम भी चलाए हैं। जो की निरंतर अपनी सेवाएं देते हुए कई वृद्ध वयस्को को अनेक प्रकार से स्वास्थ्य लाभ पहुंचा रहे हैं। बनाने के लिए कई प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन की रणनीतियां बननी चाहिए जिससे उनके स्वास्थ्य उम्र बढ़ाने की और एक कारगर कदम के रूप में भी शामिल किया जाना चाहिए।

बिखरना और निखरना

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

वर्तमान समय में संगठित होकर रहना नितांत आवश्यक है। चूंकि इस दौर में ऐसे लोगों की कोई भी कमी नहीं है जो आपकों संगठित होने से पहलें ही बिखेर दें। यह दुनियां मतलब कि दुनियां हैं। इसलिए हर किसी पर आंख मूंद कर भरोसा नहीं करें। हम पुराने दौर को देखें तो पता चलता है कि लोग किस प्रकार एक होकर रहते थे और अपने सभी काम काज बिना किसी बाधा के आसानी से कर लेते थे। चूंकि संगठन में ही एकता व मजबूती होती हैं। अगर आप संगठित होकर रहते हैं। बिना राग द्वेष, अंहकार, घमंड, के रहते हैं तो सभी लोग आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले हैं।

परमात्मा ने इंसान को एक ही माटी से बनाया हैं फिर भी इंसान-इंसान में फर्क नजर आ रहा हैं। लोग कहते हैं कि एक हाथ की पांचों अंगुलियां बराबर नहीं है तब फिर इंसान कैसे एक सा होगा। परमात्मा ने जब इंसान को बनाया तब उसने उसमें कोई भेदभाव नहीं किया। उसके लिए तो अब भी सभी इंसान समान हैं। लेकिन इस धरती पर जन्म लेने के बाद इंसान जैसे-जैसे बडा होता गया , वैसे ही वैसे उसमें अंहकार, घमंड बढता ही गया और इसी अंहकार ने उसे समय के अनुसार सबक सिखाने का प्रयास किया लेकिन अंहकारी मनुष्य ने अपने अंहकार व घमंड में चूर होकर सभी की अनदेखी करता चला गया। यहां तक कि परमात्मा तक को वह भूल गया।

वहीं दूसरी ओर जो व्यक्ति अपने, अपने परिजनों, अड़ोस-पड़ोस, समाज व राष्ट्र के प्रति पूरी तरह समर्पित रहा। वह दिनों दिन अपने प्रगति के पथ की ओर बढता ही गया। उसने अपने परिवारजनों के साथ ही साथ दीन दुखियों व पीड़ित मानवता की सेवा की। समर्पित भाव से पशु पक्षियों की सेवा की वे जन जन की आंखों के तारे बन गये। कहने का तात्पर्य यह है कि जो अंहकार व घमंड करता हैं वह हमेंशा बिखरता हैं। टूटता हैं। कमजोर होता जाता हैं और समाज की नजरों से वह गिर जाता हैं। जो इस तरह से बिखरता हैं वह कभी प्रगति नहीं कर सकता। वहीं दूसरी ओर जो समर्पित भाव से कार्य करता हैं , वहीं जीवन में निखरता हैं।

सही व गलत

इंसान को अपने कार्य के प्रति सदैव सजग व तत्पर रहना चाहिए और अपने काम को पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ समय पर सम्पादित करना चाहिए। आपकी अपने कार्य के प्रति निष्ठा व समर्पण ही एक तरह की पूजा हैं जो समय पर काम करता हैं उन्नति उसी के चरणों को छूती हैं। याद रखिए हमें यह मानव जीवन लोगों की सेवा करने व परोपकार के कार्य करने के लिए ही मिला हैं। इसलिए अपने दैनिक जीवन के कार्य करते हुए व्यक्ति को कुछ समय इसकी भक्ति के लिए भी निकालना चाहिए।

इस नश्वर संसार में कोई भी कार्य छोटा बडा नहीं है। इसलिए यह सोच कर कभी भी कार्य न करें कि यह छोटा है और यह बडा। अपितु यह देखें कि कौन सा काम सही हैं और कौन सा काम गलत हैं। हमें धन के लालच में या भौतिक सुख सुविधाओं के चक्कर में पड कर कभी भी कोई गलत कार्य न करें। जब भी

कोई कार्य करे तब यह देखकर करें कि वह गलत कार्य नहीं होना चाहिए। अन्यथा फिर जीवन भर पछतावें के अलावा कुछ भी नहीं है।

संगठित होकर रहें

वर्तमान समय में संगठित होकर रहना नितांत आवश्यक है। चूंकि इस दौर में ऐसे लोगों की कोई भी कमी नहीं है जो आपकों संगठित होने से पहलें ही बिखेर दें। यह दुनियां मतलब कि दुनियां हैं। इसलिए हर किसी पर आंख मूंद कर भरोसा नहीं करें। हम पुराने दौर को देखें तो पता चलता है कि लोग किस प्रकार एक होकर रहते थे और अपने सभी काम काज बिना किसी बाधा के आसानी से कर लेते थे। चूंकि संगठन में ही एकता व मजबूती होती हैं।

अगर आप संगठित होकर रहते हैं। बिना राग ध्देष , अंहकार , घमंड , के रहते हैं तो सभी लोग आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले हैं। लेकिन जहां आपने तनिक भी अपनी होशियारी दिखाई या चालाकी की तो यही सहयोगी बिखर कर आपकों कांच की तरह चकना चूर कर देंगे , फिर मत कहना कि यह क्या हो गया , कैसे हो गया , मुझे तो पता भी नहीं चला। साथियों अगर आप अपने परिजनों , अड़ोस-पड़ोस , समाज व राष्ट्र जुड कर रहोंगे तो शेर भी घबरायेगें और टूट कर रहेंगे तो कुत्ते भी आपको सतायेंगे। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप कैसे रहना चाहतें हैं।

मन की सोच

कहते हैं कि मन की सोच सुन्दर हैं तो सारा संसार सुन्दर हैं। हमारा मन तो ईश्वर का पावन मन्दिर है जहां शान्ति विराजमान हैं। लेकिन यह इंसान पागलों की तरह मन की शांति को बाजारों में , होटलों में व विदेशों में खोज रहा हैं। हम जब भी कोई गलत , अनैतिक कार्य या व्यवहार करते हैं तो हमारा मन उसे न करने के लिए हमें सचेत करता हैं , लेकिन हम अपने निजी स्वार्थ की खातिर उस गलत या अनैतिक कार्य या व्यवहार को कर बैठते

हैं और फिर जब हम संकट में फंसते है तब मन ही मन कहते हैं कि उस वक्त मन की बात मान लेते तो आज यह दिन न देखना पडता।

मन की सोच हमेंशा सकारात्मक सोच होती हैं। इसलिए वह कभी गलत नहीं हो सकती। गलत तो हमारे कर्म होते हैं और फिर अपने बुरे कर्मों का फल हमें ही भोगना पडता हैं। इसलिए सदैव श्रेष्ठ कर्म करें। श्रेष्ठ साहित्य पढे व श्रेष्ठ साहित्य का सृजन करें। अच्छे लोगों का संग करें और जीवन की बगिया (मन की सोच) को सुन्दर बनायें।

खुश रहने का मंत्र

वर्तमान समय में हर कोई दुःखी है। कोई धन दुःखी है तो कोई तन दुःखी हैं। कोई अपनी संतान से दुःखी है तो कोई अपने परिजनों के व्यवहार से दुःखी है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज हर कोई दुःखी है। कोई अपनी पीडा दूसरों को सुना कर मन को हल्का कर लेता हैं तो कोई किसी को बताने से डरता है। वह सोचता है कि सुनकर लोग क्या कहेंगे।

अरे मेरे भाई , समय के अनुसार चलें और अपने आपको भी अपडेट करते चले , वरना लोग जीने नहीं देंगे। अपनी तुलना कभी भी किसी और से न करें। खुश रहने का बस एक ही मंत्र हैं और वह यह है कि उम्मीद केवल खुद से ही रखों किसी ओर से नहीं।

वक्त

वक्त कभी भी किसी का इन्तजार नहीं करता हैं। जो वक्त के साथ चलता हैं वहीं सफल होता हैं। अतः वक्त को बेकार की बातों में बर्बाद मत कीजिए। अपितु उसका अधिकाधिक सदुपयोग कीजिए। किसी के साथ हम वक्त को भूल जाते हैं और कोई वक्त के साथ हमें भूल जाता हैं।

वक्त की इज्जत करना सिखिये

अगर आपने वक्त की इज्जत की तो वक्त आपकों आपकी मंजिल पर अवश्य ही पहुंचायेगा और आपने वक्त की कद्र नहीं की तो वह आपकों ऊपर से भी नीचे गिरा देगा। वक्त हैं तभी तो सब कुछ संभव है वरना कुछ भी संभव नहीं है।

इस नश्वर संसार में आये हो तो वक्त का सदुपयोग कर अपने जीवन को खुशहाल बनाएं। आप खुश हैं तो सभी खुश हैं। अतः स्वस्थ रहिए और मस्त रहिए।

नोबेल पुरस्कारों में ए.आई. का प्रभाव

विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार
स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब

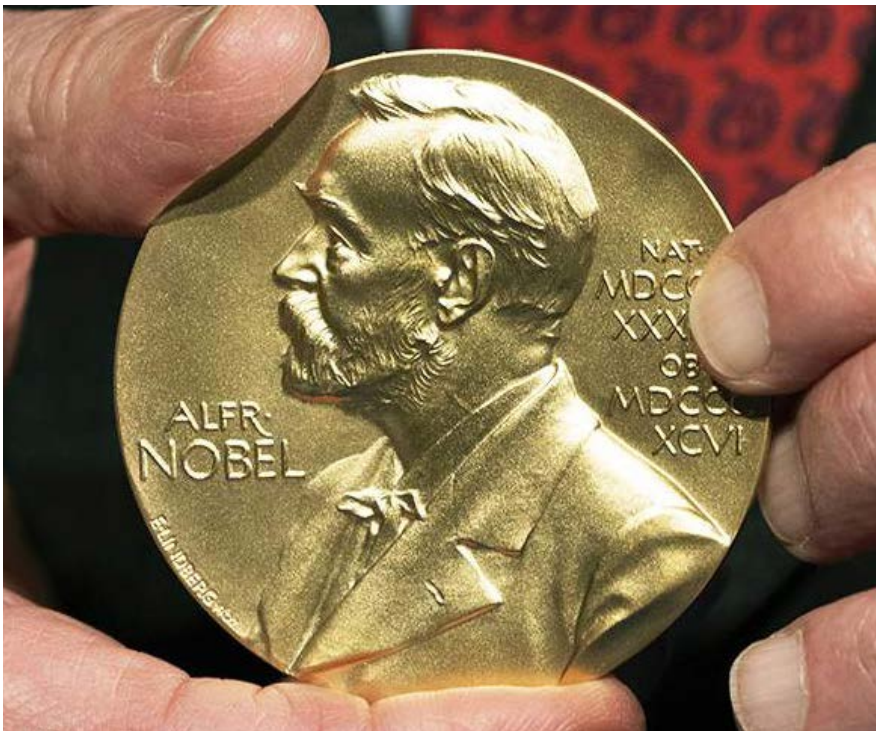

इस वर्ष का भौतिकी पुरस्कार प्रिंसटन विश्वविद्यालय में अमेरिकी जॉन हॉपफील्ड और टोरंटो विश्वविद्यालय से ब्रिटिश मूल के जेफ्री हिंटन को प्रदान किया गया। जबकि होपफील्ड एक भौतिक विज्ञानी हैं, हिंटन ने एआई की ओर बढ़ने से पहले प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का अध्ययन किया। रसायन विज्ञान पुरस्कार वाशिंगटन विश्वविद्यालय के बायोकेमिस्ट डेविड बेकर और कंप्यूटर वैज्ञानिक डेमिस हसाबिस और जॉन जम्पर के बीच साझा किया गया था, जो दोनों यूके में गुगल डीपमाड में हैं।

नेलो क्रिस्टियानिनी, बाथ विश्वविद्यालय भौतिकी और रसायन विज्ञान में 2024 के नोबेल पुरस्कारों ने हमें विज्ञान के भविष्य की एक झलक दी है। दोनों पुरस्कारों से सम्मानित खोजों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) केंद्रीय थी। आपको आश्चर्य होगा कि पुरस्कारों की स्थापना करने वाले अल्फ्रेड नोबेल इस सब के बारे में क्या सोचते होंगे। हमें यकीन है कि एआई उपकरणों का उपयोग करने वाले शोधकर्ताओं को कई और नोबेल पदक दिए जाएंगे। जैसा कि ऐसा होता है, हम नोबेल समिति द्वारा सम्मानित वैज्ञानिक तरीकों को "भौतिकी", "रसायन विज्ञान" और "शरीर विज्ञान या चिकित्सा" जैसी सीधी श्रेणियों से हटकर पा सकते हैं। हम यह भी देख सकते हैं कि प्राप्तकर्ताओं की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि इन श्रेणियों के साथ कमजोर संबंध बनाए रखती है। इस वर्ष का भौतिकी पुरस्कार प्रिंसटन विश्वविद्यालय में अमेरिकी जॉन हॉपफील्ड और टोरंटो विश्वविद्यालय से ब्रिटिश मूल के जेफ्री हिंटन को प्रदान किया गया। जबकि होपफील्ड एक भौतिक विज्ञानी हैं, हिंटन ने एआई की ओर बढ़ने से पहले प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का अध्ययन किया। रसायन विज्ञान पुरस्कार वाशिंगटन विश्वविद्यालय के बायोकेमिस्ट डेविड बेकर और कंप्यूटर वैज्ञानिक डेमिस हसाबिस और जॉन जम्पर के बीच साझा किया गया था, जो दोनों यूके में गुगल डीपमाड में हैं। भौतिकी और रसायन विज्ञान श्रेणियों में सम्मानित एआई-आधारित प्रगति के बीच घनिष्ठ संबंध है। हिंटन ने प्रोटीन के आकार की भविष्यवाणी करने में सफलता हासिल करने के लिए डीपमाइंड द्वारा उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद की। भौतिकी

पुरस्कार विजेताओं, विशेष रूप से हिंटन ने मशीन लर्निंग नामक शक्तिशाली क्षेत्र की नींव रखी। यह एआई का एक उपसमूह है जो विशिष्ट कम्प्यूटेशनल कार्यों को करने के लिए एल्गोरिदम, नियमों के सेट से संबंधित है। होपफ़ील्ड का कार्य आज विशेष रूप से उपयोग में नहीं है, लेकिन बैकप्रॉपैगेशन एल्गोरिदम (हिंटन द्वारा सह-आविष्कार) का कई अलग-अलग विज्ञानों और प्रौद्योगिकियों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है। यह तंत्रिका नेटवर्क से संबंधित है, कंप्यूटिंग का एक मॉडल जो डेटा को संसाधित करने के लिए मानव मस्तिष्क की संरचना और कार्य की नकल करता है। बैकप्रॉपैगेशन वैज्ञानिकों को विशाल तंत्रिका नेटवर्क को "प्रशिक्षित" करने की अनुमति देता है। हालाँकि नोबेल समिति ने इस प्रभावशाली एल्गोरिदम को भौतिकी से जोड़ने की पूरी कोशिश की, लेकिन यह कहना उचित होगा कि यह लिंक प्रत्यक्ष नहीं है। वायरस प्रोटीन को अब वायरस का मुकाबला करने के लिए तुरंत डिज़ाइन किया जा सकता है। रेडॉक्सिस्ट स्टूडियो / शटरस्टॉक मशीन-लर्निंग सिस्टम को प्रशिक्षित करने में इसे अक्सर इंटरनेट से बड़ी मात्रा में डेटा को उजागर करना शामिल होता है। हिंटन की प्रगति ने अंततः जीपीटी (चैटजीपीटी के पीछे की तकनीक) और गूगल डीपमाइंड द्वारा विकसित एआई एल्गोरिदम अल्फागो और अल्फाफोल्ड जैसे सिस्टम के प्रशिक्षण को सक्षम किया। इसलिए, बैकप्रोपेगेशन का प्रभाव बहुत बड़ा रहा है। डीपमाइंड के अल्फाफोल्ड 2 ने 50 साल पुरानी समस्या का समाधान कियाः उनके आणविक निर्माण ब्लॉकों, अमीनो एसिड से प्रोटीन की जटिल संरचनाओं की भविष्यवाणी करना। 1994 से हर दो साल में, वैज्ञानिक अपने अमीनो एसिड के अनुक्रम से प्रोटीन संरचनाओं और आकृतियों की भविष्यवाणी करने के सर्वोत्तम तरीके खोजने के लिए एक प्रतियोगिता

आयोजित कर रहे हैं। प्रतियोगिता को क्रिटिकल असेसमेंट ऑफ स्ट्रक्चर प्रेडिक्शन कहा जाता है। पिछले कुछ प्रतियोगिताओं के लिए, सीऐएसपी विजेताओं ने डीपमाइंड के अल्फाफोल्ड के कुछ संस्करण का उपयोग किया है। इसलिए, हिंटन के बैकप्रोपेगेशन से गुगल डीपमाइंड के अल्फाफोल्ड 2 की सफलता तक एक सीधी रेखा खींची जानी है। डेविड बेकर ने नए प्रकार के प्रोटीन के निर्माण की कठिन उपलब्धि हासिल करने के लिए रोसेटा नामक एक कंप्यूटर प्रोग्राम का उपयोग किया। बेकर और डीपमाइंड दोनों के दृष्टिकोण भविष्य के अनुप्रयोगों के लिए भारी संभावनाएं रखते हैं। श्रेय देना हमेशा से रहा हैनोबेल पुरस्कारों का विवादास्पद पहलू. अधिकतम तीन शोधकर्ता एक नोबेल साझा कर सकते हैं। लेकिन विज्ञान में बड़ी प्रगति सहयोगात्मक है। वैज्ञानिक पत्रों में 10, 20, 30 लेखक या अधिक हो सकते हैं। नोबेल समिति द्वारा सम्मानित खोजों में एक से अधिक टीमें योगदान दे सकती हैं। इस वर्ष हम बैकप्रॉपैगेशन एल्गोरिदम पर अनुसंधान के श्रेय के बारे में और चर्चा कर सकते हैं, जिसका दावा विभिन्न शोधकर्ताओं ने किया है, साथ ही भौतिकी जैसे क्षेत्र में किसी खोज के सामान्य श्रेय के बारे में भी चर्चा की जा सकती है। अब हमारे पास एट्रिब्यूशन समस्या का एक नया आयाम है। यह लगातार अस्पष्ट होता जा रहा है कि क्या हम हमेशा मानव वैज्ञानिकों और उनके कृत्रिम सहयोगियों के योगदान के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे-एआई उपकरण जो पहले से ही हमारे ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। भविष्य में, क्या हम मशीनों को वैज्ञानिकों की जगह लेते हुए देख सकते हैं, जिसमें इंसानों को सहायक भूमिका सौंपी जाएगी? यदि ऐसा है, तो शायद एआई उपकरण को मुख्य नोबेल पुरस्कार मिलेगा, जिसमें मनुष्यों को अपनी श्रेणी की आवश्यकता होगी।

भारतीय सिक्के

प्रशांत द्विवेदी

लखनऊ

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद मुद्रा प्रणाली में बड़े बदलाव आए। 1950 में भारतीय गणराज्य की स्थापना के बाद भारतीय सिक्कों का पुनर्गठन किया गया। पहले के सिक्कों पर ब्रिटिश सम्राट की छवि होती थी, लेकिन अब भारतीय राष्ट्रीय प्रतीकों को सिक्कों पर अंकित किया जाने लगा समय के साथ भारतीय सिक्कों के आकार, सामग्री और डिज़ाइन में भी बदलाव होते गए। आज के सिक्के मुख्य रूप से स्टील, निकल, और तांबे से बनाए जाते हैं। इन सिक्कों पर भारतीय संस्कृति, महापुरुषों और प्रमुख घटनाओं के चित्रण के साथ-साथ अशोक स्तंभ का चित्रण भी होता है।

भारतीय मुद्रा का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय सभ्यता का। सिक्कों का प्रचलन भारत में हजारों साल पहले शुरू हुआ और तब से लेकर आज तक इसमें कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। भारतीय सिक्कों की यह यात्रा केवल आर्थिक लेन-देन का माध्यम नहीं रही है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, संस्कृति और कला का भी प्रतीक है। भारतीय सिक्कों के विकास की ऐतिहासिक यात्रा की बात करें तो इसका आरंभ लगभग 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व से होता है, जिसे 'महाजनपद काल' से जोड़ा जा सकता है। उस समय भारत में 16 प्रमुख महाजनपदों का अस्तित्व था और सबसे पहले ढले हुए पंचमार्क सिक्के प्रचलन में आए। इन सिक्कों पर विभिन्न प्रकार के चिन्ह होते थे, जो उस समय के राजा या महाजनपदों के प्रतीक होते थे। ये सिक्के मुख्य रूप से चांदी के बने होते थे और इन पर सूर्य, पेड़, पहाड़, मछली जैसे प्राकृतिक और धार्मिक चिन्ह अंकित होते थे। इनका उपयोग उत्तरी भारत में शुरू हुआ और धीरे-धीरे पूरे देश में फैल गया। मौर्य साम्राज्य के दौरान चांदी और तांबे के सिक्कों का प्रचलन हुआ, और पंचमार्क सिक्कों को जारी रखा गया। सम्राट अशोक के शासनकाल में इन सिक्कों का उपयोग धार्मिक और सांस्कृतिक संदेशों को व्यक्त करने के लिए भी किया जाने लगा। मौर्य साम्राज्य के बाद गुप्त साम्राज्य के समय भारतीय सिक्कों में नई उन्नति देखने को मिली। गुप्त काल के सिक्के सोने के होते थे जिन्हें 'दीनार' कहा जाता था, और इन पर शासकों की छवि और धार्मिक प्रतीक अंकित होते थे। इस समय के सिक्के कलात्मक दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध थे और इन पर हिंदू देवी-देवताओं की आकृतियाँ भी अंकित की जाती थीं। मध्यकालीन भारत में मुस्लिम शासकों के आगमन के साथ सिक्कों के डिज़ाइन और सामग्री में बड़ा बदलाव देखा गया। दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के समय में चांदी और तांबे के सिक्कों का व्यापक प्रचलन हुआ। मुगल सम्राट अकबर ने सिक्कों की प्रणाली में सुधार करते हुए धातु की शुद्धता और तौल के मानकों को स्थापित किया। मुगल सिक्कों पर फारसी लिपि में शासकों के नाम और उपाधियाँ अंकित होती थीं। इस समय के प्रमुख सिक्कों में 'रुपया' का विशेष स्थान था, जो चांदी का बना होता था। 'रुपया' शब्द संस्कृत के 'रुप्यक' से लिया

गया था, जिसका अर्थ 'चांदी का सिक्का' होता है। अकबर के शासनकाल में रुपया सिक्के का वजन लगभग 11.66 ग्राम था, जिसे पूरे साम्राज्य में मुद्रा के मानक रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

18वीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण के साथ भारतीय सिक्कों में बड़े बदलाव आए। ब्रिटिशों ने सिक्कों को यूरोपीय मुद्रा प्रणाली के अनुरूप ढालने की कोशिश की। ब्रिटिश शासन के दौरान 1835 में एक नई प्रणाली लागू की गई, जिसे 'यूनिफाइड सिक्का प्रणाली' कहा गया। इस प्रणाली के तहत सभी प्रांतों के लिए एक समान प्रकार के सिक्के जारी किए गए और रुपया चांदी के मानक पर आधारित रहा। 1862 में रानी विक्टोरिया की छवि के साथ नए सिक्के जारी किए गए, जो लंबे समय तक प्रचलन में रहे।

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद मुद्रा प्रणाली में बड़े बदलाव आए। 1950 में भारतीय गणराज्य की स्थापना के बाद भारतीय सिक्कों का पुनर्गठन किया गया। पहले के सिक्कों पर ब्रिटिश सम्राट की छवि होती थी, लेकिन अब भारतीय राष्ट्रीय प्रतीकों को सिक्कों पर अंकित किया जाने लगा। 1950 में जारी पहले स्वतंत्र भारतीय सिक्कों पर अशोक स्तंभ का सिंह चिह्न और 'भारत' अंकित किया गया। इन सिक्कों में तांबा, निकल, और कांस्य का इस्तेमाल हुआ। 1957 में भारतीय मुद्रा को दशमलव प्रणाली में बदला गया, जिससे 1 रुपया को 100 पैसे में विभाजित किया गया। इससे भारतीय मुद्रा प्रणाली को अधिक सरल और संगठित रूप मिला।

समय के साथ भारतीय सिक्कों के आकार, सामग्री और डिज़ाइन में भी बदलाव होते गए। आज के सिक्के मुख्य रूप से स्टील, निकल, और तांबे से बनाए जाते हैं। इन सिक्कों पर भारतीय संस्कृति, महापुरुषों और प्रमुख घटनाओं के चित्रण के साथ-साथ अशोक स्तंभ का चित्रण भी होता है। 1, 2, 5, 10 और 20 रुपये के सिक्के वर्तमान में प्रचलन में हैं, जिनका आकार और डिज़ाइन समय-समय पर बदला गया है।

भारतीय सिक्कों पर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसी प्रमुख हस्तियों की छवियाँ भी अंकित की जाती हैं। इसके अलावा, स्वतंत्रता के 50 वर्ष पूरे होने या भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की उपलब्धियों जैसी प्रमुख घटनाओं के उपलक्ष्य में विशेष सिक्के भी जारी किए गए हैं।

भारतीय सिक्कों की इस यात्रा में धातुओं का भी विशेष महत्व रहा है। पंचमार्क सिक्के मुख्य रूप से चांदी के होते थे, लेकिन तांबे और सोने का भी प्रचलन था। चांदी के सिक्के महाजनपद काल से मुगल साम्राज्य तक मुख्य मुद्रा रहे। तांबे के सिक्कों का उपयोग कम मूल्य की दैनिक लेन-देन में होता था, जबकि सोने के सिक्कों का बड़ा प्रचलन गुप्त साम्राज्य के समय देखा गया। सोने के सिक्के उस समय की समृद्धि और शक्ति का प्रतीक थे।

सिक्कों पर अंकित प्रतीक और चित्र उस समय की राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते थे। पंचमार्क सिक्कों पर प्राकृतिक चिन्ह, मुगल सिक्कों पर शासक की छवि और फारसी लिपि में लिखे धार्मिक उद्धरण, और ब्रिटिश सिक्कों पर सम्राटों की छवियाँ अंकित होती थीं। स्वतंत्र भारत में जारी सिक्कों पर अशोक स्तंभ और महापुरुषों की छवियाँ अंकित की गईं, जबकि स्मारक सिक्के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय घटनाओं और महापुरुषों की स्मृति में जारी किए गए।

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती, स्वतंत्रता के 50 साल, और ISRO के मंगलयान मिशन की सफलता के उपलक्ष्य में भी विशेष स्मारक सिक्के जारी किए गए हैं। ये सिक्के न केवल संग्रहकर्ताओं के लिए होते हैं, बल्कि आम जनता के उपयोग के लिए भी जारी किए जाते हैं।

भारतीय सिक्कों की यह यात्रा न केवल आर्थिक बदलावों की कहानी है, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक पहलुओं का भी प्रतीक है।

दीपावली एक वैदिक एवं वैज्ञानिक अनुष्ठान

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

दीपावली आर्य संस्कृति की महत् गरिमामण्डित दीपों के प्रकाश का महान पावन पर्व है। प्रकाश की यह पूजा ही दीपोत्सव, ज्योति पर्व, प्रकाश पर्व या दीपावली का आधार है। कहीं 'सुखपुत्रिका', 'सुखरात्रि' या 'यक्षरात्रि' भी कहा जाता है। उत्तर वैदिक काल में आकाश दीप के विधान से इसका उल्लेख मिलता है। हमारे शास्त्रों के अनुसार, श्राद्ध पक्ष के उपरांत जब हमारे पूर्वज अपने लोक को लौटते हैं, तो उन्हें दीपक के माध्यम से मार्ग दिखाया जाता है, इसे 'आकाश दीप' कहते हैं। आकाशदीप की परंपरा यूनान, चीन. थाईलैंड, जापान और दक्षिण अमेरिका में आज भी दिखाई देती है। भारत में धार्मिक परंपरा के रूप में यह भी माना जाता है कि वनवास की अवधि काटने के बाद राम के अयोध्या आगमन पर लोगों ने अपने मकानों पर ऊंचे बांस में आकाशदीप टांगे थे, जिससे वह इन्हें देखकर समझ लें कि यही अयोध्या है। प्राचीन काल में 'कौमुदी महोत्सव' इसी अवसर पर शरदकाल में मनाया जाता था और जलाशयों, नदियों, नावों पर दीप जलाए जाते थे। चंद्रगुप्तकालीन ग्रंथों के अनुसार. पाटलिपुत्र में कौमुदी महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता था। प्राकृत गाथा सप्तशती के अनुसार, दीपोत्सव का समय दो हजार वर्ष से भी पहले का माना गया है। वात्स्यायन ने अमावस्या को यक्षरात्रि उत्सव मनाए जाने का उल्लेख किया है। महाकवि कालिदास द्वारा कहे गए 'उत्सव प्रियाहि मानवः' में संभवतः दीपावली उत्सव का ही संकेत हो। शास्त्रों में कहा गया है-'दीपो ज्योतिः परब्रह्म, दीपो ज्योति जनार्दनः।'

नीलमत पुराण के अनुसार, दीपावली के पर्व को 'सुखरात्रि' के नाम से जाना जाता है। सर्वप्रथम दीपावली का धार्मिक पर्व के रूप में सम्यक विवेचन 'भविष्य पुराण' में मिलता है, किन्तु इसका विशद् तथा विकसित रूप चतुर्थ शताब्दी में संकलित' पद्मपुराण' एवं सप्तम शताब्दी के 'स्कंदपुराण' में अंकित है। वाराह पुराण के अनुसार, इस दिन सूर्य के तुला राशि में होने के कारण लक्ष्मी जी इसी दिन जागकर अपने भक्तों को आशीर्वाद देती हैं, इसीलिए दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा का विधान है। दीपावली पर श्रीगणेश पूजन भी यक्ष पूजन परंपरा का अवशेष है।

इस पर्व में 'प्रकाश स्तवन' प्रमुख भाव है। वैदिक काल में यह प्रकाश अग्नि रूप में था। बाद में मंदिर के आरती-दीप के रूप में प्रतिष्ठित हो गया। इस प्रकार. वैदिक काल से लेकर आज तक दीप के गौरवमय अस्तित्व से संयुक्त इस त्यौहार की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं भौतिक महत्ता के आलोक में हम दीपावली का अनुष्ठान करते रहे हैं।

दीपावली में दीप-प्रज्ज्वलन का अनुष्ठान एक विशिष्ट अर्थ और इतिहास को प्रकट करता है। पहले दीप-पूजा का विधान विज्ञान -दृष्टि के कारण ही वनस्पति-जगत से जोड़ा गया था। जो आज भी किसी न किसी रूप में सतत गतिमान है। स्कंदपुराण में यहाँ तक कहा गया कि जब तक नारायणालय में दीप नहीं जलता है, तभी तक अधर्मी पापी व्यक्ति भयभीत रहता है और पापों की सत्ता बनी रहती है।

दीपावली का त्यौहार पाँच दिनों का 'पंच पर्वों' का समुच्चय है-धनतेरस, रूप चतुर्दशी,

दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज।

दीपावली के पंच दिवसीय पर्व का अध्ययन एवं शोध दो समानांतर लोकों की यात्रा करा सकता है। प्रथम लोक दृश्य लोक है, जिसे हम संसार कहते हैं। दूसरा लोक असीमित और अनंत है, जो हमारे लिए अदृश्य है। यह अदृश्य लोक हमारे क्रियाकलापों को नियंत्रित करता है। आधुनिक विज्ञान भी इस लोक की पहचान-मान्यता से अब दूर नहीं है। यह है भावलोक। दृश्य लोक और भाव लोक परस्पर गुँथे हुए हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि जब पश्चिमी जगत ने आकर्षण के सिद्धांत पर कार्य करना प्रारंभ किया तो बार-बार यह पाया कि जिस भाव को हम शुद्ध रूप में आकर्षित करते और उसकी धारणा करते हैं, वह कुछ ही समय में हमारे सामने प्रकट अर्थात दृश्य रूप में आने लगता है। विश्व में आज ऐसे प्रयोग धन आकर्षण. स्वास्थ्य आकर्षण आदि के लिए बड़े स्तर पर किए जा रहे हैं।

कुबेर पूजन से दीपावली का शुभारंभ

पंच दिवसीय दीपावली का प्रथम दिवस कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी अर्थात धनतेरस है। इस दिन कुबेर पूजन का प्रावधान है। यह हमारे अन्नमय कोष से संबंधित है। कुबेर देवताओं के कोषाध्यक्ष तथा धनाध्यक्ष हैं। पश्चिमी आकर्षण के सिद्धांतानुसार 'यदि आप धन को शुद्ध तथा सम्मानित रूप से आकर्षित करने का प्रयास करेंगे और उसे कल्पनाओं में देखेंगे तो यह ब्रह्मांड के हर कोने से खिंचकर आपकी ओर आना शुरू कर देगा। इसी दिन प्रदोष काल में मुख्य द्वार पर चावल की ढेरी पर तिल के तेल से भरा चौमुखी दीप प्रज्ज्वलित करने का विधान है। यह एक तरफ धन को आकर्षित करता है, साथ ही साथ इस काल से पहले की नकारात्मकता का शोधन आपके अन्नमय तथा प्राणमय कोष को ऊर्जावान बना देता है। इस दिन धन्वंतरि भगवान,जो कि विष्णु के अंशावतार हैं, की भी पूजा की जाती है। वे आयुर्वेद तथा शल्यक्रिया के मानवमात्र के कल्याण के निमित्त प्रकट करने, मूर्तरूप में स्वास्थ्य के देवता हैं।

दूर करें नकारात्मक ऊर्जा

प्रथम दिवस धातु तत्व से वास्तु शोधन

दीपावली का प्रथम दिन मुख्य साधना की तैयारी का है। इसमें स्थान, तन तथा मन का विशेष महत्व है। इस धातु तत्व की सहायता से वास्तु ऊर्जा का प्रवाह सुनिश्चित किया जाता है। इस दिन घर में चांदी अथवा पीतल के बर्तन लाएं। ये बर्तन खाली न लाकर जल-बताशे-मिष्ठान इत्यादि से भरकर लाएं। साथ ही शोधित घंटियां या सही क्वांटम फ्रीक्वेंसी की 'विंड चाइम' घर लानी चाहिए।

द्वितीय दिवस सकारात्मक ऊर्जा लाना

आपको सकारात्मक ऊर्जा लाने के लिए नकारात्मक ऊर्जा पैदा करने वाली वस्तुओं को वहां से हटाना होगा। दीपावली का दूसरा दिन अर्थात नरक चतुर्दशी शोधन का अंग है। ऐसे में टूटी-फूटी वस्तुएं, गंदगी तथा दरिद्रता घर के बाहर कर देनी चाहिए। इसके पश्चात सेंधा नमक के पानी से पूरे घर में पोंछा अवश्य लगाएं। प्रदोष काल में 14 दीपक मंदिर, कूप, भवन, उद्यान, घूरा आदि स्थानों पर प्रज्ज्वलित करें। तन-मन की स्वच्छता के बाद माँ लक्ष्मी के आगमन की तैयारी में लग जाना चाहिए। यह दिन नरक के भय से मुक्ति का है। अनेक कारणों से हमारे भवन में त्रिआयामी होलोग्राफिक (प्रकाश के एक छवि में परिवर्तित होने की संरचना) स्मृतियों का वास हो जाता है। दीपदान इन नकारात्मक स्मृतियों को दूर करने में सहायक होता है।

तृतीय दिवस कार्तिक कृष्ण अमावस्या:मनकीशक्तिकादिन

तीसरा दिवस सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी दिन दीपावली का मुख्य पर्व मनाया जाता है। इसी दिन कमला जयंती भी है। इस दिन पूजा-पाठ की समूची प्रक्रिया एक ऐसा तांत्रिक एवं वैज्ञानिक अनुष्ठान है, जिसे ऋषियों ने अत्यंत सहज रूप में जन-जन तक पहुँचाया है।

मान्यता है कि जो घर साफ-सुथरे तथा सकारात्मक ऊर्जा लेने के लिए उद्यत होते हैं, वहाँ मंत्रों और स्त्रोतों से ऊर्जित दीपक जलते है, पूजन-ध्यान के माध्यम से देवी लक्ष्मी का आवाहन होता है, वहीं देवी लक्ष्मी की कृपा बरसती है। इस तैयारी के लिए समझना होगा कि क्यों ऋषियों ने इस निमित्त अमावस्या का दिन ही चयन किया। शास्त्रों में चंद्रमा की सोलहवीं कला को अमावस्या कहा गया है। अतः इस तिथि का मन पर अतिशक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। इस अमावस्या की रात में मनुष्य के अंतर्मन के साथ ब्रह्मांड की शक्तियों का संयोग करने का प्रयास किया गया है। सावधानी यह आवश्यक है कि इन तीन दिनों में किसी भी तामसिक वस्तु या कृत्य से बचा जाए।

द्वार की तैयारी भी एक महत्वपूर्ण कारक है, जहाँ से घर के अंदर सकारात्मक ऊर्जा को प्रवेश पाना है। द्वार से नकारात्मक ऊर्जा की उपस्थिति को हटाकर समुचित प्रकाश की व्यवस्था आठों पहर के लिए कर दें। द्वार पर बाह्य और अंतर्मुखी गणपति एक-दूसरे की पीठ से लगाकर स्थापित करें। इस स्थान पर क्वांटम तथा एस्ट्रल फ्रीक्वेंसी के अनुसार रंगों का प्रयोग करें। मुख्य द्वार पर आम के पत्ते, हल्दी, चंदन आदि का प्रयोग कर तोरण अवश्य लगाएं। देवी लक्ष्मी के पदचिह्न लगाना शुभ है, इनकी दिशा घर के अंदर की ओर आते हुए होनी चाहिए। द्वार के दोनों ओर स्वास्तिक चिह्न बनाने का का विशेष महत्व है। पूजन के अंतर्गत पुरुषों को श्वेत एवं स्त्रियों को लाल रंग के परिधान धारण करने चाहिए।

दीपावली पर सफाई का वैज्ञानिक महत्व

दीपावली पर साफ-सफाई का ऐतिहासिक, धार्मिक और वैज्ञानिक महत्व है। घर की पूरी तरह से सफाई करने से पूरे घर का वातावरण शुद्ध होता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ आलोक धवन के अनुसार साफ-सफाई का सीधा संबंध स्वास्थ्य से है। इस विषय में अन्य विशेषज्ञों की राय भी महत्वपूर्ण है -

1. सफाई से वर्षा के कीड़े नष्ट होते हैं

दीपावली बरसात के मौसम के बाद का पड़ने वाला बड़ा त्यौहार है। वर्षा में घरों के अंदर, दीमक, गंदगी, फंगस, कीड़े-मकोड़े जमा हो जाते हैं। इसको दूर करने के लिए लोग सफाई. रंगाई-पुताई आदि करवाते हैं। इससे घर के अंदर का वातावरण पूर्णतः शुद्ध हो जाता है।

2. हानिकारक तत्वों से मुक्ति -

घरों की सफाई करने से हानिकारक जीवाणुओं से मुक्ति मिलती है। वर्षा के मौसम में जीवाणु बहुत तेजी से बढ़ते हैं, जिनसे गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। घर की सघन सफाई घर को स्वच्छ और प्रदूषण रहित बनाती है।

3. कीटाणु पूर्णतः नष्ट होने आवश्यक

घर की नियमित सफाई से धूल, मिट्टी, जाले आदि तो साफ हो जाते हैं, किन्तु माइक्रोब्स अर्थात अत्यंत सूक्ष्म कीटाणु,जो आँखों से नहीं दिखते हैं ,साफ नही हो पाते और ये धीरे-धीरे घर में जमा हो जाते हैं। ऐसे हानिकारक सूक्ष्म कीटाणु के लिए घर की सघन सफाई होनी आवश्यक है। दीपावली इसके लिए अच्छा अवसर है, जब घर पूरी तरह से स्वच्छ हो जाता है।

दीप का महत्व

दीपक और इसकी ज्योति जीवन के समान ही ज्वलंत है। मानव देह की भाँति दीपक भी पंचतत्व अर्थात पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल और वायु से बनता है और प्रकाशित होता है। दीपक जलने से वातावरण शुद्ध होता है। माना यह भी जाता है कि धनतेरस से भैया दूज तक घर में अखण्ड दीपक जलाने से पाँचों तत्व संतुलित हो जाते हैं और इसका प्रभाव पूरे वर्ष घर-परिवार और व्यक्ति पर रहता है।

आधुनिकता के युग में हम अपनी परंपराओं को भूलते जा रहे हैं। दीपावली में चारों ओर हर्षोल्लास का वातावरण बन जाता है। बाजारों में भिन्न-भिन्न प्रकार की बिजली की झालरों के गुच्छे लुप्प-धुप्प करते दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर सड़कों के किनारे मिट्टी

के दीये बिक रहे होते हैं। दीये हमारी संस्कृति से जुड़े हैं। दीवाली में मिट्टी के दीये जलाना शुभ माना जाता है, लेकिन आज लोग बिजली की झालरों से घरों को सजाते हैं। इससे दीये के अस्तित्व पर संकट आ गया है। दीपावली पर दीपक प्रज्वलित करने का वैज्ञानिक तथ्य भी है कि इससे एक तो कुंभकार को रोजी- रोजगार मिलता है, दूसरे दीपक जलने से स्वास्थ्य पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। दीवाली मेल-मिलाप का पर्व है, अतः हमें उन लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए, जो दीवाली पर दीये बनाकर हमारे घरों को प्रकाश से भर देते हैं।

दीप जलाने का महत्व

शास्त्रों में लिखा गया है-'तमसो मा ज्योतिर्गमय', अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर चलने से ही जीवन में यथार्थ तत्वों की प्राप्ति संभव है। अंधकार को अज्ञानता, शत्रु. भय, रोग तथा शोक का प्रतीक माना गया है। दीप के समर्पण का उद्देश्य तीनों लोकों में अँधेरे का नाश करना ही है। पौराणिक मान्यतानुसार, अग्नि के सृष्टि में तीन रूप हैं- अंतरिक्ष में विद्युत, आकाश में सूर्य और पृथ्वी पर अग्नि। 'सूर्याशं सभवो दीपः' उक्ति के अनुसार दीपक की उत्पत्ति सूर्य के अंश से हुई है। दीपक के प्रकाश को इतना पवित्र माना गया है कि मांगलिक कार्यों से लेकर भगवान की आरती तक इसका प्रयोग अनिवार्य है। विभिन्न अवसरों पर दीपक को नदी में प्रवाहित किया जाना और सूर्य को समर्पित किया जाना, उस आध्यात्मिक उन्नति का सांकेतिक प्रदर्शन है, जिसमें प्रकृति को समय-समय पर धन्यवाद देने और उसके सम्मान को बनाए रखने की मान्यता है। दीपक का प्रकाश भले ही सूर्य जितना न हो, लेकिन मनुष्य को प्रेरणा देता है कि घोर अँधकार में भी वह अपने जीवनकाल में संघर्ष करके आसपास के अज्ञान और अन्याय रूपी अँधकार को दूर कर लोगों को उजाला दे सकता है।

दीपक जलाने का विधान

अग्नि पुराण,देवी पुराण आदि में गाय के घी तथा तिल के तेल से ही दीपक प्रज्ज्वलित करने का विधान बताया गया है। दीपक से निकलने वाली किरणें उस स्थान तथा मनुष्य के ऊर्जा चक्रों को शक्ति प्रदान करती है। भगवान गणेश की कृपा पाने के लिए तीन बत्तियों वाला गौघृत का दीपक जलाना उत्तम होगा, जबकि देवी लक्ष्मी की कृपा के लिए तिल के तेल का सात मुखी दीपक जलाना चाहिए। पूजा के समय

दीपक का मुख उत्तर या पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। भारतीय योग तथा तंत्र में मुख्य प्रक्रिया के पश्चात शांति तथा समर्पण का प्रावधान है। दीपक जलाते समय प्रायः इस मंत्र का उच्चारण किया जाता है-

शुभम करोति कल्याणम्
आरोग्यम् धन संपदा।
शत्रु बुद्धि विनाशाय
दीप ज्योति नमोस्तुते।।

इसमें दीपक से प्रार्थना की जाती है, 'हे कल्याणकारी, आरोग्य और संपदा प्रदान करने वाले दीप, शत्रु के विनाश के लिए हम तुम्हें नमस्कार करते हैं।'

दीपक जलाने का विज्ञान

वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो देसी घी का दीपक जलाने में उसमें उपस्थित विशिष्ट रसायनों का आक्सीकरण होने के कारण घर की धनात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है। देसी घी के दीपक की ऊर्जा से वातावरण में उपस्थित सूक्ष्म कीटाणुओं का नाश होता है। ऐसा सकारात्मक वातावरण स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। दीपावली पर घी के अलावा तेल के असंख्य दीये जलाकर पर्यावरण की नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक में बदलने का प्रयास किया जाता है। शत्रु संहार, ऋण मुक्ति एवं रोगमुक्ति के लिए तेल का दीपक जलाने का विधान है।

पुराने जमाने में जब कोई अतिथि किसी के घर आता था, तो प्रवेश के समय उसकी आरती उतारने का विधान इसलिए था, जिससे दूर-दराज से व्यक्ति के साथ आने वाले सूक्ष्म कीटाणु एवं नकारात्मकता, आरती से उत्पन्न सकारात्मक तरंगों में परिवर्तित हो जाएं।

तेल का दीपक जलने से उत्पन्न होने वाली तरंगें दीपक बुझने के आधा घंटे बाद तक वातावरण को पवित्र बनाए रखती हैं, लेकिन घी वाला दीपक बुझने के बाद चार घंटे से अधिक समय तक सात्त्विक ऊर्जा बनाए रखता है। दीपक जलने से शुभ शक्तियाँ आकर्षित होती हैं, हानिकारक किरणों का नाश होता है, फलस्वरूप घर में सुख-समृद्धि आती है।

दीपावली में पटाखों का अंधाधुंध प्रयोग अनुचित

दीपावली पर्व पर लोग मुख्य दिन पर ही नहीं, अपितु दीवाली के कई दिन पहले और बाद में खूब पटाखे फोड़ते हैं। आज देश पहले से ही गंभीर वायुप्रदूषण का संकट झेल रहा है, फिर दीपावली पर पटाखों का बढ़ता प्रयोग हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। दीपावली प्रकाश का पर्व है, उसमें बारूद, धुआँ और तीव्र शोर की क्या आवश्यकता? पटाखे जब फोड़े जाते हैं, तब मुख्य रूप से सल्फर डाई आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, कार्बन डाई आक्साइड और लेड जैसे घातक तत्व हवा में मिल जाते हैं, जो हमारे फेफड़ों के माध्यम से ये सारे तत्व विभिन्न अंगों को घातक रूप से प्रभावित करते हैं। ऐसे पटाखों पर प्रतिबंध लगाकर धन का अपव्यय रोका जा सकता है और हम वायु प्रदूषण की समस्या की वृद्धि रोकने में सहयोग कर सकते हैं। लोग चाहें तो उन्हें सीमित मात्रा में हरित-पटाखे फोड़ने की अनुमति दी जा सकती है।

दीपावली के अगले दिन गोवर्धन पूजा

दीपावली के अगले दिन अर्थात कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को प्रकृति उपासना के रूप में गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जाता है। लोग इसे अन्नकूट के नाम से भी जानते हैं। भारतीय लोकजीवन में प्रकृति के साथ मानव का सीधा संबंध है। गोवर्धन पूजा में गोधन अर्थात गायों की पूजा की जाती है। गाय देवी लक्ष्मी के स्वरूप में अपने दूध से स्वास्थ्य रूपी धन प्रदान करती है। कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को मूसलाधार वर्षा से बचाने के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी अनामिका पर उठाए रखा था। इसी कारण प्रति वर्ष गोवर्धन पूजा मनाने का विधान है।

भैया दूज का पर्व

दीपावली का पंचदिवसीय त्यौहार का समापन भाई-बहिन के पवित्र प्रेम का प्रतीक 'भैया दूज' त्यौहार से होता है। इस त्यौहार में कार्तिक शुक्ल द्वितीया को बहिनें भाई को अक्षत-तिलक लगाती हैं, दीपक जलाकर आरती करती हैं, भाई का मुँह मीठा करवाकर, भाई के लिए आजीवन सुखी एवं समृद्ध रहने की कामना करती हैं। भाई भी बहिनों को उपहार स्वरूप धन, वस्त्र आदि प्रदान करते हैं। इस दिन 'यम द्वितीया स्नान' का भी विशेष महत्व है। शास्त्रीय दृष्टि से यह सूर्य की दोनों संतानों यम और यमुना के मध्य विद्यमान घनिष्ठ सहोदर-प्रेम का द्योतक है।

निष्कर्षतः, दीपावली पर हजारों-लाखों दीये जलाए जाते हैं। एक अकेले दीये से अँधेरा हटता तो है. मिटता नहीं। अच्छा हो कि हम सभी इस ओर संवेदित हों, जिससे समवेत दीयों के प्रकाश से अँधेरे को मिटने के लिए विवश होना पड़े। अनगिनत और असंख्य दीयों का प्रकाशपुञ्ज ही तो दीपोत्सव है यदि हर व्यक्ति के अंदर छाया अँधेरा प्रकाश में परिवर्तित हो जाए, तो धरा पर अँधेरा रह नहीं पाएगा। देश में अज्ञान, अशिक्षा, अंधविश्वास, वैमनस्य, अन्याय, ऊंच-नीच, हिंसा, बलात्कार, छुआछूत, भ्रूणहत्या, बेरोजगारी, निर्धनता, आतंकवाद आदि अनेक बुराइयाँ अँधेरों के प्रतीक हैं, हर व्यक्ति के मन में बुद्धि-विवेक जगाकर इनको समाप्त करने हेतु पूर्ण प्रयास में लग जाना चाहिए। दीपावली के बहाने हम यदि अपने देसी कला-कौशल को बचाएँ, तभी दीपोत्सव सार्थक होगा। इस दीवाली दीप जलाएँ, बिजली के लट्टू और लड़ियाँ नहीं। इससे कुंभकार बंधुओं के घर भी खुशियाँ आएंगी। तीव्र ध्वनि वाले पटाखों को न फोड़ें, इससे ध्वनि प्रदूषण और वायु प्रदूषण नहीं बढ़ेगा। प्रकृति. परिवार और परंपरा से जुड़कर दीपावली का अनुष्ठान अत्यंत शालीनता और पवित्रता से मनाएँ।

अस्तु, सभी को दीपावली की मंगलमय शुभकामनाएँ।

जाना क्या ?

उमेश

प्रकृति अपने आपको दोहराती नहीं है। तो बातायेंगे क्या? प्रकृति पग-पग पर रचनात्मक है, हर बार उसकी चीजें नवीन होती जा रही है। हर अवस्था बदल रही है। हम कैसे और कितना जान पायेंगे। हर अवस्था को प्रकृति छान रही है। हर बार गुणो का मिलान कुछ नया बना रहा होता है इसको कैसे जान सकेंगे। कोई कैसे इसे पुर्वभाषित कर सकता है? हम इतना ही देख पाते है कि किसी वृक्ष की पत्ति है फूल है। इसके आकार को देख कर कोई नाम भर दे सकते हैं। परन्तु हम उसके गुण को नहीं देख सकते।

गुरूवर अशोक मानव जी कहते है कि ''कोई किसी की वास्तविक अवस्था नही बता सकता। यह हर क्षण बअलती रहती है। गुण हर क्षण परिवर्तित होता रहता है। किससे मिलकर कौन सा गुण बन जा रहा है, यह कोई नहीं जान सकता। वास्तव में इस जीवन के सफर में हर कोई अनजान है। किस व्यक्ति के रासायन से कौन सा गुण बन रहा है यी कोई नही जान सकता। किस-किस के मिलान से कौन सा गुण बन रहा है यह कोई नहीं जान सकता है।'' गुरूवर कहते है कि हम यह शरीर देख जरूर रहे है पर इसके कण-कण में परमाणु है। परमाणु कब कौन सा गुण बना रहे यह कोई नही समझ सकता। व्यक्ति अपना दैनिक कार्य करता रहता है, अपने जीवन के सफर में लगा रहता है। परनतु उसके अन्दर जो रासायनिक गुण है वह कब क्या रचना कर रहा है यह कोई नहीं बता सकता है। हम हो चाहे जो, हम कर कुछ भी रहे हो परन्तु हम प्रकृति के द्वारा बनाये गये नियम के अंतर्गत ही कार्य करते और अपने ही गुण का विस्तार करते रहते है। इसका भान न हमें होता है और न ही दूसरों को जिनके साथ हम रहते है।

गुरूवर कहते है कि ''बताया वहीं जा सकता है जो कि दोहराया जाये। प्रकृति अपने आपको दोहराती नहीं है। तो बातायेंगे क्या? प्रकृति पग-पग पर रचनात्मक है, हर बार उसकी चीजें नवीन होती जा रही है। हर अवस्था बदल रही है। हम कैसे और कितना जान पायेंगे। हर अवस्था को प्रकृति छान रही है। हर बार गुणो का मिलान कुछ नया बना रहा होता है इसको कैसे जाना जा सकेंगे। कोई कैसे इसे पुर्वभाषित कर सकता है? हम इतना ही देख पाते है कि किसी वृक्ष की पत्ति है फूल है। इसके आकार को देख कर कोई नाम भर दे सकते हैं। परन्तु हम उसके गुण को नहीं देख सकते। प्रयोग करके थोड़ा कुद जान सकते हे पर उसके वास्तविक गुण को नहीं जान सकते। उसकी अवस्था क्या हे यह प्राकृतिक रहस्य है जिसको जाना नहीं जा सकता। हम

स्वयं अपने द्वारा बना रहे गुण को नही जान सकते है कि हम खुद में क्या बना रहे है। हम बस अपनी चीजों को अहमियत देते है इसलिए उसे विशेष मान लेते है।''

गुरूवर द्वारा बताई गई बातों को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते है अपने को ज्ञानी मानना दूसरों को छोटा समझना यह मात्र अहंकार ही है। कोई जो कहता है कि वह 'उसे' जान चुका है, तो उसे अपने को फिर से जॉचना चाहिए। क्योंकि जो जाना ही नहीं जा सकता उससे जान लेने का दावा कैसे कर सकते है। जब हम साधारण मनुष्य अपनी अवस्था को वास्तविकता में नहीं जान सकते फिर किसी प्रकार से हम उस परम् सत्ता को जान पाने का दावा कर बैठते हैं। इसपर भी कोई कहता है की उसने जाना है तो यही माना जा सकता है कि जिसको जाना गया है वह कुछ और ही है। वह वो नही जिसको जानने का विश्वास हो रहा है। जान लेने को मतलब है कि एक 'स्थिर अवस्था' है। तभी कोई जान सकता है। जबकि परम् तो परिवर्तशील है। यदि कोई उस परिवर्तन को जानने की बात कर रहा है। तो हो सकता है कि उसने किसी एक घटना को जान पाने की बात की हो। एक बड़े परिवर्तन के किसी एक क्षण का साक्षी रहा हो। वास्तविकता में वह घटना जो कोई जान पाया है वह तो क्षणभर में ही बदल गई होगी। अर्थात अब वह घटना भी वैसी नहीं रही है जिसको की जानने का दावा किया गया है। वह तो तुरन्त ही परिवर्तित हो चुकी है। वह घटना न किसी दूसरे को दिखाई जा सकती है न ही उसका उसका एहसास कराया जा सकता है।

वास्तव में जिससे कुछ पता भी है उसे कुछ पता ही नहीं। परम् की स्थिति जान पाना मुमकिन नहीं। किसी को यदि कोई आभास भी हुआ है तो वह कुछ भी बता सकने में असमर्थ है। लगता तो यही है कि जानने का प्रयास करने की अपेक्षा, शांत चित हो समर्पण कर कुछ भी न जानने, जान लेने की इच्छा से, बिना किसी प्रयास के साक्षी भाव से, दृष्टा बन जाना ही हितकर है। ज्यों ही भाव आता है कि जान लिया है, उसी क्षण हम न जानने वाली क्षेणी में आ जाते है। वही आपका विकास अवरूद्ध हो जाता है, दृष्टा भाव समाप्त हो जाता है। कुछ जो समझ में आता है वह यह है कि इस सफर में प्रयास नहीं होना चाहिए, चेष्टा नहीं करनी चाहिए जो सरलता से आये, स्वभावतः मिल रहा हो वहीं प्राकृतिक है, वही सफर को सरल बनाता है।

बहुत से व्यक्ति काफी आगे बढने के बाद थम गये। वह इसलिए कि जान जाने का अहंकारिक भाव उनमें आ गया। जान लेना का मतलब अब उनको क्या जानना रह गया है। जो जानना था वह आप जान चुके है। अब सफर ही खत्म सफर की कोई मंजिल ही नहीं बची। ज्ञान की परिभाषा आज इसी चक्र में फंसकर निरर्थक रह जाती है। आज ज्ञान तो एक प्रकार की जानकारी ही है जो हमें मिलती है और जिससे हम अपना भौतिक जीवन सुविधा युक्त करते है। यह ज्ञान, ज्ञान नहीं, वास्तविक ज्ञान भौतिक सीमाओं में नहीं आ सकता। स्वार्थ की बेड़ियों में नहीं बंध सकता।

बहुत कुछ जान लेने के फेर से बेहतर है कि हम अपना जीवन सहजता से जीए, अपने कर्तव्यों का पालन करे और बिना अशक्त हुए जीवन नईया को अपने स्वभाव के अनुसार ही चलाते रहे। जितना हमारे लिए आवश्यक होगा। जितना हमें जान लेना जरूरी होगा। उतनाभर के लिए प्रकृति यूँ ही हमें तैयार कर देती है। जितने के हम हकदार होते है उतना हम तक अपने आप पहुँच जाता है। यह हम समझ सकें या न समझ सकें।

आज सभी अपने स्वभाव को न पहचानकर, स्वभाव पर न चलकर इसमें लगे है कि उन्हें कुछ अलौकिक मिल जाये। वे कुछ ऐसा असाधारण कर सकें जो उन्हें विशेष बना दें। पर जो स्वभाव रूपी विशेषता उन्हें मिली है वे उसे भूल गये है। जिसपर चलकर वे असाधारण हो सकते है पर ऐसा न करके व्यक्ति किसी ऐसे की खोज में रहता है। जिसे कोई विशेष उपलब्धि हासिल हो। हर कोई दुसरे जैसा पाने और बनने में लग गया है। यह कठिन है अपने स्वभाव को अपने मार्ग को छोड़कर क्या ही मिल सकेगा। ट्रेन अपनी पट्री छोड़कर दूसरी पर चल जाये तो दुर्घटना ही होगी।

जो कोई कुछ असाधारण पा सका है वह सिर्फ इसलिए क्योंकि वह अपने गुण पर चला है अपने स्वभाव के अनुसार चलकर अपने ही गुण का विस्तार क रवह असाधारण बन वह उपलब्धि हासिल की है और इसके लिए वह कृतज्ञ और शांत है। हम अपने गुण का ही विस्तार करके असाधारण बन सकते है। इसके लिए प्रयास भी नहीं करना है। बस सरल बने रहना है। अपने स्वभाव पर जीना है। इतिहास में हम देख सकते है कि कुछ महापुरूष अतिसरल जीवन जीते हुए निम्न भौतिक सुविधाओं के साथ रहते हुए बहुत कुछ हासिल कर गये। महामानव बना गये। बाकी लोग उनकी सरलता को न समझकर उनकी विशेषता पाने की चाह में ही पड़े रहे। जो पाना हो 'सरल' रहीये।

जनता दरबार

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखण्ड

गांव में दौलत राम महतो नाम का एक धनी किसान था। उसकी इकलौती बेटी बड़ी चंचल और चुलबुली लड़की थी। चमन ने उसे कायदे से चोकलेट और पावरोटी खिला खिला कर पटाया और एक दिन सीधे रजरप्पा ले उडा मंदिर में जाकर शादी कर ली और दौलत राम महतो का घर जमाई दामाद बन गया। गोतियारों ने हंगामा खुब किया पर कुछ काम न आया। एक दिन अपने बीए पास सभी प्रमाण पत्रों को चूम कर चमन ने जला डाला जिससे वह गांव में बेरोजगार और बेकार-निकम्मा कहलाता था।

गांव के लालजी साहू को डी सी जनता दरबार में उपस्थित होने को कहा गया था। आज ही सुबह दस बजे! परसों ग्राम सेवक ने गाजोडीह के जिन पांच लोगों को डी सी के जनता दरबार में शामिल होने के लिए पत्र दे गया था उनमें लालजी साहू भी एक था।किस कारण बुलाया जा रहा है। पत्र में इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं था।

" जनता दरबार में आप अवश्य पधारें " ऐसा लिखा हुआ जरूर था।

अभी तक लालजी साहू का जीवन विधायक -मंत्री के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। उठना बैठना खाना-पीना होता रहा है। पहली बार जनता दरबार में डी सी, सी ओ, बी डी ओ, के साथ बैठने का मौका मिलने जा रहा था। कम बड़ी बात नहीं थी। उसके मन में ख्याल आया था।जरूर कोई बड़ी बात होगी। सोचा था उसने।

जब कभी भी अपने पन्द्रह बरस पीछे की जिंदगी को याद करता है तो वे लोग अक्सर याद आ जाते है जिनके बलबूते वह यहां तक पहुंचा है। फिर लालजी साहू अपनी तरक्की भरे जीवन को याद करने लगा था। कहां से और कौन सा जुगाड लेकर चला था और आज किस मुकाम पर आकर खड़ा है! दस बरस पहले वह दस टके का आदमी नहीं था। गांव पंचायत में उसकी अपनी कोई पहचान नहीं थी। कोई भाव नहीं देता था। बेकारो-नकारों का कोई भाव होता भी नहीं है।

एक दिन किसी के कहे पर लालजी साहू मेरे आफिस में चले आया। मैंने पूछा क्या हुआ, किसी परेशानी में हो?

" मुझे सिविल में छोटा-मोटा कोई काम दिला दीजिए!"

" कर सकोगे? भाग तो नहीं जाओगे? ठाकुर को लगा दिया था,टिक नहीं सका भाग खड़ा हुआ!"

" आपके नाम को मजाक बनने नहीं दूंगा ...!"

दूसरे दिन आने को बोला। आया, काम मिला चार हजार का! आफिस कैम्पस के " बुस- कटिंग" का/ झाड़ी कटाई का

सप्ताह दिन में काम कर दिखाया। दूसरा काम मिला नाली सफाई का। वो भी उसने चार दिन में करवा दिया। मैंने पीठ थपथपाई और कहा -" आगे करते जाओ, अब मेरी जरूरत नहीं पड़ेगी ..!"

" नहीं दादा! आपका आशीर्वाद हमेशा चाहिए ..!"

" ठीक है लगे रहो...!"

साल भर में छोटा बड़ा मिला कर सात काम किया उसने और एक बाईक खरीद ली। मुझे लगा लड़के ने राह पकड़ ली। तभी एक

दिन सुबह सुबह सुना कि मुलुकचंद बरनवाल की बेटी तारा को लेकर कहीं गायब हो गया !मैं माथा पकड़ लिया -" ससुरा यह भी नहीं सुधरेगा।" फिर शाम को सुना कि किसी मंदिर में शादी कर दोनों घर लौट आए हैं और ये कि उसने मोटरसाइकिल में तारा को बिठाकर पूरे गांव का एक चक्कर लगा कर अपने घर में ले घूसा ...! लड़की राजी फिर क्या करे बाप? बालिग लड़की ठहरी। बाप गठरी बन घर में बैठ गया।

"' लम्बी रेस का घोड़ा निकलेगा ..!" मेरा आकलन था

आज दो ट्रक एक स्कॉरपियो का मालिक बन बैठा था

उसी लालजी साहू को

आज अचानक डी सी जनता दरबार में उपस्थित होने वाले पत्र से उसे फूले नहीं समा रहा था। खैर!

इतना आदर भाव से बुलाने पर तो गधा भी गदगद हो जायेगा। लालजी साहू तो राज्य के मंत्री के साथ उठने बैठने वाला आदमी था -गधा नहीं। पत्र पाकर वह कुछ ज्यादा ही गदगद हो गया था। और जब आदमी किसी बात पर ज्यदा गदगद हो जाता है तो उसे बहुत गुदगुदी होने लगती है। तब वह हर बात को पका-फूला कर कहना शुरू कर देता है। लालजी साहू को भी डी सी वाले पत्र से बड़ी गुदगुदी होने लगी थी जिस किसी से मिलता जनता दरबार वाली बात शुरू कर देता " अब सरकार भी खोज पुछाड करने लगी है "

" भाई सरकार तो आप जैसे बड़े लोगों का ही होता है -ख्याल तो रखेगा ही।" कोई कहता।

" अब आगे नेता बनना पक्का है आपका...!" कोई जोड़ देता।

गुदगदाते मन लिए सुबह सुबह वह गांव के अपने घनिष्ठ मित्र धनीराम महतो के घर जा रहा था। पता चला डी सी दरबार में उपस्थित होने को उसे भी पत्र मिला है। इसके पहले घर से निकला तो रास्ते में कई लोग मिले। डी सी दरबार में जाने की बात उठी तो लोग भी कहते मिले-" मंत्री के साथ रहने का फायदा हो रहा है "

" अब बड़े लोगों की गिनती में आ गया है भाई!" किसी के मुंह से निकला

" हम छूछों को कौन पूछेगा..!" कोई कुंकुआ उठता

" मंत्री मेहरबान तो हर जगह मिले मान सम्मान!"

मोड़ पर सुदन महतो की विधवा पत्नी सुखमुनी महतवाईन भेंट गई। साल भर से विधवा पेंशन को लेकर मुखिया से लेकर बी डी ओ के आगे दौड़ लगा लगा के थक चुकी थी। पर अभी तक सिर्फ आश्वासन ही मिलता रहा है।

" कहां जा रही है काकी...?" लालजी साहू ने टोका था।

" हमर पेंशनवा कहां पास भेल है बाबू! सुन लिये, जिला के बड़का साहब आयल है- वहीं जा हिये ..!"

" ठीक है जा-हमहूं आओ हियो!"

" तोरो पेंशन पास करवे के हो की...!"

" नाय काकी ...!"

हंसता बुझता लालजी साहू पहुंचा धनीराम के घर।

पन्द्रह साल पहले धनीराम पैदा नहीं हुआ था। गांव में लोग उसे तब चमन महतो के नाम से जानते थे। एक दम बेकार! निकम्मा और आवारा के रूप! तभी उसने एक ऐसा करनामा कर डाला जिससे रातों-रात वह गांव में धनीराम महतो बन गया।

गांव में दौलत राम महतो नाम का एक धनी किसान था। उसकी इकलौती बेटी बड़ी चंचल और चुलबुली लड़की थी। चमन ने उसे कायदे से चोकलेट और पावरोटी खिला खिला कर पटाया और एक दिन सीधे रजरप्पा ले उडा मंदिर में जाकर शादी कर ली और दौलत राम महतो का घर जमाई दामाद बन गया। गोतियारों ने हंगामा खुब किया पर कुछ काम न आया। एक दिन अपने बीए पास सभी प्रमाण पत्रों को चूम कर चमन ने जला डाला जिससे वह गांव में बेरोजगार और बेकार-निकम्मा कहलाता था।

दूसरे दिन चमन कोर्ट गया और अपना नाम बदलने का घोषणा शपथ पत्र में धनीराम महतो और बाप भी बदल डाला " दौलत राम महतो " कर चला आया था।

आज दो मंजिला पक्के मकान में रहता है। एक ट्रेक्टर एक बोलेरो गाड़ी का मालिक तो है ही सालों भर इंट का कारोबार चलता रहता है।

" जनता दरबार में हमनी के काहे बुलाया गया है कुछ पता चला..?" लालजी साहू को घर आया देख, धनीराम ने पूछ बैठा

" चलके देखिए लेते हैं न " लालजी साहू बोला-" सुना जयालाल को भी बुलाया है, चलो उसे भी साथे ले चलते है ...!"

" कुछ खाया भी या ऐसे ही चल दिया, रूको सुजी भुंजवाते है तब तक हम झाड़ा फिर आते हैं...!"

" तोर इ आदत नाय सुधरतो...!"

थोड़ी देर बाद दोनों जयालाल के घर पहुंचा। पता चला,वो घर से जनता दरबार जाने के लिए निकल चुका है।

स्कूल मैदान में दूर से ही सरकारी तामझाम नजर आ रहा था। माइक से बार बार जगह लेकर लोगों को बैठने को कहा जा रहा था। जयालाल मंच के नीचे सामने कुर्सी पर बैठा नजर आ गया। दोनों उसी दिशा में आगे बढ़ गये थे। तभी मंच संचालक ने लालजी साहू, धनीराम महतो और जयालाल को सादर मंच में आकर आसन ग्रहण करने को कहा। वे तीनों एक दूसरे को देखने लगे। लालजी साहू के मुंह से निकला-" कहीं बकरा तो नहीं बनाया जा रहा है यार...!" कह तीनों मंच की ओर बढ़ गये थे।

" मुझे तो कुछ गडबड लग रहा है!" जयालाल बोला

" किसी का कुछ लूटा ही नहीं तो डर किस बात का...?" धनीराम महतो को अपने पर पूर्ण भरोसा था। डी सी साहब मंच पर

विराजमान थे। बीडीओ, सीओ, पेंशन धारियों और राशनकार्ड वालों की शिकायतों का निपटारा करने में लगे हुए थे। लोग कतारबद्ध एक-एक कर आगे बढ़ रहे थे। उन्ही लोगों के बगल से वे तीनों मंच की ओर बढ़े थे। एक दूसरे को कोंचते-ठेलते हुए सा ! जो लोग बेखौफ ! बेरोक टोक और धड़ल्ले से मंत्री जी के घर में घुस जाते थे। आज डी सी के मंच पर चढ़ने से उनकी छाती धाड धाड बज रही थीं। यह होता है अफसर का रूतबा ! मंत्री जी का मंच होता तो यही तीनों अब तक कुर्सी खींच मंत्री जी से सटकर बैठने की आपाधापी करते नजर आते। आज मंत्री जी नहीं है तो मंच पर चढ़ने से ही तीनों की हिचकी चढ़ गई थीं।

मंच संचालक ने तीनों को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया तो झप झप तीनों बैठ अपनी अपनी बेकाबू सांसों को शांत करने में लग गए थे। परन्तु शंकाओं ने उन्हें घेर लिया था। बैठे बैठे लालजी साहू ने कहा था-" सुबह से ही मेरी बांयी आंख बहुत फडक रही है !"

उतर में धनीराम महतो ने कहा-" और मेरे बांये पैर में सुबह से ही खुजली हो रही है !"

" लगता है हम तीनों आज बुरे फंसे.... !" जयालाल ने मुंडी झुका कर कहा था।

जन सुनवाई के तुरंत बाद ही डीसी साहब माइक पकड़ लिये थे -" हेलो ! आप सभी माता एवं बहनों को मेरा पुनः नमस्कार-प्रणाम ! जनता दरबार के इस जन सुनवाई में आज जिन लोगों का काम हुआ उनसे बस इतना ही कहना है कि आप अपनी मांगों और कामों को लेकर इसी तरह जागरूक रहें। और जिन लोगों का कुछ खामियों की वजह से आज काम नहीं हो सका। वे निराश नहीं होएं। आपका काम भी सप्ताह दिन में हो जाएगा, मैं बी डी ओ, साहब को निर्देश देकर जा रहा हूं। वृद्धा पेंशन,आवास, और राशनकार्ड के मामले में हम लापरवाही या धांधली बर्दाश्त नहीं करेंगे... !" डी सी साहब थोड़ा रूकते हुए बोले-" आप लोगों से आग्रह है दस मिनट तक शांति बनाए रखें, अभी आप लोगों को,आप ही के बीच के कुछ बड़े लोगों से मिलवाते हैं !" डी सी साहब ने बी डी ओ साहब को कुछ इशारा किये। बी डी ओ साहब हाथ में माला लेकर खड़े हो गए थे।

" आप इनसे मिलीए ! लालजी साहू जी से, आप इन्हें अच्छी तरह से जानते पहचानते होंगे,आप ही के बीच पले बढ़े हैं-सामने आइए लालजी जी !" लालजी साहू को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आज उसके जीवन के साथ क्या हो रहा है? अवाक ! हैरान ! किंकर्तव्यविमूढ़ स्तब्ध सा आगे बढा था। ज्योंहि वह डी सी साहब के सामने आकर खड़ा हुआ। बी डी ओ साहब माला पहनाकर उसका स्वागत किये, तब डी सी साहब फिर बोले-" लालजी साहू का जीवन में इतना आगे बढ़ना, आज बड़े आदमी के रूप जाने जाना,। बड़ी बात है। और जब बड़े लोगों में गिनती होने लगे तो आदमी को छोटा काम खुद छोड़ देना चाहिए, इसी में बड़प्पन है। अब मैं लालजी साहू जी से कहूंगा कि यह अपना राशनकार्ड सरकार को वापस कर दें.... !"

जन सुनवाई के तुरंत बाद ही डीसी साहब माइक पकड़ लिये थे -" हेलो ! आप सभी माता एवं बहनों को मेरा पुनः नमस्कार-प्रणाम ! जनता दरबार के इस जन सुनवाई में आज जिन लोगों का काम हुआ उनसे बस इतना ही कहना है कि आप अपनी मांगों और कामों को लेकर इसी तरह जागरूक रहें। और जिन लोगों का कुछ खामियों की वजह से आज काम नहीं हो सका। वे निराश नहीं होएं। आपका काम भी सप्ताह दिन में हो जाएगा, मैं बी डी ओ, साहब को निर्देश देकर जा रहा हूं। वृद्धा पेंशन,आवास, और राशनकार्ड के मामले में हम लापरवाही या धांधली बर्दाश्त नहीं करेंगे... !"

"लेकिन सर... !" लालजी साहू कुछ कहना चाहा तो बीच में ही डी सी साहब ने टोक दिया-" मुझे मालूम है आपका राशनकार्ड आपके पास नहीं है, आपने अपना राशनकार्ड दुखिया तुरी को दे रखा है,बदले में दुखिया तुरी की पत्नी आपके घर के सारे काम कर देती है- आई एम राइट लालजी साहू जी.. !"

लालजी साहू के मुंह से शब्द न निकल सका।

अब बारी था धनीराम महतो का । उसे देख लग रहा था। जैसे उसका मन मंच से कूद जाने को कर रहा हो। तभी डी सी साहब बोल उठे-" मैं समझ सकता हूं धनीराम महतो जी इस वक्त क्या सोच रहे हैं ! आप भी यहां पधारें ! "

" नहीं सर मैं यहीं ठीक हूं ... !"

लोग हंस पड़े।

" धनीराम महतो जी का राशनकार्ड... !"

इस बार धनीराम महतो बीच में बोल उठा-

" सर ! राज की बात राज ही रहने दीजिए न.. ! मैं दस मिनट में राशनकार्ड लेकर आता हूं.. ! " इतना कह धनीराम महतो सचमुच मंच से कूद पड़ा था।

इसी बीच जयालाल उठ खड़ा होता दिखा !

"आप कहां चले जयालाल जी.. रूकिए...?"

" सर ! आज आप हम सबों का कुण्डली बना कर आएं हैं..जा रहा हूं राशनकार्ड लाने.... !"

इस बार सारे लोग ठहाका लगा हंस पड़े थे.. !

डी सी साहब भी मुस्कुराये बन रह न सके !

सुखमुनी महतवाईन आज गदगद थी। उसका पेंशन पास हो गया था ! !

सिंधु में ज्वार क्यों (ग़ज़ल संग्रह)

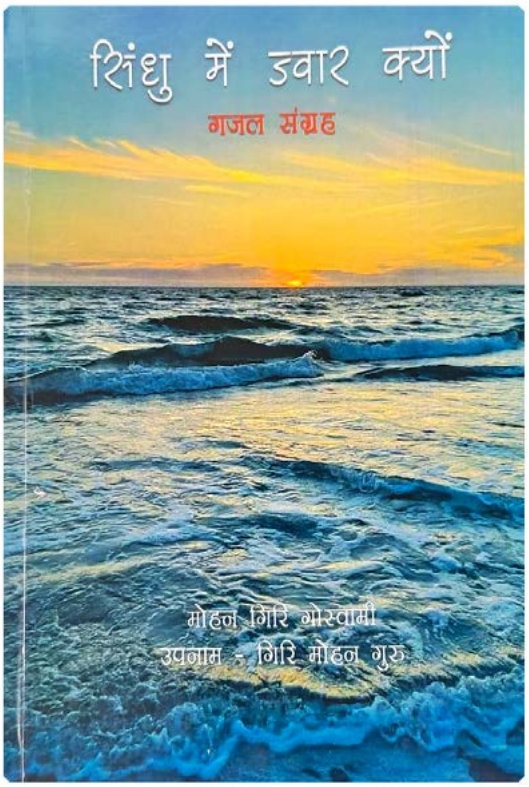

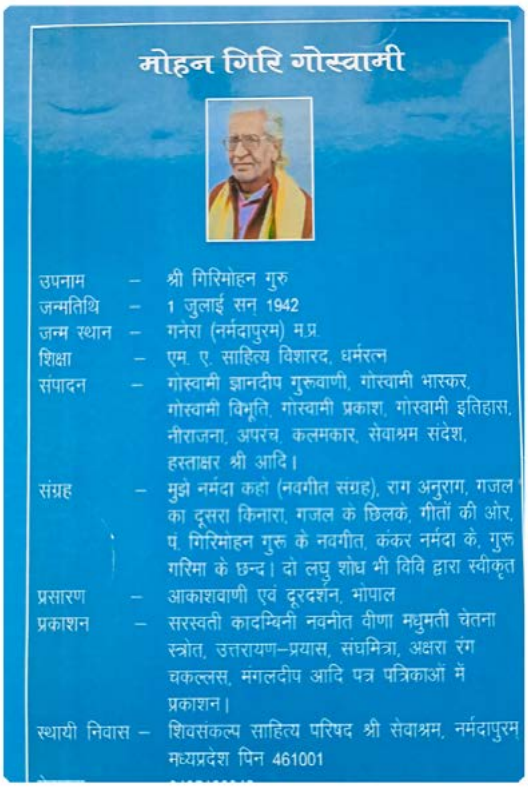

मनुष्य के अंतस में जब समस्त सामाजिक परिस्थितियों के अवलोकन और विमोचन के बाद प्रश्नों के झंझावात उसे चिंतन और मनन करने पर विवश करते हैं तो उसके हृदय के सागर में जिज्ञासाओं की लहरें ज्वार बनकर मनो मस्तिष्क को झकझोरने लगती हैं, और फिर वह अपने उन प्रश्नों को लिपिबद्ध करना शुरू कर देता है। सामाजिक परिस्थितियों हो या निजी भावनाएं सब कुछ फिर कोरे कागज पर काव्य धारा बन कर बहना शुरू हो जाती हैं।

सदियों से विभिन्न लोगों ने अपने भाव और देश काल की स्थितियों को शब्दों की श्रृंखला बनाकर काव्य मालाएं पिरोते रहे हैं, और इन काव्य मालाओं को धारण कर समाज अपने को सुगंधित और सुभाषित महसूस करता रहा है। ऐसे ही एक शब्द शिल्पकार हैं "श्री मोहन गिरी गोस्वामी"जी। इनकी काव्य माला "सिंधु में ज्वार क्यों" पढ़कर वास्तव में सामाजिक और भावनात्मक सभी प्रश्नों पर मनन करने और भाव सागर में गोते लगाने को सहर्ष मन व्याकुल हो उठता है।

आज के समाज में जहां गीत गजलों ने प्रेमी और प्रेयसी के बीच संवाद और सौंदर्य वर्णन मात्र बनकर रह गया है वहीं पर गोस्वामी जी ने अपने काव्य धारा और गजल संग्रह को एक अलग दिशा और पहचान देते हुए समाज की वास्तविक स्थितियों पर विचार करते हुए अपनी लेखनी को नया कीर्तिमान दिया है ऐसे ही एक ग़ज़ल है-

उनकी आंसुओं से तरबतर काजल मिला है,
आपके दिल में दुखी बदल मिला है,
प्यास ने जब-जब तलाशा नीर मीठा,
अंजुरी में तभी खारा जल मिला है,
राशि के गृह में बिठाया था गुरु को,
वहां पर बैठा हुआ मंगल मिला है,
गांव छोड़ा था शहर का नाम सुनकर,
किंतु आकर शहर में जंगल मिला है,
हाथ जिससे भी मिलाया है गुरु ने,
उसी ने समझा कि एक पागल मिला है।।

इस प्रकार हमें सूक्ष्म अवलोकन से मिलता है कि उनकी काव्य धारा किसी पुराने लीक पर चलने वाली धारा नहीं अपितु वर्तमान परिस्थितियों से निर्मित एक पथ है जो कि पाठक गण को उसके मनोवैज्ञानिक के अनुकूल एक नई दिशा और नया मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करती है। समाज के प्रति हमारे दृष्टिकोण कैसे हैं यह पूर्णतः"सिंधु में ज्वार क्यों" नामक इस ग़ज़ल संग्रह में पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है।

- कामेश, लेखक एवं कवि

होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली

डॉ. अमलेंदु त्रिपाठी

होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली में मरीज को रोगों से लड़ने की दवाओं के साथ-साथ उसे अन्य कई उपचार भी दिए जाते हैं जिसमें मानसिक रूप से सहारा प्रदान करना भी शामिल है। वर्तमान में होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में कई सामान्य से गंभीर रोगों का इलाज संभव हो चुका है।

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में किया जाने वाला इलाज मॉडर्न मेडिसिन ट्रीटमेंट सिस्टम से काफी अलग है। एलोपैथिक दवाएं मुख्य रूप से रोग के लक्षणों को कम करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं, वहीं होम्योपैथिक दवाओं की मदद से व्यक्ति के स्वास्थ्य को शक्ति प्रदान की जाती है ताकि व स्वयं रोग से लड़ सके। जैसा कि ऊपर बताया गया है होम्योपैथ सबसे पहले शरीर की बारीकी से जांच करते हैं, जिससे रोग के प्रकार व उसके कारण का पता लगाया जाता है। रोग के कारण के अनुसार होम्योपैथिक दवाएं व उनकी खुराक निर्धारित की जाती है, जो संबंधित रोग से लड़ने के लिए शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को शक्ति प्रदान करती हैं। होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली में मरीज को रोगों से लड़ने की दवाओं के साथ-साथ उसे अन्य कई उपचार भी दिए जाते हैं जिसमें मानसिक रूप से सहारा प्रदान करना भी शामिल है। वर्तमान में होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में कई सामान्य से गंभीर रोगों का इलाज संभव हो चुका है। निम्न कुछ प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में बताया गया है, जिनके इलाज के लिए लोग विशेष रूप से होम्योपैथी की तरफ अपना रुख करते हैं -

- जीवन शैली से संबंधी विकार-हर व्यक्ति की जीवनशैली अलग होती है, कुछ लोगों का अधिकतर समय बैठ कर निकलता है जैसे दुकानदार या कंप्यूटर पर काम करने वाले व्यक्ति जबकि कुछ लोग दिनभर कोई न कोई शारीरिक गतिविधि करते रहते हैं। सभी प्रकार की जीवनशैली में अलग-अलग प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं विकसित हो जाती हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में मरीज की जीवनशैली में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और इसके साथ-साथ मरीज के शरीर में मौजूद अन्य बीमारियों का इलाज भी शुरू कर दिया जाता है।
- एलर्जी-जैसा कि आपको पता है होम्योपैथिक उपचार सीधे तौर पर आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को शक्तिशाली बनाने के रूप में काम करता है। जब व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत हो जाती है, तो व एलर्जी पैदा करने वाली पदार्थ को शरीर से निकाल देती है या फिर नष्ट कर देती है। एलर्जी के मामलों में होम्योपैथी इलाज काफी लाभदायक व प्रभावी होता है, लेकिन अक्सर इसमें समय की खपत भी काफी अधिक होती है। होम्योपैथिक चिकित्सा में पुरानी एलर्जी या अचानक से एलर्जी के लक्षण विकसित होना आदि दोनों का इलाज संभव है।
- डेंगू बुखार- होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली डेंगू के लिए एक रोकथाम के रूप में काम करती है और साथ ही इससे डेंगू से होने वाले लक्षणों को नियंत्रित करने में भी मदद मिलती है। डेंगू की होम्योपैथिक दवाएं रोग से लड़ने के लिए

प्रतिरक्षा प्रणाली को शक्ति प्रदान करती है, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली उत्तेजित हो जाती है और आप स्वस्थ होने लगते हैं। साथ ही ये दवाएं बुखार, सिरदर्द, बदन दर्द, कमजोरी, भूख न लगना, जी मिचलाना और उल्टी जैसे लक्षणों को कम करती हैं, जिससे शरीर को रोग से लड़ने में मदद मिलती है।

- गुर्दे की पथरी-होम्योपैथिक चिकित्सा में कई विशेष प्रकार की दवाओं का निर्माण किया जा चुका है, जो किडनी स्टोन व गुर्दे के अन्य रोगों से राहत दिलाने में मदद करती हैं। इन दवाओं में कुछ खास तत्व पाए जाते हैं, जो पथरी को शरीर से बाहर निकालने में मदद करते हैं और साथ ही इनमें दर्द को नियंत्रित करने के गुण भी होते हैं। गुर्दे की पथरी के इलाज के लिए होम्योपैथी को महत्व इसलिए दिया जाता है, क्योंकि कुछ होम्योपैथिक दवाएं गुर्दे की पथरी को फिर से विकसित होने से रोकने का दावा भी करती हैं।
- साइनसाइटिस-होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली की मदद से न सिर्फ अचानक से विकसित होने वाले साइनसाइटिस के लक्षणों को नियंत्रित किया जाता है, साथ ही यह फिर से साइनसाइटिस होने के खतरे को भी काफी हद तक कम कर देता है। साइनसाइटिस का इलाज करने के लिए होम्योपैथ मरीज के लक्षणों के साथ-साथ उसका समस्त शारीरिक परीक्षण करते हैं और साथ ही उसकी मानसिक स्थिति की भी जांच करते हैं। इसके बाद मरीज को उपयुक्त दवाएं दी जाती हैं, जो साइनसाइटिस के विरुद्ध प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बना देती हैं और इस प्रकार शरीर रोग से लड़ने में सक्षम हो पाता है। साइनसाइटिस में आमतौर पर होम्योपैथिक दवाओं को भाप की मदद से दिया जाता है।
- स्व-प्रतिरक्षित विकार-ऐसे मामलों में होम्योपैथिक दवाएं सोरायसिस, विटिलिगो, रूमेटाइड आर्थराइटिस और अल्सरेटिव कोलाइटिस जैसे रोगों का इलाज करने में प्रभावित रूप से काम करती है। इन रोगों के लिए होम्योपैथिक दवाओं दो अलग-अलग तरीकों से काम करती हैं। पहले तरीके में रोगों के लक्षणों को नियंत्रित किया जाता है और दूसरा तरीका मरीज के रोग को जड़ से खत्म करने के रूप में काम करता है। हालांकि, होम्योपैथी की मदद से स्व-प्रतिरक्षित रोगों को जड़ से खत्म किया जा सकता है या नहीं इस पारे में कोई पुष्टि नहीं हो पाई है।
- हीमोफीलिया-इस रोग के इलाज के लिए भी होम्योपैथी में कई दवाओं का निर्माण किया जा चुका है। हीमोफीलिया व उसके लक्षणों को नियंत्रित करने में होम्योपैथिक दवाओं को काफी प्रभावी बताया गया है। इन दवाओं में कुछ सक्रिय तत्व मौजूद होते हैं, जो जल्द से जल्द रक्तस्राव को रोकने में मदद करते हैं। हालांकि, इन दवाओं को चिकित्सक की निगरानी में ही लेना चाहिए।
- दस्त-होम्योपैथिक दवाओं की मदद से डायरिया का प्रभावी ढंग से इलाज किया जा सकता है। यह इलाज आमतौर पर लक्षणों और रोग की गंभीरता पर निर्भर करता है। होम्योपैथिक दवाएं आपकी पाचन शक्ति और पेट संबंधी अन्य सभी समस्याओं को दूर करके दस्त जैसे लक्षणों को ठीक करती हैं। होम्योपैथिक चिकित्सा में कई प्रकार के घरेलू उपचार भी हैं, जो दस्त जैसे लक्षणों को दूर करने में मदद करते हैं।
- मधुमेह-डायबिटीज एक दीर्घकालिक रोग है और इसका इलाज अलग-अलग उपचार प्रणालियों में भिन्न तरीकों से किया जाता है। यदि मधुमेह का निदान शुरुआती चरणों में ही किया जाए तो होम्योपैथी उपचार काफी प्रभावी रूप से काम करता है। यदि रक्त शर्करा का स्तर अत्यधिक बढ़ गया है, तो होम्योपैथी दवाओं की मदद से पहले उसे नियंत्रित किया जाता है और फिर बाकी इलाज शुरु किया जाता है। होम्योपैथी में कुछ घरेलू उपचार भी हैं, जिनकी मदद से रक्त शर्करा को सामान्य स्तर पर लाया जा सकता है इन्हें "ऑर्गेनोपैथिक" कहा जा सकता है।
- मुंह के छाले-होम्योपैथी में बार-बार मुंह में छाले होने की स्थिति का इलाज प्रभावी रूप से किया जा सकता है। मुंह के छाले आमतौर पर किसी अंदरुनी बीमारी के कारण विकसित होते हैं, जिनका पता लगाकर उनके अनुसार ही इलाज किया जाता है। कुछ होम्योपैथी दवाओं की ओर से यह भी दावा किया जाता है कि ये दवाएं बार-बार मुंह के छाले होने की स्थिति को रोक देती हैं।

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली में सुरक्षा

अधिकतर मामलों में होम्योपैथिक दवाओं को सुरक्षित माना जाता है, लेकिन कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार इसके उत्पादों से साइड इफेक्ट्स भी देखे गए हैं। होम्योपैथी के कुछ उत्पाद ऐसे भी हैं जिन्हें एलोपैथिक या अन्य उत्पादों के साथ नहीं लिया जा सकता है। अभी तक ऐसे कोई प्रमाण दर्ज नहीं किए गए हैं, जो होम्योपैथिक दवाओं को एलोपैथिक दवाओं से सुरक्षित बताते हों। कई विशेषज्ञों का मानना है कि होम्योपैथी दवाओं में मौजूद तत्व शारीरिक और मानसिक प्रभाव छोड़ने में प्रभावी होते हैं, जिससे आपका शरीर रोगों से लड़ने में सक्षम हो जाता है। गंभीर रोगों या इमरजेंसी स्थितियों का इलाज होम्योपैथी से करवाना खतरनाक हो सकता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि एलोपैथिक में अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है।

सामाजिक बदलाव में प्रकृति का सिद्धांत

सुषमा त्रिपाठी

धरती आसमान और उसके अंदर की सारी संरचना जीव-निर्जीव इस महान रचनाकार की देन है जिसे हम सभी परमात्मा भगवान ईश्वर के नाम से जानते हैं जो भी तत्व शरीर से बाहर है वही शरीर के अंदर भी है ईश्वर के जीव निर्माण में मनुष्य सर्वोत्कृष्ट है। जैसी करनी वैसी भरनी यह प्रकृति का ही नियम है।

प्रकृति मनुष्य से बहुत पहले से अस्तित्व में है और तब से इसने मानव जाति की देखभाल भली भांति की है और हमेशा उसका पोषण किया है दूसरे शब्दों में यह हमें यह सुरक्षात्मक परत प्रदान करती है जो हमें सभी प्रकार के नुकसान और हनिया से बचाती है। प्रकृति के बिना मानव जाति का अस्तित्व संभव है और मनुष्यों को भी यह समझने की आवश्यकता है।

प्रकृति के सिद्धांत-प्रकृति में दो प्रकार की ऊर्जा होती है सकारात्मक और नकारात्मक, जीव और जीवन इन्हीं ऊर्जा से संचालित होता है। शरीर तो आप कहे लेकिन आप शेयर नहीं है जीव के शरीर का संचालन उसके अंदर की ऊर्जा करती है, प्रकृति जड़ है या चेतन तो जहां तक मैंने महसूस किया है। यहां सब कुछ चेतन अवस्था में है जड़ कुछ भी नहीं है।

धरती आसमान और उसके अंदर की सारी संरचना जीव-निर्जीव इस महान रचनाकार की देन है जिसे हम सभी परमात्मा भगवान ईश्वर के नाम से जानते हैं जो भी तत्व शरीर से बाहर है वही शरीर के अंदर भी है ईश्वर के जीव निर्माण में मनुष्य सर्वोत्कृष्ट है। जैसी करनी वैसी भरनी यह प्रकृति का ही नियम है। हम सभी अपने लोगों के सुख दुख समझ सकते हैं । जीव का जीवन और कर्म सृष्टि के नियमों के अनुसार संचालित होता है प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धि के साथ-साथ विवेक भी दिया है। विवेक का मतलब क्या करें क्या ना करें इंसान कम करने में स्वतंत्र तो है। लेकिन प्रत्येक कर्म का परिणाम भी निश्चित है यह भी प्रकृति का ही नियम है इसलिए ईश्वर से नहीं अपने कर्मों के द्वारा इंसान को डर जाना चाहिए।

प्रकृति के सिद्धांत के अनुसार ही काम क्रोध मोह लोभ इत्यादि तत्वों पर इंसान का नियंत्रण कितना है उसी से उसका जीवन निर्धारित होता है। प्रकृति हमें वही देता है जो हम चाहते हैं उसमें देने का गुण और जीवन में

ग्रहण करने की क्षमता मान सम्मान अपमान अपेक्षा मेरा तेरा मैं और मेरा यह सभी दुखों का कारण है।

प्रकृति और उसकी अवस्था दोनों अलग है हम सभी उसकी अवस्था में और मेरी गलत सही मेरा तेरा का मापदंड में उलझकर एक अच्छे जीवन की शक्ति को समाप्त कर देते हैं। उसे परम शक्ति को महसूस करने के लिए किसी नियमों सिद्धांत की आवश्यकता नहीं है केवल प्रेम ही चाहिए। क्योंकि प्रेमी आनंद है प्रेमी ईश्वर है साधन से सुख तो मिलता है परंतु आनंद नहीं क्योंकि मानव के जीवन का मूल मंत्र है। आनंद लेकिन वैभव और सुख के साधन के एकत्र करने में इंसान अपने जीवन का तो तीन भाग गवा देते हैं और अंतिम भाग सिर्फ भोगने और भरने के लिए बचता है। कामनाओं की पूर्ति के लिए ही प्रकृति जीवन चक्र का निर्माण करती है। इसलिए कामनाएं हमेशा पवित्र होनी चाहिए प्रेम में लेन-देन गलत सही नहीं होता इसीलिए प्रेम का दूसरा नाम भी त्याग है।

हमें प्रकृति का पूरा-पूरा लाभ चाहिए और शुद्ध हवा में सांस लेने और प्रकृति की सुख की सुंदरता का आनंद लेने के लिए रोजाना सुबह की सैर के लिए घर से बाहर जाना चाहिए।

जबकि दिन भर उसकी सुंदरता बदलती रहती है जैसे सुबह जब सूरज भगवान होते हैं तो सब कुछ चमकीला नारंगी और फिर पीला दिखाई देता है। इसी प्रकार प्रकृति ईश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे कीमती और मूल्यवान उपहार है इस ग्रह पर सभी जीवित चीजों के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्वों का मुख्य स्त्रोत है। प्रकृति एवं विषयों में से एक है जिस पर हमें मानव जीवन के लिए प्रकृति मानव जाति के लिए एक अभिन्न अंग है। यह मानव जीवन के लिए सबसे बड़े आशीर्वाद में से एक है जबकि आज के युग के मनुष्य इसे पहचान में सफल हो जाते हैं। प्रकृति पृथ्वी पर सभी जीवन रूपों के लिए प्रेरणा और पोशाक का अंतिम स्त्रोत है सबसे छोटे सूक्ष्मजीवों से लेकर सबसे ऊंचे पेड़ों तक प्रकृति का हर पहलू हमारे ग्रह के नाजुक संतुलन को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रकृति का वर्णन- प्रकृति में मनुष्य पशु और पक्षी शामिल हैं जो सभी जीवित रहने के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। प्रकृति हमें ऑक्सीजन भोजन पानी आश्रय और कपड़े जैसे आवश्यक चीज प्रदान करती है। यह असंख्य रंगों के लिए एक सुंदर स्थान है जो सभी जीवन रूपों के लिए आवास और जीवित रहने के लिए साधन प्रदान करती है। प्रकृति का महत्व हमारे जीवन में बहुत अत्यधिक है यह हमें शुद्ध और स्वस्थ वातावरण प्रदान करता है जो हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यह सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आनंद प्रदान करता है और साथ ही साथ हमें विभिन्न जीवों और पूरे पृथ्वी से हमें जोड़कर रखता है।

प्रकृति पर्यावरण हमें ऐसी सेवाएं देता है जिन्हें मापना मुश्किल हो जाता है। प्रकृति क्षेत्र हमारे हवा को साफ करने, पानी को शुद्ध करने, भोजन और दवाइयों का उत्पादन करने, रासायनिक और ध्वनि प्रदूषण को कम करने, बाढ़ के पानी को धीमा करने और हमारी सड़कों को ठंडा रखने में मदद करता है।

प्रकृति हमारी पृथ्वी की आत्मा है। हमारी पृथ्वी की सुंदरता प्रकृति के ही कारण है हमारी प्रकृति अनेको तत्वों से युक्त है। जिसमें पहाड़, झरने, समुद्र, महासागर, तालाब, मिट्टी, पेड़-पौधे, तथा प्रकृति के सभी प्राणी शामिल हैं। इन सभी को मिलकर ही प्रकृति बनती है। प्रकृति की सुंदरता इसकी ताजी खुलेपन खाड़ी में हवा और गर्म सूरज में निहित है जो हमारे दिमाग को राहत देती है। प्रकृति उन सभी चीजों से बनी है जो हमारे आसपास हम देखते हैं जैसे पेड़ फूल पौधे है। जानवर आकाश पहाड़ जंगल और बहुत कुछ हमें प्रकृति में कई रंग मिलते हैं जो पृथ्वी को सुंदर बनाते हैं पृथ्वी हमें ऑक्सीजन भोजन पानी आश्रय और कपड़े जैसी आवश्यक चीज प्रदान करती हैं। यह असंख्य रंगों की सुंदर तापेस्ट्री है जो सभी जीवन रूपों के लिए आवास और जीवित रहने के लिए स्थान प्रदान करती है।

जब हम प्रकृति की सुंदरता को देखते हैं तो हम पाते हैं की पांच तत्व पूरे भौतिक जगत का आधार है। आयुर्वेद इन तत्वों को पहचानता है आकाश वायु अग्नि जल और पृथ्वी जो सभी भौतिक अस्तित्व के निर्माण खंड हैं चाहे तेज हवा में सर के बल चलना हो या मिट्टी में हाथ गणना हो हम तत्वों से एक सहज परिचय रखते हैं। इन पांचो तत्वों के अलग-अलग विकृत है जिन्हें मिलकर विकृति होते हैं पृथ्वी तत्व से मांस हड्डी त्वचा रंग नाखून जल तत्व से लड़ पसीना खून वीर्य मूत्र अग्नि तत्व से भूख प्यास आलस्य निद्रा वायु तत्व से बोलना सुनना फैसला सिकुड़ना बाल लगाना आकाश तत्व से शब्द रस गंध स्पर्श अगर भाव जिसमें यह सब स्पष्ट रूप से सम्मिलित है।

प्रकृति का महत्व- दूसरे शब्दों में हमें एक सुरक्षात्मक प्रदान करती है या प्रकृति जो हमें सभी प्रकार के नुकसानों और हनिया से बचाती है प्रकृति के बिना मानव जाति का अस्तित्व संभव है और मनुष्य को यह समझने की आवश्यकता है प्रकृति में अगर हमारी रक्षा करने की क्षमता है, तो पूरी मानव जाति को नष्ट करने की भी क्षमता रखती है। इसलिए प्रकृति बहुत ही सुंदर है प्रकृति को देखकर मेरा मन हमेशा प्रफुल्लित हो जाता है। प्रकृति व्यापकतम अर्थ है। प्रकृति भौतिक या पदार्थहिक जगत या ब्रह्मांड है। प्रकृति का संदर्भ भौतिक जगत के दृश्य गत से तो हो सकता है। सामाजिक जीवन से भी हो सकता है। इस प्रकार के प्रकृति के सिद्धांत से हमें जीवन में प्राकृतिक बदलाव आता है क्योंकि प्रकृति है। तभी तो हम हैं और आप हैं सारा जगत है। क्योंकि प्रकृति है तो सब कुछ संभव है प्रकृति के साथ जीवन आसान हो जाता है।

1

सुर में बजती जब शहनाई देखी है।
चुप्पी-चुप्पी में तन्हाई देखी है।

नींदों ने रातों का दामन थामा जब,
बिस्तर-बिस्तर पर अंगड़ाई देखी है।

तार लिया कैसे भवसागर केवट ने,
रामायण ने वह चतुराई देखी है।

काम वहाँ आसानी से होगा पूरा,
साथ जहाँ करते तरुणाई देखी है।

जाकर आजाएगा वो उस शिखर से,
जिसने उसकी चढ़-उतराई देखी है।

समझेगा वह ही पढ़कर इन बातों को,
इनमें जिनने कुछ रानाई देखी है।

2

जागे रहे तो रात का ढ़लना पता चला।
की रोशनी तो मोम का गलना पता चला।

जब काम था तो ज़िंदगी काटे बिना कटी,
फ़ुर्सत हुई तो वक़्त का चलना पता चला।

जब फूल कोई बाग़ में छुपकर ख़िला रहा,
तब बागबाँ को पेड़ का फलना पता चला।

वो ताप है या रोशनी , है गन्ध वो मग़र,
देखा धुँआ तो आग का जलना पता चला।

इक दिन मिलेगा बात थी ये एतबार की,
मौका गया तो हाथ का मलना पता चला।

अक़्सर चला था साथ वो हमराह अब नही,
सोचा उसे तो राह का टलना पता चला।

3

कभी इनके,कभी उनके,सभी के साथ देखा है।
हमेशा ही , उसे हमने,ख़ुशी के साथ देखा है।

खिला चहरा जताता है बड़ा है हौसला उसका,
उसे हमने वहाँ इतनी हँसी के साथ देखा है।

बग़ीचे में ख़िला गुल वो बला का ख़ूबसूरत है,
जिसे हमने कभी मन की लगी केसाथ देखा है।

बना लेती हैं आँखें देखकर उसको यहाँ अपना,
जिसे हमने कभी थोड़ी नमी के साथ देखा है।

किनारा है यहाँ इसका रिवायत है मग़र उसकी
समुंदर को जहाँ हमने नदी के साथ देखा है।

जुबाँ पर हो शहद जैसे सभी से बोलता है वो,
जिसे हमने यहाँ अक़्सर बदी के साथ देखा है।

4

फ़ुर्सत से अब जीत रहा हूँ।
तन्हा रहना सीख रहा हूँ।

जीवन के संग वक़्त मिलाकर,
लम्हा -लम्हा बीत रहा हूँ।

यादें उनकी ताजा है सब,
अक़्सर जिनके बीच रहा हूँ।

मौका है पहली बारिश का,
इसमें जी भर भीग रहा हूँ।

होंगे कोई बेहतर मुझसे,
कुछ तो मैं भी ठीक रहा हूँ।

नींदों का आगाज़ समझकर,
पलकें थोड़ी मीच रहा हूँ।

- नवीन माथुर पंचोली
अमझेरा धार, (म.प्र.)

आकाश की तलाश

धरती पर निहुरता आसमान
अक्सर तलाश करता रहता है उन
ऊँचे – ऊँचे विशालकाय वृक्षों को
जिनके पुकारे पर बादल आते थे।
वही बादल, जिनसे आकाश की गोद भरती थी
धरती पर मंगल गीत गाये जाते थे
और नीम की डालों पर झूले बांधे जाते थे
कोयल की कूक गूँजने लगती थी
पोखरों में मेंढक टरटराने लगते थे

और तो और, अलमस्त बहती हवाओं के सुर
भी सध जाते थे।
तप्त धरा की उद्विग्नता दूर होते ही
जीवन की डोर मज़बूत होने लगती थी
नदियों की शिथिलता हट जाती और
गति आ जाती थी।
काश , आकाश की तलाश पूरी हो जाए और
लौट आए
पीयूष जल राशि
मिट्टी का सौंधापन
वायु का सहलाता स्पर्श
आकाश का रंग और
धरती की मुस्कान।

-डॉ. कविता विकास

इस अमृत को.....

गीत सुनाती जल -धारा सुन
नदिया की कल- कल भी सुन

व्यर्थ बहा न इस अमृत को
क्या कहता है कल भी सुन

मीठा जल, मीठा ही रहने दे
खारेपन की छल भी सुन

तपती धरती दरक रही है
भीतर है हलचल भी सुन

प्रकृति करती करुण पुकार
दर्शन के कुछ पल भी सुन

-डॉ. अखिलेश शर्मा
इन्दौर (म.प्र.)

मोर

सुन्दर राष्ट्रीय पक्षी मोर।
सर्प का दुश्मन है घनघोर।

रंगबिरंगे पंखों वाला
नाचे होकर भावविभोर।

खुश होकर आवाज लगाता
'केंयों-केंयों' करता शोर।

धूम मचाता है जंगल में
आ जाता खेतों की ओर।

वास करे अभयारण्यों में
रहता संरक्षण पर जोर।

इन्हें चुराते-हत्या करते
दुष्ट शिकारी, तस्कर, चोर।

कृषकों का है मित्र कहाता
कभी न तोड़ें रक्षा-डोर।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
विकासनगर लखनऊ

बॉटल ब्रश

प्रकृतिमेल डेस्क

आज हर कोई रोगों से निपटने के लिए प्राकृतिक उपाय खोज रहा है क्योंकि एलोपैथिक दवाओं के दुष्प्रभाव से लोग डर गए हैं। हमारे आस-पास ही ना जाने कितने ही प्राकृतिक खजाने मौजूद है। जो हमारी हर प्रकार की समस्या का हल दे सकते हैं।

उनमें से बहुत से फल-फूल और पेड़-पौधे ऐसे हैं जिनको हम अपने घर की छोटी सी बगिया में लगा सकते हैं। इनके औषधियों का लाभ लेने के साथ अपनी बगिया को आकर्षक बना सकते हैं। ऐसा ही एक पौधा है जिसका नाम बॉटल ब्रश है।

इसका आकार किसी बोतल को साफ करने के ब्रश जैसा होता है इसिलिए इसको बॉटल ब्रश के नाम से जाना जाता है।

बॉटल ब्रश अपने औषधीयें गुणों से यूरिन इन्फेक्शन को दूर करता है। खांसी या जुखम होने पर भी या काफी लाभ देता है। बॉटल ब्रश से एनर्जी ड्रिंक भी बनई जाती है।

पेट की समस्याओं में जैसे काब्ज अपच आदि में काफी लाभप्रद है या पेट की कब्ज को ठीक करता है पचन क्रिया को ठीक करता है गैस की समस्या में भी राहत देता है।

सांसों से जुड़ी समस्यों में काफी लाभ देता है। इसके पौधे को आप बसंत ऋतु में लगा सकते हैं। यह गर्मियों में फूल देता है, इस पौधे को धूप पसंद है। पानी की ठीक-ठीक मात्रा इसको स्वस्थ रखती है।

इसके पत्तों का लाभ हृदय-किडनी से जुड़ी समस्याओं में भी मिलता है। इसके पत्तों का इस्तेमाल त्वचा पर करने से निखार आता है और चेहरे की झइयां भी ठीक होती है।

इसके इस्तेमाल से बैक्टीरियल और फंगल संक्रमण होने पर आराम मिलता है।

वायरल इन्फेक्शन में भी काफी लाभ देता है। इसकी पत्तियों के सेवन से पचन तंत्र मजबुत होता है इसमें मौजुद औषधी गुण और पोषण का इस्तमाल लोग युवा दिखने के लिए भी करते हैं।

शोध में पाया गया है कि ये टीवी की बीमारी में काफी लाभ देता है। सुजन को कम करने में भी बॉटल ब्रश मददगार है।

बॉटल ब्रश में कैंसर रोधी गुण पाये जाते है। बॉटल ब्रश दर्द में भी काफी लाभ देता है।

इसके उपाय से मधुमेह में भी नियन्त्रण पाया जा सकता है। इसमें मौजुद एंटीऑक्सीडेंट शरीर को को स्वस्थ रखते हैं।

देखने के साथ ही गुणों से भी सुन्दर यह बॉटल ब्रश पौधा हमार बगिया की शान बन कर हमारे घर की रौनक बढ़ा सकता है। इसे जरूर से अपने घर में जगह दे।

प्रकृति के रंग

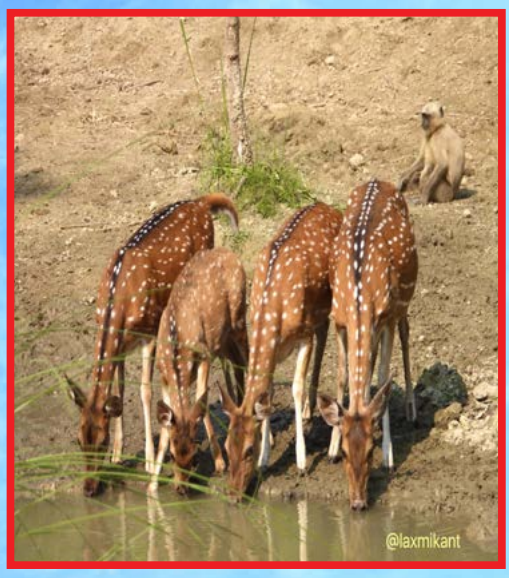

लक्ष्मीकांत

लखीमपुर

" अवस्था हर अवस्थाओं में निर्माणक होती है जिसमें कोई भी आकर्षण स्वईंधन मिलान का पड़ाव होता है इसमें बनने वाले द्रव्य पदार्थ स्वभूमि को प्रदूषण मुक्त कर देते हैं। "

– "अशोक मानव"

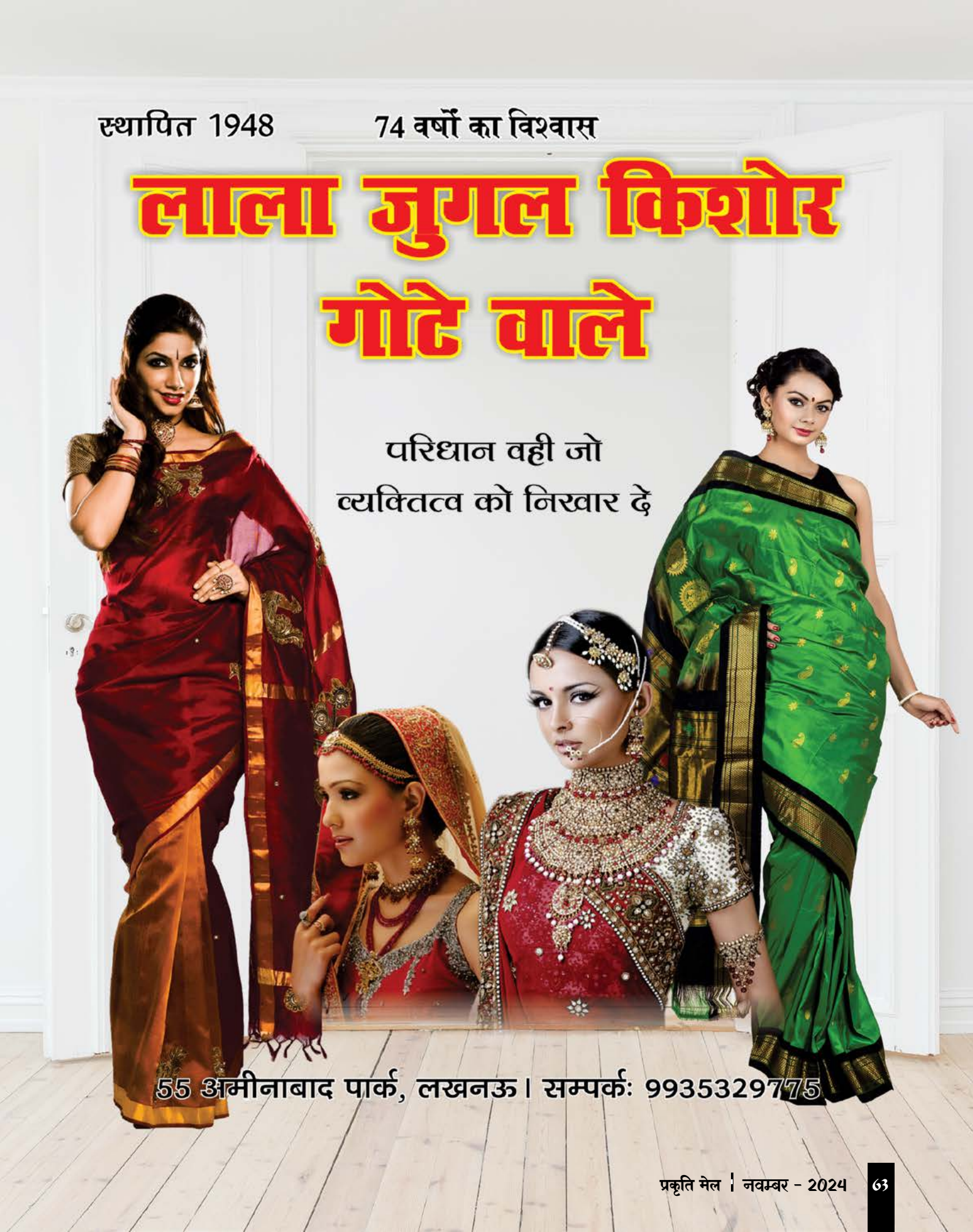
स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दे
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

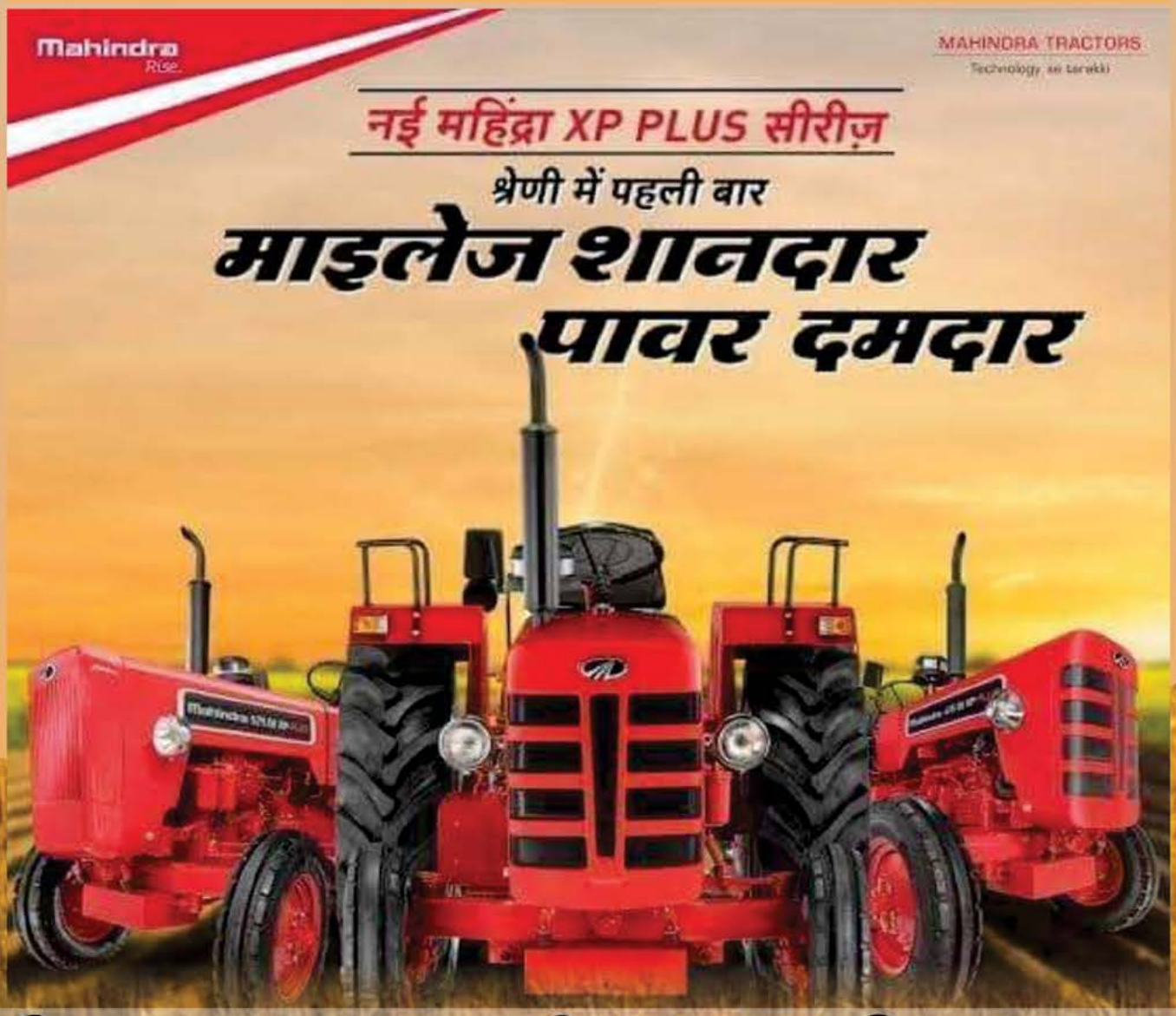

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्धली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।